बिहार सरकार

एस.सी.ई.आर.टी., बिहार
द्वारा विकसित

F3

दो वर्षीय सेवापूर्व डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),
महेन्द्रू, पटना, बिहार

पाठ्य पुस्तक विकास समूह

पत्र–F-3

(प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा)

दिशाबोध	श्री दीपक कुमार सिंह, भा.प्र.से., अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना श्री सज्जन राजसेकर, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, बिहार, पटना डॉ० एस.पी.सिन्हा, सलाहकार, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
समन्वयक	श्रीमती विभा रानी, विभाग प्रभारी, शिक्षा मनोविज्ञान विभाग, एस०सी०ई०आर०टी, पटना
लेखक समूह	1. श्री राहुल पटेल, व्याख्याता, डायट सिवान
	2. डॉ० नमिता नारायण व्याख्याता, डायट सोनपुर
	3. श्री सच्चिदान्द सिंह, सहायक शिक्षक, साधुलाल पृथ्वीचन्द +2 विद्यालय, छपरा
	4. श्रीमती बंदना कुमारी, व्याख्याता, डायट सोनपुर
	5. डॉ० ममता कुमारी, व्याख्याता, बी०एन०आर० ट्रेनिंग कॉलेज, गुलजारबाग, पटना
समीक्षक	6. डॉ० शाजिया फातमा, व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, समस्तीपुर
	7. श्रीमती कुमारी ज्योति किरण, व्याख्याता, पी०टी०ई०सी० बाढ़, पटना

पाठ–सूची

इकाई	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की समझ	4-13
2	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के पाठ्यचर्या की समझ	14-27
3	प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं विद्यालय की तैयारी	28- 41
4	बच्चे की प्रगति का आकलन	42- 64
5	बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा	65- 73
6	संदर्भ सूची	74

इकाई–1

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की समझ

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप सक्षम होंगे:–

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की प्रमुख अवधारणाएँ विकसित करने में।
- ई०सी०सी०ई० की आवश्यकता एवं उद्देश्य को समझने में।
- प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का बच्चे के विकास एवं जीवन पर प्रभाव का विश्लेषण करने में।
- बाल विकास की अवस्थाएँ,उप–अवस्थाएँ एवं सीखने की प्रक्रिया के संबंध को जानने में।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षाः प्रमुख अवधारणाएं

बाल्यावस्था कौतूहल और उत्सुकता की अवस्था है। इस समय हर घटना रोचक लगती है तथा नयी बातों को जानने की उत्सुकता होती है। बच्चे अपने आस–पास की घटनाओं और चीजों में रूचि लेते हैं। छोटी–छोटी बातें जैसे– चिड़ियाँ का उड़ना, चूहा–बिल्ली का दीवारों से कूदना , फल–सब्जियों के विभिन्न रंग, तरह–तरह के खिलौने, चंदा मामा की कहानियाँ, रेलगाड़ी की सीटी आदि उनके लिए बहुत मनोहारी होते हैं। बच्चों की जिज्ञासाओं तथा उत्सुकताओं के पनपने के लिए यह बहुत जरूरी है कि परिवार उनका परिपोषण बेहतर ढ़ंग से करे। यह अवधि बेहद संवेदनशील होती है तथा इसका बच्चों के सर्वांगीण विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है।इन प्रारंभिक वर्षों में सीखने के लिए मस्तिष्क अत्यन्त लचीला होता है।स्नायु विज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों के अनुसार पाँच वर्ष की अवधि तक बच्चों की मस्तिष्क की नब्बे प्रतिशत तक वृद्धि हो चुकी होती है। इस वृद्धि का बच्चे के पोषण, स्वास्थ्य, मनो–गत्यात्मक, सामाजिक अनुभवों और परिवेश से गहरा संबंध है। अतः प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा कार्यक्रमों को सुनियोजित ढ़ंग से लागू किये जाने की आवश्यकता है।

भारतीय संदर्भों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई०सी०सी०ई) को सामान्यतः जन्म से 8 वर्ष की आयु वाले बच्चों की देखभाल एवं शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके अंतर्गत शामिल हैः–

- शुन्य से 3 वर्ष के बच्चों के लिए पालना घर (क्रेच) द्वारा प्रारंभिक उत्प्रेरणा कार्यक्रम या फिर गृह उत्प्रेरक परिवेश।
- 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम (आंगनवाड़ी, बालवाड़ी शिशु–शालाएँ, पूर्व विद्यालय, किंडरगार्डन, विद्यालय की तैयारी करवाने वाले विद्यालय आदि)।
- 6 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए विद्यालय शिक्षा के हिस्से के रूप में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के कार्यक्रम।

आमतौर पर प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा केंद्र इसी प्राथमिक विद्यालयों का हिस्सा होते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम से जागरूक होकर आप बाल केंद्रित होते हैं और अध्यापकों, अभिभावकों

एवं अन्य सुरक्षादाताओं को प्रारंभिक औपचारिक अधिगम के जोखिम के बारे मे सचेत करते हैं। यह विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप खेल आधारित कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं और संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास के लिए बच्चों को गतिविधियों में संलग्न करते हैं तथा तरह–तरह के अनुभव एवं अवसर प्रदान करते हैं। गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत बाल विकास एवं विद्यालय की तैयारी (तत्परता) के भिन्न–भिन्न पहलुओं से जुड़े आयु एवं विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप गतिविधियां बहुत ही नवाचारी और लचीलेपन के साथ करवाई जाती है जिससे बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में जाने के लिए तनाव मुक्त तरीके से तैयार हो और उन्हें सीखने योग्य उत्प्रेरित वातावरण मिले। गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की अभिकल्पना आगामी विद्यालय की उपलब्धि के रूप में की गई है। यह विद्यालय की तैयारी से कहीं और अधिक है क्योंकि बच्चे का संपूर्ण विकास ही इसका लक्ष्य है।

ई०सी०सी०ई की महत्ता को स्वीकार करते हुए और इसकी अनिवार्यता और दृष्टिकोण पर महत्त्व देते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 में कहा गया है कि:–

इसके अंतर्गत हुए वर्तमान शोध यह स्पष्ट करते हैं कि 8 वर्ष के कम उम्र के बच्चे अपने लिए नीतियों या किसी पूर्व निर्धारित समय सीमा द्वारा तय समय और दिशा का अनुसरण नहीं करते। इसके फलस्वरूप शालापूर्व व कक्षा 1 और 2 के बच्चों का एक बहुत बड़ा अनुपात उनकी अपनी विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा नही प्राप्त कर रहा है। यह केवल 8 वर्ष की उम्र तक ही हो पाता है कि बच्चे पूर्व निर्धारित शिक्षण प्रक्रियाओं से सामंजस्य बिठाना शुरू कर पाते हैं। अतः महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि 3 से 8 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए एक लचीली, बहुमुखी, बहुस्तरीय, खेल–आधारित, गतिविधि–आधारित, और खोज आधारित शिक्षा उपलब्ध हो।

सीखने के प्रारंभिक वर्षों के संदर्भ में शोध निष्कर्ष

- मानव मस्तिष्क लचीला होता है। शुरूआती 5 वर्ष की संवेदनशील अवधि के समाप्त होने तक सेंसिंग पाथवेज (Sensing Pathways) के लचीलेपन में कमी आने लगती है। शोध निष्कर्ष यह बताते है कि बच्चों का मस्तिष्क किसी वयस्क व्यक्ति के मस्तिष्क की तुलना में अधिक क्रियाशील और अधिक लचीला होता है। छोटे बच्चे निःसंदेह प्रतिभाशाली जीव होते हैं। (गोपनिक एवं अन्य 1999)
- शुरूआती दौर में मस्तिष्क का विकास जीवनपर्यंत सीखने संबंधित व्यवहार एवं स्वास्थ्य की नींव रखता है। (मैक–केन और मस्टर्ड 2006)
- प्रतिरोधी व्यवस्था एवं शारीरिक विकास के लिए शरीर के प्रतिरोधक तंत्र तथा पोषण रक्षा तंत्र के कार्य करने के लिए मस्तिष्क एवं शरीर का जुड़ाव बहुत ही महत्वपूर्ण है। बहुत से कारणों में से यह भी एक कारण है जिसके रहते शुरूआती वर्षों में मस्तिष्क विकास का गुणवत्तापरक उद्दीपन व्यस्त जीवन में उत्पन्न स्वास्थ्य से जुड़ा होता है। (स्टैंडर्ड 2000)
- एक नवजात शिशु का मस्तिष्क 10 शंख (Trillions) न्यूरॉन से बना होता है। बाल्यावस्था के अनुभव यह सुनिश्चित करते है कि कौन से न्यूरॉन काम में लाए गए हैं, जो मस्तिष्क का संचालन करते हैं। जिन न्यूरॉन का इस्तेमाल नहीं हो पाता है वे नष्ट (मर) हो जाते हैं। (बेगले 1996)
- विद्यालय में प्रवेश से पहले के वर्षों में प्रारंभिक अधिगम कार्यक्रम में संलग्नता बच्चों की विद्यालय तत्परता पर सकारत्मक प्रभाव डालती है। (सैमनस 2010, सिलिवा एवं अन्य 2010, वोंग एवं अन्य 2008)

- अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा हाल में ही (2017) कराए गए ''प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा का प्रभाव'' विषय अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि देश में विद्यालय में दाखिला के समय पूर्व प्राथमिक शिक्षा पूरी कर चुके बच्चों के एक बहुत बड़े तबके के पास विद्यालय शिक्षा में प्रवेश के लिए जरूरी दक्षताओं का अभाव था। इस प्रकार हम पाते हैं कि विद्यालय तक पहुंच की समस्याओं के साथ ही आवश्यक योग्यताएँ विकसित करने वाले पाठ्यक्रम का अभाव, योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक शैक्षणिक विधियों की कमी, अगर सभी नही ंतब भी बहुत ज्यादा, प्रारंभिक बाल्यावस्था के शिक्षण कार्यक्रमों में मौजूद है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया था कि बाल विकास के समग्र स्वरूप अर्थात पोषण, स्वास्थ्य और सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक विकास को पहचानते हुए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा को उच्च प्राथमिकता दी जाएगी। ई०सी०सी०ई के कार्यक्रम के अंतर्गत खेल के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने पर बल दिया जाएगा और यह प्रत्येक बच्चे की जरूरत पर केंद्रित होंगे। इस अवस्था में औपचारिक शिक्षा प्रणालियों के प्रयोग को तथा पढ़ने, लिखने और हिसाब सीखने अर्थात रीडिंग राइटिंग और अर्थमैटिक पर बल दिया जाएगा। इन कार्यक्रमों में स्थानीय समुदाय को पुरी तरह सम्मिलत किया जाएगा।

ई०सी०सी०ई की आवश्यकता एवं उद्देश्य

ई०सी०सी०ई गर्भाधान से आठ वर्ष की आयु के बच्चों के विकास के विभिन्न आयामों की आधारशीला है। यह बच्चों के सकारात्मक व्यक्तित्व निर्माण में प्रभावी भूमिका अदा करता है।

ई०सी०सी०ई के अंतर्गत आठ वर्ष की आयु के बच्चे के सर्वांगीण विकास हेतु प्रभावी कार्यक्रम और प्रावधानों को संदर्भित किया गया है। इसलिए यह आवश्यक है इसे प्रभावी ढ़ंग से लागू किया जाए।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य

भारतीय शिक्षा आयोग 1964–66 के अनुसार प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है:–

1. बच्चे में अच्छे शारीरिक गठन, मांसपेशियों का समुचित समन्वय और बुनियादी गत्यात्मक कौशलों का विकास करना।
2. स्वास्थ्य संबंधित अच्छी आदतों और व्यक्तिगत सामंजस्य के लिए आवश्यक बुनियादी कौशलों का विकास करना जैसे कपड़े पहनना, भोजन करना, धोना, सफाई करना आदि।
3. बच्चे में सकारात्मक समूह प्रतिभागिता को प्रोत्साहित करना, दूसरों के अधिकारों व विशेषाधिकारों के प्रति संवेदनशील मनोवृत्तियां और आचार–विचार के तौर–तरीके विकसित करना।
4. बच्चों को अपनी भावनाएं एवं मनोवृत्तियों को अभिव्यक्त करने, समझने स्वीकार करने और आवश्यकतानुसार नियंत्रित करने के लिए तैयार करना जिससे उनमें भावनात्मक परिपक्वतता पैदा हो।
5. बच्चों में सौन्दर्यानुभूति का विकास और संवर्धन करना।

6. बच्चों में बौद्धिक जिज्ञासाओं को उत्प्रेरित करना। अपने आसपास के परिवेश को समझने में मदद करना, खोजबीन करना और कुछ नया करने एवं प्रयोग करने के लिए अवसर प्रदान करके उनमें नई–नई रूचियों का विकास करना।
7. स्व–अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर देकर बच्चों में रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करना।
8. अपने विचार व भावनाओं को प्रवाह के साथ सही एवं स्पष्ट अंदाज में अभिव्यक्त करने की क्षमता को बच्चों में विकसित करना।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के कुछ अन्य उद्देश्य इस प्रकार हैः–

- बच्चों को इस प्रकार के अवसर देना कि वे अपनी नैसर्गिक क्षमताओं का समुचित व सहज विकास कर सकें। इस तरह से स्वस्थ्य, उत्पादक एवं संतुष्ट भविष्य की नींव रखी जा सकेगी।
- प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश के लिए बच्चों की सहज व सुगम तैयारी और सफल प्राथमिक शिक्षा।
- बच्चियों को कुछ इस तरह से समर्थन सेवाएं देना कि वे शिक्षा जगत में प्रवेश कर सकें, किसी प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त कर सके और कार्य संगठन का हिस्सा बन सकें।

विशिष्ट उद्देश्य

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के उद्देश्य को विशेष रूप से निम्नलिखित अलग–अलग विकास के प्रत्येक पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हुए वर्णित किया जा सकता है–

1.शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास

शिशु के अंगों का समुचित विकास, उनका संचालन एवं नियंत्रण तथा उनमें संतुलन लाना ही शारीरिक व गत्यात्मक विकास कहलाता है। गत्यात्मक विकास की गति में व्यक्ति स्वतंत्र होता है। गत्यात्मक विकास को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता हैः स्थूल गति कौशल एवं सूक्ष्म गति कौशल।

उद्देश्य

- पर्याप्त शारीरिक विकास को बनाए रखने में मदद करना।
- बच्चों में सूक्ष्म और स्थूल गतिक कौशलों का विकास करना।
- तंत्रिका पेशीय (न्यूरो मस्कुलर) समन्वय का विकास करना।

2. संज्ञानात्मक विकास

संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य उन सभी दक्षताओं के विकास से है जिनकी सहायता से हम अपने आसपास के वातावरण को समझते हैं

संज्ञान से तात्पर्य हमारी याद रखने, देखने, सुनने, अंतर कर पाने, चीजों के बीच सह–संबंध बना पाने आदि की क्षमता से है। सीखने की क्षमता मनुष्य को दूसरी सभी प्रजातियों से अलग करती है।

उद्देश्य

- पांचों ज्ञानेंद्रियों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।
- स्मृति एवं सूक्ष्म अवलोकन क्षमता का निरंतर विकास करना।
- क्रमिक तथा तर्कपूर्ण चिंतन का विकास करना।
- वर्गीकरण एवं समस्या समाधान के कौशलों का विकास करना। आकार, रंग, स्थान, तापमान, घर, पर्यावरण, संख्या की अवधारणा, समय की अवधारणा आदि की जानकारी को विस्तार देना।
- अपने स्तर के अनुसार विभिन्न संबोधनों को समझना।

3. भाषा विकास

भाषा अपनी बात कहने का प्रमुख माध्यम है। यह मुख्य रूप से विभिन्न सूचनाओं, मनोभावों, चिंतनों और अनुभूतियों के आदान–प्रदान की पद्धति है। बच्चे भाषा अनुकरण, प्रेरणा व प्रोत्साहन तथा अभ्यास द्वारा सीखते हैं।

उद्देश्य

- दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना, अर्थात श्रवण कौशल का विकास करना।
- मौखिक अभिव्यक्ति के कौशलों का विकास करना।
- पढ़ने लिखने की तत्परता विकसित करना।
- अपनी जिज्ञासा व्यक्त करने के लिए बच्चों में प्रश्न करने की क्षमता विकसित करना।
- बच्चों के शब्द भंडार में निरंतर वृद्धि एवं नए शब्दों के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।
- बाल गीतों को लय तथा स्वर के उतार–चढ़ाव के साथ गाना।

4. सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास

बच्चों के व्यवहार, गुणों और क्षमताओं में बहुत अधिक व्यक्तिगत भिन्नता होती है। कुछ बच्चे बहुत सक्रिय, मिलनसार, स्वतंत्र, जिज्ञासु, आक्रामक तथ खतरे उठाने वाले गुण अभिव्यक्त करते है, जबकि अन्य कुछ बच्चे नहीं । वे दूसरों पर अधिक निर्भर रहने वाले तथा संकोची प्रवृत्ति के होते है। हर बच्चे का अपना अलग विशिष्ट व्यक्तित्व होता हैं। यह कुछ अंश तक जन्मजात होता है किंतु बहुत कुछ यह बच्चों के वातावरणीय तत्वों पर निर्भर करता है। सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास का मतलब बच्चे के व्यवहार एवं जीवन की विशेषताओं का एक ऐसा विकास है जिसमें वे अपने आप को किसी भी जगह एवं किसी भी वातावरण में अच्छी तरह से समायोजित कर सकें। बच्चे की समस्त क्रियाएं एवं व्यवहार उनके संवेगों पर निर्भर करता है। संवेगों के संतुलित विकास पर ही उनका सामाजिक विकास आधारित होता है।

उद्देश्य

- बच्चों में सुरक्षा की भावना विकसित करना।
- अपने संवेगों पर नियंत्रण कर पाना।
- वांछनीय व्यक्तिगत एवं सामाजिक आदतों का विकास करना।
- अपनी बारी की प्रतीक्षा करना तथा समूह में कार्य करना।
- सकारात्मक आत्म संप्रत्यय विकसित करना।
- शालापूर्व केंद्र के विभिन्न क्रियाकलापों में सहयोग देना।
- अपनी भावनाओं को प्रकट करना तथा आत्मनिर्भर होना।
- वयस्कों की बात को सुनना तथा उनके निर्देशों को समझने की क्षमता का विकास करना।
- जरूरतमंदों की सहायता करना। स्थिति के अनुसार संयत व्यवहार करना।

5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा सौंदर्य बोध का विकास

सभी बच्चों में सृजनात्मक क्षमता होती है। जब हम आरंभिक बाल्यावस्था की बात करते हैं तो हमारा उद्देश्य रचनात्मक प्रक्रिया पर जोर देने का होता है ना कि सृजनात्मक अभिव्यक्ति के परिणामों का। अपनी कल्पना शक्ति को कला एवं रचनात्मक क्रिया के माध्यम से अभिव्यक्त करना और नई–नई वस्तुओं की रचना करना सृजनात्मकता कहलाती है। यह स्वयं की भावनाएं और विचार प्रस्तुत करने का एक माध्यम है।

उद्देश्य

- सृजनात्मक चिंतन का विकास करना।
- कला तथा अन्य क्रियाओं के माध्यम से सृजनात्मक अभिव्यक्ती का विकास करना।
- शारीरिक अंगों का कलात्मक ढ़ंग से संचालन करना।
- पर्यावरण में उपलब्ध तथा अन्य प्रकार की सुंदर वस्तुओं के प्रति संवेदनशील होना।
- गीतों तथा लयात्मक क्रियाओं में रूचि लेना।
- अभिनय भूमिका निर्वहन (रोल प्ले) की क्षमता का विकास करना।
- उपलब्ध वस्तुओं से नमूने बनाने की क्षमता का विकास।

गतिविधि 1:– बाल विकास के क्षेत्र

बाल विकास के प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक खेल गतिविधि सोचें। इस गतिविधि के सफल नियोजन हेतु विभिन्न चरणों की व्याख्या करें।

प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था, देखभाल एवं शिक्षा का बच्चे के विकास एवं जीवन पर प्रभाव।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार गुणवत्ता अपने आप में व्यवस्था की ही विशेषता है ना कि किसी निर्देश या युक्ति या फिर किसी उपलब्धि विशेष का कोई चारित्रिक लक्षण है। इस संदर्भ में एक और बात ध्यान दने वाली है कि यह योग्यताओं का मापन भर नहीं है। इसके साथ कुछ गुणधर्म यानी कि मूल्य भी जुड़े हुए है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के प्रयास तभी सफल होंगे जब समानता तथा सामाजिक न्याय लाने के प्रयास भी साथ–साथ किये जाय। गुणवत्ता अपने आप में बहुस्तरीय एवं बहुआयामी अवधारणा है जिसके अंतर्गत बहुत से कार्यक्रम और कक्षाई व्यवस्थाएं अंतर्निहित होते है (मासबर्न एवं अन्य 2008)। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में गुणवत्ता, बच्चों को दिए जाने वाले सीखने के परिवेश के उन घटकों की ओर संकेत करती है, जो बच्चे के शैक्षिक व सामाजिक क्षेत्र में सकारत्मक उपलब्ध्यिों को बेहतर कर सके। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की गुणवत्ता के जो दो मुख्य आयाम है, वे सीधे–सीधे कार्यक्रम के बुनियादी ढांचे एवं सुविधाओं तथा बच्चों को कक्षा में दिए जाने वाले प्रत्यक्ष अनुभवों से संबंध रखते है।

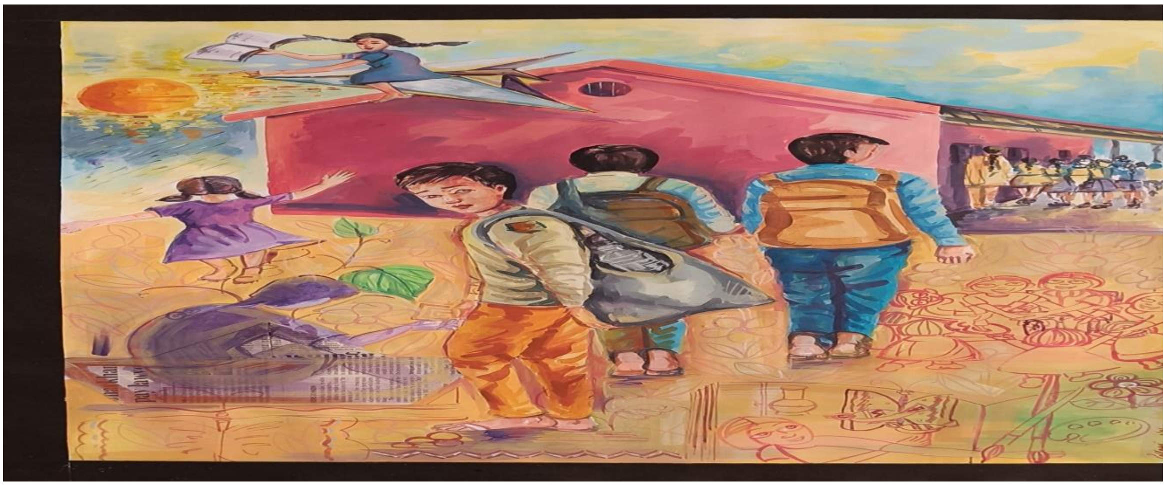

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में गुणवत्ता होने की बात को हर क्षेत्र में प्रत्येक स्तर पर स्वीकार किया गया है। प्रत्येक बच्चे की शिक्षा की शुरूआत गुणवत्तापरक तरीके से हो, यह बच्चे का अधिकार है और प्रत्येक अभिभावक एवं शिक्षक का दायित्व है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के संदर्भ में '' गुणवत्ता'' को परिभाषित करते हुए यह सुझाव दिया जाता है कि इसमें वे सभी मुद्दे शामिल हो जो छोटे बच्चों के वृद्धि एवं विकास के अनुरूप सुंदर से सुंदरतम अनुभवों का ताना बाना रचते हो।

गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के संबंध में इस बात पर गौर करना जरूरी है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में जो लोग तरह–तरह से अपनी सेवाएं दे रहे है, उनकी इस क्षेत्र के बारे में कितनी समझ है। किसी भी प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षिका और बच्चे जिस तरह की पृष्ठभूमि से आते हैं और जिस तरह के अनुभव अपने साथ लाते हैं उनका अपना ही एक बहुविध बहुरंगी संसार होता है।

शिक्षिका के सामने इन सभी छोटे बच्चों की देखभाल एवं शिक्षा की एक बहुत बड़ी चुनौती भरा दायित्व होता है। यद्यपि उत्कृष्ट कोटि की गुणवत्ता वाले प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम में लचीलापन का प्रावधान होता है, तथापि शिक्षिका को चाहिए कि वह ठोस योजना बनाएं जिससे कि बच्चों की रूचियों, क्षमताओं व जरूरतों के अनुरूप कार्यक्रम को आकार दिया जा सके और संतुलन भी लाया जा सके।

एक गुणवत्तापरक प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम से अपेक्षा की जाती है कि उसमें निम्नलिखित घटकों का समावेश होः—

- आयु और विकास के प्रतिमान के अनुरूप पाठ्यचर्या।
- खेल के लिए उचित एवं पर्याप्त अवसर।
- उत्प्रेरित व प्रोत्साहित करने वाला वातावरण।
- सुप्रशिक्षित एवं योग्य कार्यदल।
- समान अवसर वाली नीति।
- बच्चों के अवलोकन एवं आकलन के उपयुक्त तरीके।
- अभिभावकों एवं पालकों की समुचित संलग्नता।
- पोषक आहार एवं स्वास्थ्य की देखभाल।
- उपयुक्त अध्यापक शिक्षार्थी अनुपात।
- विद्यालय तैयारी और प्राथमिक विद्यालयों के लिए सहज परागमन।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा पूरी करने वाले बच्चे से अपेक्षाएं

- बच्चा शारीरिक एवं मानसिक रूप से आत्मनिर्भर हो।
- वह बिना किसी शिक्षक के आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त कर सके।
- सीखने के लिए उसमें स्वभाविक जिज्ञासा और लगन हो और वह प्रश्न पूछ सकें।
- उसमें पुस्तकों के पन्ने उलटने—पलटने की आदत हो और वह विषय वस्तु जानने की उत्सुकता रखता हो।
- दूसरे बच्चों के साथ हिलमिल कर खेल सके और उसमें विभिन्न कार्यों में सहयोग देने की तत्परता हो।
- वह अपने शरीर, कपड़ों तथा वस्तुओं की सफाई के प्रति जागरूक हो।
- उसमें अच्छी आदतें हो, जैसे— हाथ धोना, अपनी बारी का इंतजार करना, अपनी चीजों को संभाल कर रखना, बिना पूछे किसी भी चीज को न लेना इत्यादि।
- वह क्रमबद्ध तथा तर्कपूर्ण चिंतन कर सके।

बच्चे कैसे सीखते हैं: बाल विकास की अवस्थाएं (0—3, 3—6 तथा 6—8 वर्ष) उप अवस्थाएँ एवं सीखना

बच्चों के सीखने में आसपास का वातावरण विशिष्ट भूमिका निभाता है। जन्म से 6 वर्ष तक इसकी प्रभावशीलता और भी अधिक होती है । आसपास के वातावरण से अभिप्राय उन बौद्धिक, सामाजिक और प्राकृतिक परिस्थितियों से है जो बच्चे के आस पास उपलब्ध है। जहां बच्चा पलता, बढ़ता है उसी वातावरण का अनुकरण कर सीखता है। सीखना बच्चे और उसके सामाजिक—सांस्कृतिक एवं भौतिक वातावरण के बीच परस्पर क्रिया के परिणामस्वरूप होता है। यह माना गया है कि दो तिहाई से ज्यादा सीखना सामाजिकरण की प्रक्रिया के द्वारा होता है। इसमें बच्चे के परिवार के सदस्यों के साथ उसके

भौतिक एवं प्राकृतिक वातावरण शामिल है। इसके साथ–साथ परिवार से बाहर समुदाय के सदस्यों एवं अन्य समूह के मित्रों के साथ पारस्परिक क्रिया भी सम्मिलित होती है।

बड़ों की ममता एवं स्नेहपूर्ण वातावरण सीखने में बच्चों की मदद करता है। साथ ही उसके भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रूचिकर तथा सरल से कठिन की ओर आयु अनुरूप गतिविधियां सुचारू रूप से करने के अवसर मिलने से बच्चे में सहजता से सीखने की प्रवृत्ति विकसित होती है। यही प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा का मूलभूत सिद्धांत है। हर बच्चे की पहुँच में संसाधनों की उपलब्धता तथा उत्प्रेरण उसकी क्षमता तथा कौशल के विकास का आधार है।

बाल विकास परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें बच्चा गति, विचार, एहसास तथा अन्य व्यक्तियों के संपर्क की श्रृंखला में सरल से जटिल स्तरों पर निपटना सीखता है। विकास से तात्पर्य है बच्चे की व्यक्तिगत शक्तियों एवं क्षमताओं का विकास, जिसमें शारीरिक और मानसिक, भावनात्मक, भाषाई एवं सृजनात्मक आयाम प्रमुख है। परिवेश में उपलब्ध अवसरों से जुड़ते हुए बच्चे सकारात्मक सोच के साथ अवलोकन तथा अन्वेषण करते हुए ज्ञानार्जन करते हैं, और अपनी जिज्ञासाओं का समाधन करता है। बच्चे भावनाओं को अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम होते हैं।

बच्चों के विकास के लिए जिम्मेदार लोगों जैसे देखभालकर्ता, शिक्षक, अभिभावक और बच्चों के विकास में सहयोगीयो को बाल विकास एवं सीखने की मूलभूत अवधारणा एवं विधियों से अवगत होना ही चाहिए। यह सर्वमान्य तथ्य है कि हर बच्चा अपने आप में विशिष्ट होता है और उसके पास अपनी योग्यता एवं कौशल होते हैं। बच्चे के अंदर स्वाभाविक रूप से क्रोध, ईर्ष्या, जिज्ञासा, हर्ष, स्नेह के भाव होते हैं। उसमें स्वयं एवं अन्य का बोध होता है। सामाजिक व्यवहार में व्यक्तिगत भिन्नता होती है।

सीखना या अधिगम को निम्नलिखित प्रकार से सुनिश्चित किया जा सकता है:–

सीखना व्यवहार का अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है। जीवन की मांगों से मिलने के लिए आवश्यक आदतें, ज्ञान और वृत्ति को ग्रहण करना सीखना है। यह व्यक्तित्व में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन (सभी संभव विमाओं में) है। सीखने की प्रक्रिया की विशेषताएं निम्नलिखित है:–

सीखना एक सतत प्रक्रिया है– बचपन से ही प्रत्येक मनुष्य अपने व्यवहार, सोच, प्रवृत्ति, रूचि इत्यादि से अपने व्यवहार में परिवर्तन की कोशिश करता है। वह जीवन की परिवर्तनशील स्थितियों में स्वयं को निरंतर फिट रखने के लिए करता है।

सीखना एक प्रत्यक्ष लक्ष्य है– प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने की अभिलाषा रखता है। इन लक्ष्यों को सीखने के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यदि प्राप्त करने के लिए कोई उद्देश्य नहीं है तब वहां सीखने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

सीखना सुविचारित है– जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य निर्धारित करता है तब वह लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जानबूझकर कुछ क्रियाकलाप करता है। यदि उसके पास लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कोई सुविचार नहीं है या वह इसके लिए बिल्कुल शांत है, तब उसका लक्ष्य तक पहुंचना मुश्किल है। इसका तात्पर्य है कि उसका सीखना कमजोर है।

सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है– कुछ सीखने के लिए शारीरिक, मानसिक या दोनों प्रकार के कुछ क्रियाकलाप करने की आवश्यकता होती है। नए अनुभवों को सीखने के लिए मस्तिष्क का सक्रिय होना आवश्यक है, अन्यथा सीखना संभव नहीं हो सकेगा।

सीखना वैयक्तिक है– एक बच्चा सीखने की प्रक्रिया में अपनी गति से सीखता है। कुछ बच्चे किसी अवधारणा को शीघ्रता से सीख लेते हैं, वही कुछ बच्चे उसी अवधारणा को मध्यम या मंद गति से सीखते है। वास्तव में, विभिन्न व्यक्तियों की सीखने की गति भिन्न–भिन्न होती है।

सीखना एक व्यक्ति वातावरण के साथ परस्पर क्रिया का परिणाम है– एक शिक्षक के रूप में बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए सावधानीपूर्वक वातावरण का संगठन करना है, प्रायः जब वे शिक्षक से परस्पर क्रिया करते है। आपस में अपने साथियों से परस्पर क्रिया करते हैं तथा शिक्षण अधिगम सामग्री से परस्पर क्रिया करते हैं।

सीखना स्थानांतरणीय है– एक स्थिति में किया गया अधिगम या सीखना अन्य स्थितियों में समस्या हल करने में उपयोगी हो सकता है। गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषा सीखना बच्चों के वास्तविक जीवन में विभिन्न क्रियाकलापों के प्रदर्शन में उनकी सहायता करता है।

मूल्यांकन

1. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों का वर्णन करें।
2. प्रारंभिक स्तर पर बच्चों में सृजनात्मक चिंतन के विकास के लिए सुझाव दें।
3. प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का बच्चे के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? विस्तार से चर्चा करें।

इकाई–2

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के पाठ्यचर्या की समझ

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप सक्षम होंगें–

- एक संतुलित तथा संदर्भयुक्त ई०सी०सी०ई पाठ्यचर्या की समझ विकसित करने में।
- ई0सी0सी0ई पाठ्यचर्या के लघु एवं दीर्घकालिक उद्देश्य तथा नियोजन को समझ विकसित करने में।
- गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियाँ/प्रक्रियाओं का चयन करने में ।
- कक्षा में विकासोनुकूल, बाल केंद्रित तथा समावेशी वातावरण का निर्माण करने में।

बच्चे के जीवन के पहले 8 वर्ष निर्णायक वर्ष होते हैं जिन्हें मस्तिष्क की वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। हाल में ही हुए तंत्रिका विज्ञान अनुसंधन ने बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों के महत्त्व की पुष्टि की है। अनुसंधान से पता चला है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्षों में सार्थक संज्ञानात्मक, भाषाओं, सामाजिक और गत्यात्मक क्षमताओं के विकास के लिए कुछ विशिष्ट कारक महत्वपूर्ण होते हैं, जो बाद के जीवन की सफलता में योगदान देती है। यह अवस्था सामाजिक मूल्यों और व्यक्तिगत आदतों के निर्माण की नींव में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस अवस्था में बच्चे अपने चारों ओर के लोगों के और संसार के प्रति उनके रंगों, आकृतियों, ध्वनियों और आकारों के प्रति मुग्ध और जिज्ञासु होते हैं। बच्चों में संसार के अनुभव करने की योग्यता अधिक समृद्ध और विभिन्नता प्रदान करने वाली होती है। अपने परिवेश की खोजबीन करने हेतु बच्चे प्रेक्षण, चर्चा करने, अनुमान लगाने, विश्लेषण करने, खोज करने, जाँच पड़ताल करने, प्रश्न पूछने और प्रयोग करने में व्यस्त हो जाते है। इस प्रक्रिया में वह व्यापक और विस्तृत अवधारणा और नवीन विचारों की रचना करते हैं, उनमें सुधार करते हैं और उन्हें विकसित करते हैं। बच्चों को प्रेक्षण, खोजबीन और जांच–पड़ताल के पर्याप्त अवसर देने की आवश्यकता होती हैं, ताकि वे अपने आसपास के और व्यापक परिवेश की समझ विकसित कर सके।

आंरभिक शिक्षा की संकल्पना है कि तीन से छह वर्ष की आयु के सभी बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए सार्वभौमिक, समतावादी, आनंददायी, समावेशित और बच्चों के परिवेश से मेल खाते सीखने के अवसरों को समुन्नत किया जाए। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब अभिभावक और शिक्षक भावनात्मक रूप से समर्थन दें, संस्कृति से जुड़े, बाल–केंद्रित, प्रोत्साहनवर्धक अधिगम परिवेश सृजित करने में सहभागी बनें। इसका लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का उसके उच्चतम स्तर

तक विकास हो ताकि खेल और विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप अभ्यास द्वारा जीवनपर्यंत रहने वाले अधिगम की मजबूत नींव तैयार हो सके। यह पाठ्यचर्या इस बात को भी महत्व देती है कि सकारत्मक दृष्टिकोण, अच्छे मूल्य, समीक्षात्मक चिंतन के कौशलों, सहयोग, संप्रेषण, रचनात्मकता, तकनीक, साक्षरता और सामाजिक–भावनात्मक विकास हो। इस पाठ्यचर्या की यह भी सोच है कि जब बच्चे आरंभिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय की ओर कदम बढ़ाएँ तो उन्हें किसी प्रकार की भावनात्मक परेशानी न हो और वे भविष्य में रचनात्मक व संतोषप्रद जीवन का आनंद ले सकें।

- **एक संतुलित तथा संदर्भयुक्त ई०सी०सी०ई पाठ्यचर्या की समझ**

एक पाठ्यचर्या में उन सभी पहलुओं को समाहित किया जाता है, जो बच्चों के विकास और शिक्षा के लिए आवश्यक हो। इसके लिए एक ऐसे बाल केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो बच्चों को सर्वांगीण विकास के अवसर प्रदान करें तथा उन्हें सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भागीदार बनाए। विकास उन्मुख पाठ्यचर्या बच्चों के सीखने की आवश्यकता में विविधता की पूर्ति करती है। यह पाठ्यचर्या दस्तावेज बच्चों के लिए उपयुक्त आयु अनुकूल आवश्यकता और योग्यताओं के अनुरूप तैयार किया गया है। इसे लागू करने में शालापूर्व शिक्षकों एवं निगरानी तंत्र की पूर्ण समझ विकसित करना तथा उनकी स्वाभाविक आवश्यकता पर बल दिया जाना जरूरी है।

बच्चा अपनी रूचि, अभिवृत्ति, सुरक्षा एवं सहानुभूति के वातावरण में सहजता से सीख पाता है। जिसमें उसे रूचि न हो, वह उसे बोझ स्वरूप समझता है। हर एक बच्चा प्रशंसा चाहता है। बच्चे को छोटे–छोटे कार्यों के सफल संपादन के बाद प्रशंसा मिलने से वह और अच्छे ढ़ंग से कार्य करता है। बच्चे को मारपीट और मानसिक प्रताड़ना देकर अनुशासित नहीं किया जा सकता है। उसे अनुशासित करने के लिए प्यार, सहानुभूति और संवेदनशीलता ज्यादा प्रभावकारी सिद्ध होते हैं। बच्चे को इस तरह का वातावरण प्रदान करें जिससे ई०सी०सी०ई० कार्यक्रम को प्रभावी रूप से लागू किया जा सके।

जीवन के प्रारंभिक 8 वर्ष बहुत नाजुक होते हें क्योंकि इन वर्षों में विकास बहुत तेजी से होता है। यदि बच्चे को इस समय सही वातावरण न मिले तो इससे उसके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। यह प्रतिकूल प्रभाव भविष्य में हानिकारक हो सकता है। बच्चे का विकास और सीखना इस तरह होना चाहिए कि उसको बोझिल न लगे। अत्यधिक दबाव बच्चे को कुंठित करता है तथा अवसर उपलब्ध न होने से उसके सीखने की गति बाधित होती है।

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की संकल्पना

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की संकल्पना है कि तीन से छह वर्ष की आयु के सभी बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए सार्वभौमिक, समतावादी, आनंददायी, समावेशित और बच्चों के परिवेश से मेल खाते, सीखने के अवसर को प्रदान किया जाए। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब अभिभावक और शिक्षक भावनात्मक रूप से समर्थन दें, संस्कृति से जुड़े, बाल–केंद्रित प्रोत्साहनवर्धक, अधिगम परिवेश सृजित करने में सहभागी बनें। इसका लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का विकास उसके उच्चतम स्तर तक हो ताकि खेल और विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप अभ्यास द्वारा जीवनपर्यंत रहने वाले अधिगम की मजबूत नींव तैयार हो सके। यह पाठ्यचर्या इस बात को भी महत्व देती है कि सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छे मूल्य, समीक्षात्मक चिंतन के कौशलों, सहयोग, संप्रेषण, रचनात्मकता, तकनीक, साक्षरता और सामाजिक–भावनात्मक विकास भी हो। इस पाठ्यचर्या की यह भी सोच है कि जब बच्चे

पूर्व–प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय की ओर कदम बढ़ाएँ तो उन्हें किसी प्रकार की भावनात्मक परेशानी न हो और वे भविष्य में रचनात्मक व संतोषप्रद जीवन का आनंद ले सकें।

पाठ्यचर्या के लिए दिशा–निर्देश

ई०सी०सी०ई पाठ्यचर्या के निर्देशन सिद्धांत

पाठ्यचर्या का स्वरूप समग्र दृष्टिकोण वाला और संदर्भ के अनुसार लचीला भी हो सकता है। पाठ्यचर्या तीन लक्ष्यों को संबोधित करती है–संप्रेषण हेतु मुख्य कौशल/संकल्पनाएँ, शिक्षकों द्वारा अनुसरण की जाने वाली शिक्षण–प्रक्रियाएँ और वर्ष के अंत में बच्चों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले आरंभिक सीखने के प्रतिफल।

आरंभिक पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धांत

आरंभिक शिक्षा की उभरती हुई जरूरतों और बदलते परिदृश्य के आलोक में यह प्रयास किया गया है कि मौजूदा पाठ्यचर्या समग्रतावादी, विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप, बच्चों के सामाजिक संदर्भों से जुड़ी हो, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि खेल एवं गतिविधि आधारित है। निम्नलिखित मार्गदर्शक सिद्धांत मौजूदा पाठ्यचर्या की रूपरेखा तय करते हैं:–

1. **सीखना सतत् होता है**– जन्म के साथ ही सीखना आरंभ हो जाता है और यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है। चुँकि बच्चे इन्द्रियों और उत्प्रेरण के द्वारा सीखते हैं, इसलिए उनके विकास पर आरंभिक देखभाल और उत्प्रेरणा का समग्र और व्यापक रूप से प्रभाव पड़ता है। विशेष तंत्रिका विज्ञान से प्राप्त साक्ष्य सिद्ध करते हैं कि आरंभिक अधिगम आगामी जीवन की उपलब्धियों को प्रभावित करता है। जीव तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में हुए अनुसंधान दर्शाते हैं कि बच्चे के जीवन के शुरूआती वर्षों में जिस प्रकार के अनुभव दिए जाते हैं, बच्चे उन्हीं तरीकों से सीखते हैं। यद्यपि अनुवांशिकी की मस्तिष्क की रचना में बहुत बड़ी भूमिका है तथापि आगे के जीवन में मस्तिष्क किस प्रकार से कार्य करेगा, इसके लिए बच्चों के आरंभिक अनुभव बहुत ही महत्वपूर्ण है।
2. **हर बच्चा अलग होता है और वह अपनी गति से ही बढ़ता,सीखता और विकसित होता है** – यद्यपि सभी बच्चों के विकास का आमतौर पर लगभग एक–सा ही अनुक्रम होता है, फिर भी यह सत्य है कि सभी बच्चे अपने आप में अद्वितीय है और अपनी गति के आधार पर क्षमताएँ और कौशल अर्जित करते हैं। एक अच्छे पूर्व–प्राथमिक विद्यालयी कार्यक्रम में बच्चों की विभिन्न क्षमताओं और विकास की अपनी गति का ध्यान रखा जाता है। एक अच्छा पूर्व–प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम यह भी सुनिश्चित करता है कि सभी बच्चों का उनकी क्षमताओं के साथ शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और बौद्धिक विकास हो सके। यह पाठ्यचर्या विकास उन समुचित प्रक्रियाओं का पालन करती है, जो बच्चों के द्वारा अधिकतम सीखने और उनके विकास में मदद करने के लिए उनकी अवस्था और संदर्भ के उपयुक्त हो। पाठ्यचर्या यह भी सुझाती है कि विकास के भिन्न–भिन्न चरणों में बच्चों की आवश्यकताओं, (विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित सभी बच्चों) को आरंभिक वर्षों में ही समुचित उत्प्रेरणा देने के अवसर प्रदान किए जाए तथा संबोधित करने वाली अनेक शिक्षण–शैलियों का उपयोग किया जाए।
3. **सीखने और विकास का आधार खेल एवं गतिविधियाँ है** – पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के लिए खेल एवं गतिविधियाँ सर्वश्रेष्ठ शिक्षण माध्यम है। ये गतिविधियाँ बच्चों को खोजबीन करने, प्रयोग करने, परिवेश को अपने अनुसार ढ़ालने ओर अनुभव करने के अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार बच्चे

स्वयं ही ज्ञान का सृजन करते हैं। पाठ्यचर्या इस प्रकार की खेल गतिविधियों का सुझाव देती है, जिनसे विभिन्न प्रकार के खेलों, जैसे, स्वछंद व निर्देशित खेल, क्रियाशील और दूसरे के द्वारा खेलाए जाने वाले खेल, भीतरी तथा बाह्य खेल, वैयक्तिक एवं सामूहिक खेल, संरचनात्मक व असंरचानात्मक खेलों के अनुपात में संतुलन बना रहे हैं। खेलों का अधिकांश भाग स्वयं प्रेरित खेलों एवं गतिविधियों पर आधारित होना चाहिए, जो बच्चों की रूचि और इच्छा पर आधारित हो।

4. **बच्चों के सीखने के लिए बड़ों के साथ प्रतिक्रियात्मक और सहयोगी अंतःक्रिया (संवाद) अनिवार्य है** – बच्चे अपने अभिभावकों, परिवार, शिक्षक व समाज के साथ अपने संबंधों के द्वारा सीखते है। संबंधो को बनाए रखने से बच्चों में सुरक्षा की भावना, आत्मविश्वास, कौतूहल और संवाद करने की क्षमता पैदा होती है। इन संबंधों और अंतःक्रिया के आधार पर बच्चे यह भी सीखते है कि अपनी भावनाओं को किस प्रकार नियंत्रित किया जाए और उन्हें समाज में उपयोगी तरीक से कैसे दूसरों से जोड़ा जाए। अनुभव जन्य अधिगम के लिए परिवेश निर्मित करने से बच्चे सीखते हैं। बच्चे अपने परिवेश में प्रत्यक्ष व क्रियात्मक अनुभवों द्वारा सीखते है जो उन्हें अपने शिक्षक और साथियों के साथ पारस्परिक अंतःक्रिया करने और उनके निर्देशों के आधार पर अपने ज्ञान का सृजन करने में सहायक होता हैं। जब सीखना इस प्रकार से होगा तो वह स्थायी भी होगा। शुरूआती अवस्था में बच्चे अपने स्तर से आगे की जानकारी को भी जानने की कोशिश करते हैं, फिर वापस अपनी आयु अनुरूप जानकारी की खोजबीन करते है, पुनः आगे के स्तर की खोजबीन में जुट जाते हैं। इस प्रकार अधिगम का यह चक्र चलता ही रहता है। इस बात को सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है कि बच्चों को उनके विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप सामग्री, अनुभव और चुनौतियाँ दी जाएँ जिससे वे स्वयं ज्ञान का सृजन कर सके। इस प्रक्रिया में कार्यों की पुनरावृत्ति भी होगी तथा अध्यापकों और अनुभवी मित्रों का मार्गदर्शन भी होगा। इससे सभी बच्चों को अपनी नैसर्गिक क्षमताओं का विकास करने का अवसर मिलेगा और वे स्वतंत्र रूप से काम करना भी सीखेंगे।
5. **पारस्परिक शिक्षण–अधिगम अनुभवों को समृद्ध करता है** – बच्चों का आपस में एक–दूसरे के साथ काम करना, बच्चों का शिक्षक के साथ और सामग्री के साथ तरह–तरह के कार्य करना, गुणवत्तापरक पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलु है। बच्चों के आपस में संवाद, परिवेशीय और सांस्कृतिक अनुभवों को विविधता तथा सार्थक संवाद सुदृढ़ ज्ञान के सृजन की नींव प्रदान करते है व उन्हें औपचारिक विद्यालय के लिए तैयार करते हैं।
6. **स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का विकास और उपयोग सीखने के अवसरों को समृद्ध करता है** – स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग बच्चों को आरंभिक उत्प्रेरणा और शिक्षा देने में बहुत ही सहायक होता है। इससे स्थानीय रूप से महत्वपूर्ण मूल्यों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अन्य दूसरे पहलुओं का संरक्षण तो होता ही है, साथ–ही ये अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के लिए भी महत्वपूर्ण है। ये शिक्षक, बच्चों, अभिभावकों और समुदाय को सक्रिय एवं रचनात्मक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में योगदान देने के अवसर भी प्रदान करते हैं।
7. **संदर्भ के प्रति संवेदनशीलता और विविधताओं की सराहना अधिगम में सहायक होती है** – यह बहुत ही आवश्यक है कि सभी बच्चों के सकारात्मक बिंदुओं और क्षमताओं की पहचान की जाए जिससे उन्हें सीखने के अधिकतम अवसर दिए जा सकें। प्रत्येक बच्चे को हर शैक्षिक अनुभव और गतिविधि में शामिल करने की जरूरत है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को व्यक्तिगत रूप से निर्देश मिलना चाहिए ताकि बच्चे अपेक्षित कौशल, व्यवहार के तौर–तरीके और अवधारणाओं को सीख सकें और उन्हें विकसित कर सकें। चूँकि सामाजीकरण पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, इसलिए बच्चों को खेल, सामूहिक गतिविधियों और भिन्न–भिन्न प्रकार के

संवादों में भाग लेने के भरपूर अवसर मिलने चाहिए। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि सभी बच्चों को, चाहे वे किसी भी जाति, वंश, जेंडर, क्षमता, लैंगिक रूझान, अक्षमता, भाषा, संस्कृति, धर्म, सामाजिक–आर्थिक स्थिति के हो, समान रूप से सीखने के अवसर सुलभ हो। पाठ्यचर्या संबंधी निर्णय ज्ञान के उन संदर्भों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व अनुभवों को सम्मान व महत्व देने वाले हो जिन्हें बच्चे अपने संग पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में लेकर आते हैं। इस तरह के अवसर भी दिए जाने चाहिए ताकि बच्चे एक–दूसरे की सांस्कृतिक और सामूहिक समझ तथ अंतर्निहित विविधता को स्वीकार कर सकें।

8. **मातृभाषा/घर की भाषा ही शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए** – भाषा का बच्चों की पहचान और भावनात्मक सुरक्षा से साथ घनिष्ठ संबंध है। भाषा उन्हें अपने विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने में सहायक है। हमारे जैसे बहुभाषी देश में सीखने–सिखाने की भाषा एक जटिल मुद्दा है। पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में आने वाले बच्चों के घर की भाषा, विद्यालय की भाषा या फिर उस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा से भिन्न हो सकती है। शोध यह दर्शाते है कि जिन बच्चों को पूर्व–प्राथमिक कार्यक्रम में अपनी मातृभाषा में बोलने के अवसर मिलते है, वे आसानी से किसी विषय पर समझ बना लेते हैं। बच्चों की मातृभाषा/घर की भाषा में शिक्षण को अंतराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया गया है। क्योंकि शुरूआती वर्षों में अवधारणाओं की समझ बनाने कि लिए यही एक सर्वाधिक उपयुक्त तरीका है। यदि कक्षा का परिवेश ऐसा हे जिसमें अलग–अलग भाषाएँ बोलने वाले बच्चे मौजूद है तो शिक्षक से अपेक्षा है कि वे अभिव्यक्ति के लिए हर भाषा को स्वीकृत करें और फिर धीरे–धीरे विद्यालय की भाषा से उनका परिचय करवाएँ। सभी बच्चों को सांकेतिक भाषा से परिचित होने के मौके भी दिए जाने चाहिए। यह समावेशन की नीति की नींव डालने में मददगार होगा।
9. **अधिगम में परिवार की सहभागिता योगदान देती है** – बच्चों के अधिगम और विकास में अभिभावकों और परिवार का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। पूर्व–प्राथमिक पाठ्यचर्या, पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों और घरों में परिवारों की सहभागिता और साझेदारी की अनुशंसा करती है।

गतिविधि 1:– संवेदी गतिविधियों पर विचार करें

प्रत्येक इंद्रिय के लिए संवेदी गतिविधियों और अनुभवों के बारे में सोचें एवं उनकी सूची बनाएं। साझा करें की इस प्रकार की गतिविधियाँ छोटे बच्चों के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार सहायक हैं।

आरंभिक– पाठ्यचर्या के लक्ष्य

बच्चों में जन्म से ही सीखने की अद्भुत क्षमता और इच्छा होती है। अतः यह बहुत महत्वपूर्ण है कि बच्चों को खेल–खेल में विभिन्न गतिविधियों द्वारा समृद्ध अनुभव दिए जाएँ जिससे वे समीक्षात्मक चिंतन और समस्या समाधान, जैसे कौशल विकसित कर सकें ओर अपनी आयु तथा विकास के अनुरूप समझ बना सकें। विकास के सभी घटक/आयाम, जैसे– संज्ञानात्मक, सामाजिक–भावनात्मक, भाषा और साक्षरता, शारीरिक गत्यात्मक, रचनात्मक तथा सौंन्दर्य बोध का परस्पर संबंध है, इसलिए इन सभी के लिए गतिविधियों एवं अनुभवों को शैक्षणिक प्रक्रियाओं में शामिल किया जाना चाहिए। खोजबीन करने, समझ बनाने, प्रयोग करने और अनुभवों तथा जानकारी को सार्थक विषयवस्तु एवं कौशलों का बदलने के भरपूर अवसर दिए जाएँ।

विकसित किए जाने वाले आधारभूत कौशलों एवं अवधारणाओं, शिक्षकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण प्रणाली तथा पूर्व–प्राथमिक 1,2 और 3 के अंत में प्राप्त किए जाने वाले आरंभिक अधिगम प्रतिफलों को संबोधित करती है। पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य, बच्चों का सीखना और विकास समग्र रूप से होता है, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो या फिर संज्ञानात्मक या व्यक्तिगत और सामाजिक विकास अथवा फिर खुशहाली, सभी में विकास और सीखने की प्रक्रिया भिन्न–भिन्न चलती है। बच्चे भिन्न–भिन्न समय पर, तथा से सीखते है। पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में अंतर्निहित संभावनाओं के समुचित विकास को सुगम बनाना है और सर्वांगीण विकास एवं जीवनपर्यत सीखने की नींव रखना है। प्रस्तुत पाठ्यचर्या निम्नलिखित तीन मुख्य लक्ष्यों के माध्यम से विकास के सभी क्षेत्रों को संबोधित करती है।

लक्ष्य 1

यह लक्ष्य बच्चों के सामाजिक–भावात्मक और शारीरिक–गत्यात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है। इस पहल में बच्चों के लिए नियोजित खेल, रचनात्मक गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से सकारात्मक स्व–अवधारणा, आत्म–नियंत्रण, सामाजिक कौशल, आँख तथा हाथ का समन्वयन और स्थूल–गत्यात्मक तथा सूक्ष्म–गत्यात्मक कौशलों का विकास शामिल है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और सुरक्षा के लिए अभिविन्यास प्रदान करता है।

लक्ष्य 2

यह लक्ष्य भाषा और साक्षरता कौशलों के विकास, जो सभी क्षेत्रों से सीखने का एक अभिन्न भाग है, पर ध्यान केंद्रित करता है। स्वंय को रचनात्मक रूप से व्यक्त करने और आत्मविश्वास के साथ संप्रेषण करने के लिए बच्चों को वयस्कों और अन्य बच्चों के साथ पारस्परिक क्रिया करने के अवसर दिए जाने की आवश्यकता है। जब बच्चे उद्देश्यपूर्ण निर्देश के साथ अर्थपूर्ण गतिविधियों में व्यस्त होते हैं, तो वे सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल विकसित कर लेते हैं। ये उन्हें प्रभावी संप्रेषक बनने में सक्षम बनाते हैं।

लक्ष्य 3

यह लक्ष्य बच्चों के संज्ञात्मक विकास पर प्रकाश डालता है जिसमें पर्यावरण जागरूकता और वैज्ञानिक मनोवृत्ति, गणितीय सोच और समस्या समाधान शामिल है। यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि जब बच्चे पर्यावरण से पारस्परिक क्रिया करते है, वह विभिन्न अवधारणओं एवं कौशलों का विकास करते हैं। इस लक्ष्य का सार यह है कि बच्चों को अवसर प्रदान करता है जो उन्हें जिज्ञासा, अनुशासित, रचनात्मक और अभिव्यक्त करने वाला बनाए। इसके अलावा समस्या–समाधान, विवेचनात्मक चिंतन और तर्क से संबंधित कौशल विकसित करने के लिए विविध प्रकार के अनुभव और गतिविधियाँ भी सुझायी गई है।

लक्ष्य 4

बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना बच्चों के सर्वोत्कृष्ट शारीरिक, सामाजिक–भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य तथा खुशहाली के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था का समय बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन वर्षों के दौरान अगर बच्चों को सही अवसर और प्रोत्साहन मिले तो उनकी पाँचों इन्द्रियों का विकास होता है, उनकी सूक्ष्म तथा स्थूल माँसपेशियाँ व हड्डियाँ मजबूत बनती है, आँखों और हाथों का समन्वयन बेहतर होता है जो लिखने की योग्यता विकसित करने के लिए आवश्यक है। साथ ही जब बच्चे दूसरे बच्चों के साथ ज्यादा–से–ज्यादा खेल आधारित गतिविधियों की शुरूआत करते हैं और उनमें शामिल होते हैं तो वह सामाजिक कौशलों का विकास करते है तथा पहली पहचान का बोध करने लगते हैं। बच्चों के बीच ये

संलग्नता शुरूआती दौर में दो–दो के जोड़ों में धीरे–धीरे छोटे और उसके बाद बड़े समूहों में होती है जिसके द्वारा वह दूसरों के साथ सामजस्यता के साथ खेलना, काम करना और रहना सीखते है। वे इस बात को भी पहचानने लगते है कि वे सभी एक–दूसरे से भिन्न है ओर इस तथ्य को भी समझने लगते हैं कि इन भिन्नतओं को न केवल स्वीकार किए जाने, बल्कि उनका आदर किए जाने की भी आवश्यकता है।

लक्ष्य 5

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि बच्चों को अपनी विकसित होती हुई क्षमताओं और उपलब्धियों के प्रति स्वायतत्ता एवं विश्वास के बोध का अनुभव करने के अवसर मिले। इससे बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास होगा, जो अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मसम्मान तथा सकारात्मक आत्मबोध के विकास में मदद करेगा। यदि उनके स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव को उचित रूप से पोषित किया जाता है तो उनके जीवनपर्यंत सकारात्मक बने रहने की संभावना बढ़ जाती है। अधिगम तथा खेल अनुभव ऐसे हो जो बच्चों के लिए आकर्षक और चुनौतीपूर्ण हो। ये अनुभव ऐसे होने चाहिए जिसमें बच्चों द्वारा असफलता की अपेक्षा सफलताओं के अनुभव के अवसर प्रदान करें। इस प्रकार का दृष्टिकोण उनमें नयी चीजों को सीखने की रूचि जागृत करने, नये और दिन–प्रतिदिन के कार्यों में संलग्न रहने तथा अपनी भावनाओं एवं प्रयासों के प्रति नियमितता का भाव प्रदर्शित करने में मदद करेगा। ये सभी कौशल जीवन में सफलता और खुशहाली में योगदान देते हैं।

लक्ष्य 6

उपयुक्त अनुभव एवं अवसार सुनिश्चित करना–

पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को रूचिकर और आयु उपयुक्त बाह्य खेल गतिविधियों में भाग लेने के पर्याप्त एवं नियमित अवसर मिलने चाहिए। ये बाह्य खेल गतिविधियाँ इस प्रकार की हो जो स्थूल माँसपेशियों के विकास में योगदान दे सकें, जैसे– गेंद पकड़ना (कैच करना), दौड़ना, कूदना, रस्सी कूदना, संतुलन बनाना इत्यादि। बाह्य खेलों के साथ–साथ पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों की दैनिक योजना में स्वच्छंद रूप से अंदर खेले जोनेवाले खेलों के लिए भी समय और अवसर होने चाहिए। इन खेलों के लिए गतिविधि क्षेत्र (एक्टिविटी एरिया) हो, जिनमें ब्लॉक से खेलना, जोड़–तोड़ करने वाले खेलों व कला संबंधी गतिविधियों के लिए भरपूर सामग्री हो। ये बच्चों की रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति को पोषित करने में तो मदद करेंगे ही, साथ ही आँखों–हाथों के समन्वयन को भी सुदृढ़ करेंगे।

लक्ष्य 7

खेल गतिविधियाँ बच्चों के सामाजिक संदर्भों के अनुसार होनी चाहिए। सरल से जटिल के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए उनकी योजना बनानी चाहिए। खेल गतिविधियाँ चुनौतिपूर्ण होने के साथ ऐसी भी होनी चाहिए जिसे ज्यादातर बच्चे समान प्रयासों द्वारा संपादित कर पाएँ। ये बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप भी होनी चाहिए। स्वच्छंद खेल गतिविधियाँ बच्चों को अपनी रूचि प्रदर्शित करने, निर्णय लेने और दूसरों के अधिकार एवं परिप्रेक्ष्य को समझने के अवसर देती है। ये गतिविधियाँ सामाजिक रूप से वांछनीय व्यवहार (प्रो–सोशल बिहेवियर), जैसे– अपनी बारी की प्रतिक्षा करना, साझा करना, दूसरों की मदद करना, अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानना तथा संवेदनशील होना एवं तदानुभूति के विकास में सहयोग करती है।

लक्ष्य 8

यदि हम बच्चों की रूचियों और प्राथमिकताओं का ध्यान रखते हैं तो बच्चों में नियमित रूप से काम करने की आदत बढ़ती है, काम को पूरा करने का भाव और कार्य संबंधी अच्छी आदतों का विकास होता है। भोजन का समय और शौच जाने के लिए छोटे–छोटे अवकाश आदि जैसे प्रावधान स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों के बनने में मदद करते हैं, जैसे– हाथ धोना, दाँतों की साफ–सफाई, पोषक आहार लेना, चबा–चबाकर खाना, स्वच्छ जल पीना, अपने आस–पास के परिवेश को साफ रखना आदि।

शिक्षक सुनिश्चित करें कि बच्चों को स्वच्छंद एवं सुरक्षित बाह्य एवं अंदर खेले जाने वाले खेलों में संलग्न करने के लिए पर्याप्त, आसानी से उपलब्ध, सुरक्षित, आयु–उपयुक्त एवं साफ–सुथरे उपकरण/सामग्री मिले। अभिभावकों और बच्चों के साथ काम करने वाले अन्य लोगों की मदद से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त बदलाव किए जा सकते हैं। उपलब्ध सामग्री सभी बच्चों को बारी–बारी से खेलने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए ताकि उनमें सामाजिक कौशलों के विकास को बढ़ावा मिले, जैसे– समूह साथी में अच्छे से खिलौनों को साझा करना और शिष्टाचार में रहना। यह सुनिश्चित करना कि सभी बच्चे खेल में शामिल हैं और खेल रहे है तथा एक–दूसरे के साथ तालमेल बैठा रहे हैं।

लक्ष्य 9

बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बने

तीन वर्ष की आयुवाले बच्चे जब पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेते हैं तो आमतौर पर वे एकभाषी परिवेश से आते हैं। वे अपने घर की भाषा में मौखिक रूप से अपनी पसंद और नापसंद तथा अवश्यकताओं को जाहिर करने की क्षमता रखते हैं जो उनके विद्यालय की भी भाषा होती है। कुछ शिक्षित परिवारों में बच्चों को शैशवास्था (0–2 वर्ष) से ही पुस्तकों को देखने, कहनी सुनने, दूसरों को पढ़ते हुए देखने के अवसर मिल जाते हैं।

लक्ष्य 10

उपयुक्त अनुभव और अवसर सुनिश्चित करना

शिक्षण प्रणाली में उपयुक्त प्रकार का बदलाव यह माँग करता है कि शिक्षक साक्षरता को अलग से संबोधित न करें, बल्कि पठन–लेखन सिखाने का काम कक्षा में मौखिक भाषा कौशल के विकास के साथ–साथ ही करें। इन दोनों कौशलों (पठन–लेखन) को एक–दूसरे के पूरक के रूप में देखना चाहिए। इन दोनों कौशलों की पारस्परिक निर्भरता को समझना जरूरी है क्योंकि भाषाई दक्षता आसानी से और समझ (बोध) के साथ पठन कौशल को सुगम बनाती हे। बच्चे को पठन के जितने अधिक अवसर दिए जाएँगे, बच्चे का शब्द–भंडार उतना ही समृद्ध होगा। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि बच्चों के घर की भाषा को पूरा–पूरा सम्मान दिया जाए, क्योंकि बच्चों की पहचान और आरंभिक अवस्था के अनुभव का घर में बोले जानी वाली भाषा से गहरा संबंध होता है। घर की भाषा को महत्व दिया जाना जरूरी हैं विद्यालय की भाषा के साथ–साथ बच्चों की भाषा का उपयोग करते हुए द्विभाषी पद्धति अपनाने से अर्थबोध और अधिगम में आसानी रहती है। विद्यालय की भाषा की ग्राह्यता भी सुगम हो जाती है।

लक्ष्य 11

बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना।

छोटे बच्चे बहुत ही जिज्ञासु होते हैं और अपने संसार के प्रति मंत्रमुग्ध रहते हैं। उसके रंग, आकृतियों , ध्वनियाँ आकार और नमूनों के बारे में वह सबसे अधिक आकर्षित लोगों के प्रति रहते हैं विशेषकर उनकी देखभाल करने वालों तथा आस–पास के लोगों के प्रति दूसरों के साथ

जुड़ने और अपनी भावनाओं को साझा करने की क्षमता बच्चों में सीखने के विशेष अवसर प्रदान करती है, जो उनके सांस्कृतिक और सामाजिक जुड़ाव की आधारशिला है। पूर्व–प्राथमिक अवस्था में बच्चे अपने आसपास की दुनिया को अपने ही परिप्रेक्ष्य से समझना आरंभ कर देते हैं।

लक्ष्य 12

गणितीय सोच और तार्किक चिंतन

संज्ञानात्मक विकास के लिए बहुत ही महत्वपुर्ण आयाम है। अर्मूत, नियम आधारित चिंतन की नींव उन गतिविधियों के माध्यम से मजबूत होती है जो बच्चों के लिए अर्थपूर्ण हो। इस स्तर पर गणितीय सोच में वस्तुओं और उनकी मात्रा के साथ–साथ उनके स्थानिक संबंधों की समझ शामिल है। इस स्तर पर वस्तओं की विशिष्ट विशेषताओं या उनके गुणों की समझ को शामिल नहीं किया गया है।

उपयुक्त अनुभव और अवसर सुनिश्चित करना संज्ञानात्मक क्षेत्र में बच्चों का अधिगम उनकी पाँचों इन्द्रियों के भरपूर विकास द्वारा होना चाहिए। इसके साथ–ही खोजबीन करने, प्रयोग करने, प्रश्न पूछने जैसे अवसरों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह सब बच्चों के पूर्व ज्ञान और आसपास के परिवेश से जुड़ा होना चाहिए। बच्चों का सीखना और विकास समग्र रूप से होता है। यह स्वास्थ्य, संज्ञानात्मक, भाषायी, व्यक्तिगत तथा सामाजिक सकुशलता/विकास के क्षेत्रों में अग्रसर होता है। बच्चे भिन्न तरीकों और भिन्न गति से सीखते हैं। पाठ्यचर्या निम्नलिखित तीन व्यापक लक्ष्यों के माध्यम से विकास के सभी क्षेत्रों को एकीकृत करती है–

मुख्य संकल्पनाएँ/कौशलों प्रत्येक लक्ष्य के अंतर्गत, संप्रेषित की जाने वाली मुख्य संकल्पनाएँ या कौशल शिक्षकों के लिए दिए गए हैं, जिनका लक्ष्य बच्चों का सर्वांगीण विकास है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि पाठ्यचर्या को संप्रेषित करते समय सुनिश्चित करें कि प्रत्येक संकल्पना या कौशल को विभिन्न तरीकों से संबोधित किया जाए। शिक्षण प्रक्रियाएँ शिक्षकों द्वारा पाठ्यचर्या को इस प्रकार संप्रेषित करने में उपयोग में ली जाने वाली कार्यनीतियाँ हैं, जिसमें बच्चे खोजबीन, जाँच–पड़ताल, समस्या–समाधान और विवेचनात्मक चिंतन द्वारा अपने अधिगम का निर्माण करते हैं और इस प्रकार निर्दिष्ट आरंभिक सीखने के प्रतिफल प्राप्त करते हैं।

आरंभिक सीखने के प्रतिफल छोटे बच्चों के सीखने और विकास के लिए अपेक्षाएँ हैं। दूसरे शब्दों में, बच्चों को प्रत्येक वर्ष के अंत में क्या जान लेना चाहिए और क्या करने योग्य हो जाना चाहिए। सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने हेतु शिक्षकों को खेलने, अन्वेषण करने, खोज करने और समस्या–समाधान के लिए गतिविधियों, अनुभवों, विषयवस्तु को शिक्षण विधि में सम्मिलित करना चाहिए।

- **पाठ्यचर्या के लघु एवं दीर्घकालिक उद्देश्य तथा नियोजन**

भारत सरकार ने पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए कई प्रावधान किये हैं, जैसे – स्वास्थ्य और देखभाल सुविधाओं की उपलब्धि, आधारिक संरचना, पाठ्यचर्या, शिक्षक–प्रशिक्षण और शिक्षण–अधिगम को बढ़ावा देने के प्रयास। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986; राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005; राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति, 2013; राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2013 और प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा के लिए गुणवत्ता मानक, 2013)।

किये गए सर्वेक्षण के अनुसार देश में 3 से 8 वर्ष के बच्चों, अर्थात विद्यालय–पूर्व और प्रारंभिक विद्यालय शिक्षा (कक्षा 1 और 2) के लिए प्रावधानों तक पहुँच में वृद्धि हुई है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के लागू होने के साथ, अब सभी बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे 6 वर्ष के होने पर विद्यालय आये। शोध द्वारा पता चलता है कि बच्चों की एक बड़ी संख्या अपर्याप्त विद्यालयी तैयारी के साथ प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश लेती है, जिसकी वजह से उनके सीखने का स्तर कम रह जाता है तथा विद्यालय से बाहर होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। साथ ही, राष्ट्रीय मानक के अनसुार कार्यान्वयन के लिए अनुकूल बनाया जा सके।

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

- एक बाल अनुरूप वातावरण का निर्माण करना जहाँ सभी बच्चे अपना महत्त्व समझें, अपने आप को सम्मानित व सुरक्षित महसूस करें और स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव रखें।
- बच्चों में बेहतर स्वास्थ्य, खुशहाली, पोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों के लिए मजबूत नींव डालना। बच्चों को ऐसा परिवेश देना जो उन्हें प्रभावशाली संप्रेषक बनने में मददगार हो और जहाँ वे प्रभावशाली तरीके से सुनना–बोलना सीख सकें।
- बच्चों को लगन से सीखने वाला बनाने, समीक्षात्मक रूप से सोच विकसित कराने, रचनात्मक बनाने और अपने परिवेश से सहयोग, संवाद और जुड़ाव स्थापित कर सकने में मदद करना।
- पूर्व–प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय में सहज पारगमन के लिए तैयार करना।
- अभिभावकों और समुदाय के साथ भागीदार बनकर काम करना जिससे सभी बच्चों को पनपने के अवसर मिल सके।

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

1. बाल–हितैषी वातावरण सुनिश्चित करना जहाँ प्रत्येक बच्चे का महत्व हो, उसे आदर मिले, वह सुरक्षा और सुदृढ़ता का अनुभव करे और एक सकारात्मक आत्मधारणा विकसित करे।
2. अच्छे स्वास्थ्य, खशुहाली, पोषण, स्वस्थ आदतें और स्वच्छता के लिए ठोस आधार तैयार करना।
3. बच्चों को प्रभावी संप्रेषक बनने और ग्रहणशील तथा भावबोधक दोनों भाषाओं को विकसित करने में सक्षम बनाना।
4. बच्चों को अभिभावक भागीदार शिक्षार्थी बनने, विवेचनात्मक रूप से सोचने, रचनात्मक, भागीदार, संप्रेषक बनने और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ने में मदद करना।
5. बच्चों द्वारा पूर्व–प्राथमिक से प्राथमिक विद्यालय में बदलाव को सहज रूप से समायोजित करना।
6. अभिभावकों और समुदायों के साथ हर बच्चे के विकास के अवसर प्रदान करने हेतु एक जोड़ीदार के रूप में कार्य करना।
7. बाल–हितैषी वातावरण सुनिश्चित करना जहाँ प्रत्येक बच्चे का महत्त्व हो, उसे आदर मिले, वह सुरक्षा और सुदृढ़ता का अनुभव करें और एक सकारात्मक आत्म–धारणा का विकास हो।
8. अच्छे स्वास्थ्य, खुशहाली, पोषण, स्वस्थ आदतें और स्वच्छता के लिए ठोस आधार तैयार करना।
9. बच्चों को प्रभावी संप्रेषक बनाने और ग्रहणशील तथा भाव–बोधक दोनों भाषाओं को विकसित करने में सक्षम बनाना।
10. बच्चों को भागीदार शिक्षार्थी बनाने, विवेचनात्मक रूप से सोचने, रचनात्मक भागीदारी, संप्रेषक बनाने और आसपास के परिवेश से जुड़ने में मदद करना।

11. बच्चों द्वारा पूर्व–प्राथमिक से प्राथमिक विद्यालय में बदलाव को सहज रूप से समायोजित करना।
12. अभिभावकों एवं समुदायों के साथ हर बच्चे के विकास के अवसर प्रदान करने हेतु एक जोड़ीदार के रूप में कार्य करना।

पूर्व–प्राथमिक विद्यालयी बच्चों की विशेषताएँ

पूर्व–प्राथमिक विद्यालय के बच्चे अपने परिवेश में रंगों, आकृतियों, ध्वनियों, आकारों और नमूनों के प्रति अत्यंत जिज्ञासु और उत्साही होते हैं। उनकी अपने आसपास के परिवेश को जानने–समझने की और विभेदीकरण की क्षमता दिन–प्रतिदिन समृद्ध होती जाती है। यह आरंभिक अधिगम बड़ों और साथियों दोनों ही के साथ संप्रेषण से होता है, जिसमें भाषा की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों को इस प्रकार के हर अवसर उपलब्ध करवाने चाहिए, जिससे वे अपने आसपास और इससे भी कहीं आगे जाकर मानवीय, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए प्रश्न कर सकें और खोजबीन कर सकें। अपने परिवेश की जाँच–पड़ताल करते समय बच्चे अवलोकन करने, प्रश्न करने, चर्चा करने, अनुमान लगाने, विश्लेषण करने, खोजबीन और तरह–तरह के प्रयोग करने में लगे रहते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान वे तरह–तरह की अवधारणाओ तथा विचारों की रचना करते हैं, उनमें सुधार करते हैं और इस प्रकार अवधारणाओ के प्रति समझ बनाते हैं। वे अपनी भावनाओ पर नियंत्रण रखना, एक–दूसरे के साथ मिलकर साझा करने की आदत डालना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना और मित्रों के साथ सहयोग करना सीखते हैं। बच्चे यह बताने में सक्षम हो जाते हैं कि वे कब खुश हैं और कब उदास हैं। अपने प्रति भी उनकी समझ आकार लेने लगती है। इसलिए प्रस्तुत पाठ्यचर्या में इस प्रकार की विशिष्ट विषय–वस्तु और वस्तु–शिक्षण कला को अतंर्निहित किया गया है जो बच्चों की आय, और विकासात्मक जरूरतों को पूरा कर सके। साथ–ही दिशा निर्देशक सिद्धांतों के रूप में सैद्धान्तिक और अवधारणात्मक रूपरेखा का आधार बन सके। इस प्रकार से यह पाठ्यचर्या आयु–विशेष में दिए जाने वाले अनुभवों में लचीलेपन का प्रावधान तो प्रस्तुत करती ही है, साथ ही साथ विविधता का भी ध्यान रखती है। बहुस्तरीय, मिश्रित आयुवर्ग वाली कक्षाओ की वास्तविकताओं को भी ध्यान में रखती है और पूर्व–प्राथमिक कक्षाओ से प्रारंभिक कक्षाओं में जाने की प्रक्रिया को सरल बनाती है। इसका परिणाम इस रूप में प्रतिबिंबित होता है कि बच्चे अपने 'स्व' की छवि के प्रति सकारात्मक भाव रखते हैं, अपने प्रति आत्मविश्वास पैदा करते हैं, बेहतर कार्य कर पाते हैं और इससे उनके विद्यालय में बने रहने की संभावना भी बढ़ जाती है।

पूर्व–प्राथमिक पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धांत

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की उभरती हुई जरूरतों और बदलते परिदृश्य के आलोक में यह प्रयास किया गया है कि मौजूदा पाठ्यचर्या समग्रतावादी, विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप, बच्चों के सामाजिक संदर्भों से जुड़ी हो और सबसे महत्वपूर्णबात यह है कि खेल एवं गतिविधि आधारित हो।

निम्नलिखित मार्गदर्शक सिद्धांत मौजूदा पाठ्यचर्या की रूपरेखा तय करते हैं:–

- सीखना सतत और संचय होता हैं। जन्म के साथ ही सीखना आरंभ हो जाता है और यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है। चूँकि बच्चे इन्द्रियों और उत्प्रेरणा के द्वारा सीखते हैं, इसलिए उनके विकास पर आरंभिक देखभाल और उत्प्रेरणा का समग्र और व्यापक रूप से प्रभाव पड़ता

है। इसलिए यह आवश्यक है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित सभी बच्चों को आरंभिक वर्षों में ही समुचित उत्प्रेरणा देने के अवसर प्रदान किए जाएं।

तंत्रिका विज्ञान से प्राप्त साक्ष्य सिद्ध करते हैं कि आरंभिक अधिगम आगामी जीवन की उपलब्धियों को प्रभावित करता हैं।

जीव–तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में हुए अनुसंधान दर्शाते हैं कि बच्चे के जीवन के शुरुआती वर्षों में जिस प्रकार के अनुभव दिए जाते हैं, बच्चे उन्हीं तरीकों से सीखते हैं। यद्यपि अनुवांशिकी की मस्तिष्क की रचना में बहुत बड़ी भूमिका है तथापि आगे के जीवन में मस्तिष्क किस प्रकार से कार्य करेगा, इसके लिए बच्चों के आरंभिक अनुभव बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

- हर बच्चा अलग होता है और वह अपनी गति से ही बढ़ता, सीखता और विकसित होता है।

यद्यपि सभी बच्चों के विकास का आमतौर पर लगभग एक–सा ही अनुक्रम होता है, फिर भी यह सत्य है कि सभी बच्चे अपने–आप में अद्वितीय हैं और अपनी गति के आधार पर क्षमताएँ और कौशल अर्जित करते हैं। एक अच्छे पूर्व–प्राथमिक विद्यालयी कार्यक्रम में बच्चों की विभिन्न क्षमताओं और विकास की अपनी गति का ध्यान रखा जाता है। पूर्व–प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम यह भी सुनिश्चित करता है कि सभी बच्चों का उनकी पूरी क्षमताओ के साथ शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और बौद्धिक विकास हो सके। यह पाठ्यचर्या विकास उन समुचित प्रक्रियाओं का पालन करती है जो बच्चों के द्वारा अधिकतम सीखने और उनके विकास में मदद करने के लिए उनकी आयु, अवस्था और संदर्भ के उपयक्तु हों। पाठ्यचर्या यह भी सुझाती है कि विकास के भिन्न–भिन्न चरणों में बच्चों की आवश्यकताओं को संबोधित करने वाली अनेक शिक्षण–शैलियों का उपयोग किया जाए।

- **गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियों/प्रक्रियाओं का चयन (उदाहरण–विषयवस्तु आधारित प्रक्रिया, प्रोजेक्ट विधि आदि)**

सीखने और विकास का आधार खेल एवं गतिविधियाँ हैं

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के लिए खेल एवं गतिविधियाँ सर्वश्रेष्ठ शिक्षण माध्यम हैं। ये गतिविधियाँ बच्चों को खोजबीन करने, प्रयोग करने, परिवेश को अपने अनुसार ढालने और अनभुव करने के अवसर प्रदान करती हैं। इस प्रकार बच्चे स्वयं ही ज्ञान का सृजन करते हैं। पाठ्यचर्या इस प्रकार की खेल गतिविधियों का सुझाव देती है जिनसे विभिन्न प्रकार के खेलों, जैसे स्वच्छंद व निर्देशित खेल, क्रियाशील और दूसरे के द्वारा खेलाए जाने वाले खेल, भीतरी तथा बाह्य खेल, वैयक्तिक एवं सामूहिक खेल, संरचनात्मक व असंरचनात्मक खेलों के अनुपालन में संतुलन बना रहता है। खेलों का अधिकांश भाग स्वयं प्रेरित खेलों एवं गतिविधियों पर आधारित होना चाहिए जो बच्चों की रुचि और इच्छा पर आधारित हो।

- बच्चों के सीखने के लिए बड़ों के साथ प्रतिक्रियात्मक और सहयोग अंतःक्रिया (संवाद) अनिवार्य है।

बच्चे अपने अभिभावकों, परिवार, शिक्षक व समाज के साथ अपने संबंधों के द्वारा सीखते हैं। संबंधों को बनाए रखने से बच्चों में सुरक्षा की भावना, आत्मविश्वास, कौतुहल और संवाद करने की क्षमता पैदा

होती है। इन संबंधों और अंतःक्रिया के आधार पर बच्चे यह भी सीखते हैं कि अपनी भावनाओ को किस प्रकार नियंत्रित किया जाए और उन्हें समाज में उपयोगी तरीके से कैसे दूसरों से जोड़ा जाए।

- अनुभवजन्य अधिगम के लिए परिवेश निर्मित करने से बच्चे सीखते हैं।

बच्चे अपने परिवेश में प्रत्यक्ष व क्रियात्मक अनुभवों द्वारा सीखते हैं जो उन्हें अपने शिक्षक और साथियों के साथ पारस्परिक अंतःक्रिया करने और उनके निर्देशों के आधार पर अपने ज्ञान का सृजन करने में सहायक होते हैं। जब सीखना इस प्रकार से होगा तो वह स्थायी भी होगा। शुरुआती अवस्था में बच्चे अपने स्तर से आगे की जानकारी को भी जानने की कोशिश करते हैं, फिर वापस अपनी आयु अनुरूप जानकारी की खोजबीन करते हैं, पुनः आगे के स्तर की खोजबीन में जुट जाते हैं। इस प्रकार अधिगम का यह चक्र चलता ही रहता है। इस बात को सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है कि बच्चों को उनके विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप सामग्री, अनुभव और चुनौतियाँ दी जाएँ जिससे वे स्वयं ज्ञान का सृजन कर सकें। इस प्रक्रिया में कार्यों की पुनरावृत्ति भी होगी, अध्यापकों और अनुभवी मित्रों का मार्गदर्शन भी होगा। इससे सभी बच्चों को अपनी नैसर्गिक क्षमताओं का विकास करने का अवसर मिलेगा और वे स्वतंत्र रूप से काम करना भी सीखेंगे।

- पारस्परिक शिक्षण–अधिगम अनुभवों को समृद्ध करता हैं

बच्चों का आपस में एक–दूसरे के साथ काम करना, बच्चों का शिक्षक के साथ और सामग्री के साथ तरह–तरह के कार्य करना गुणवत्तापरक पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का महत्वपूर्णपहल है। बच्चों के आपस में संवाद, परिवेशीय और सांस्कृतिक अनुभवों की विविधता तथा सार्थक संवाद सुदृढ़ ज्ञान के सृजन की नींव प्रदान करते हैं व उन्हें औपचारिक विद्यालय के लिए तैयार करते हैं।

- स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का विकास और उपयोग सीखने के अवसरों को समृद्ध करता है

स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग बच्चों को आरंभिक उत्प्रेरणा और शिक्षा देने में बहुत ही सहायक होता है। इससे स्थानीय रूप से महत्वपूर्ण मूल्यों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के पहलुओं का संरक्षण तो होता ही है, साथ–ही ये अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। ये शिक्षक, बच्चों, अभिभावकों और समुदाय को सक्रिय एवं रचनात्मक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में योगदान देने के अवसर भी प्रदान करते हैं।

- संदर्भ के प्रति संवेदनशीलता और विविधताओं की सराहना अधिगम में सहायक होती हैं

यह बहुत आवश्यक है कि सभी बच्चों के सकारात्मक बिंदुओ और क्षमताओं की पहचान की जाए जिससे उन्हें सीखने के अधिकतम अवसर दिए जा सकें। प्रत्येक बच्चे को हर शैक्षिक अनुभव और गतिविधि में शामिल करने की जरूरत है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को व्यक्तिगत रूप से निर्देश मिलने चाहिए जिससे बच्चे अपेक्षित कौशल, व्यवहार के तौर–तरीके और अवधारणाओ को सीख सकें और उन्हें विकसित कर सकें। चूँकि समाजीकरण पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का एक महत्वपर्ण लक्ष्य है, इसलिए बच्चों को खेल, सामूहिक गतिविधियों और भिन्न–भिन्न प्रकार के संवादों में भाग लेने के भरपूर अवसर मिलने चाहिए। यह बहुत ही महत्वपूर्णहै कि सभी बच्चों को, चाहे वे किसी भी जाति, वंश, जेंडर, क्षमता, लैंगिक रुझान, अक्षमता, भाषा, संस्कृति, धर्म, सामाजिक–आर्थिक स्थिति के हो, समान रूप से सीखने के अवसर

सुलभ हो। पाठ्यचर्या संबंधी निर्णय ज्ञान के उन संदर्भों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व अनुभवों को सम्मान व महत्त्व देने वाले हों जिन्हें बच्चे अपने संग पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में लेकर आते हैं। इस तरह के अवसर भी दिए जाने चाहिए ताकि बच्चे एक–दूसरे की सांस्कृतिक और समूह की समझ तथा अंतर्निहित विविधता को स्वीकार कर सकें।

- मातृभाषा/घर की भाषा ही शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए

भाषा का बच्चों की पहचान और भावनात्मक सुरक्षा से साथ घनिष्ठ संबध है। भाषा उन्हें अपने विचार और भावनाओ को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने में सहायक है। हमारे जैसे बहुभाषी देश में सीखने–सिखाने की भाषा एक जटिल मुद्दा है। पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में आने वाले, प्राथमिक विद्यालयों में आने वाले बच्चों के घर की भाषा, विद्यालय की भाषा या फिर उस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा से भिन्न हो सकती है। शोध यह दर्शाते हैं कि जिन बच्चों को पूर्व–प्राथमिक कार्यक्रम में अपनी मातृभाषा में बोलने के अवसर मिलते हैं, वे आसानी से किसी विषय पर समझ बना लेते हैं। बच्चों की मातृभाषा/घर की भाषा में शिक्षण को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया गया है क्योंकि शुरुआती वर्षों में अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए यही एक सर्वाधिक उपयुक्त तरीका है। यदि कक्षा का परिवेश ऐसा है जिसमें अलग–अलग भाषाएँ बोलने वाले बच्चे मौजूद हैं तो शिक्षक से अपेक्षा है कि वे अभिव्यक्ति के लिए हर भाषा को स्वीकृत करें और फिर धीरे–धीरे विद्यालय की भाषा से उनका परिचय करवाएँ। सभी बच्चों को सांकेतिक भाषा से परिचित होने के मौके भी दिए जाने चाहिए। यह समावेशन की नीति की नींव डालने में मददगार होगा।

- अधिगम में परिवार की सहभागिता महत्वपूर्ण योगदान देती है

बच्चों के अधिगम और विकास में अभिभावकों और परिवार का बहुत ही महत्वपूर्णयोगदान होता है। पूर्व–प्राथमिक पाठ्यचर्या, पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों और घरों में परिवारों की सहभागिता और साझेदारी की अनुशंसा करती है।

मूल्यांकन

1. प्रारंभिक पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धांतों का वर्णन करें।
2. बाल केंद्रित शिक्षा के महत्व का वर्णन करें।
3. प्रारंभिक पाठ्यचर्या के लक्ष्यों का उल्लेख करते हुए विस्तार से चर्चा करें।

इकाई – 3

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं विद्यालय की तैयारी

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप सक्षम होंगें–

- प्राथमिक विद्यालययों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विस्तार का अर्थ समझने में।
- प्रारंभिक वर्षों में प्रक्रियाओं के बाल केन्द्रित होने का अर्थ समझने में।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल एवं गतिविधियों के आयोजन का महत्व को बल देने में।
- विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषा तथा गणितीय कौशल की समझ विकसित करने में।

मानव–जीवन निरंतर विकासात्मक प्रक्रिया है। तात्पर्य है कि जीवन के किसी भी आयु से आगे का विकास जीवन में हुए पिछले विकास का प्रतिफल होता है और मुख्यतः जीवन में हुए पिछले विकास के दौरान ही निर्धारित होता है। भारतवर्ष के बच्चों के संदर्भ में यह बात ध्यान देने योग्य है कि बड़ी संख्या में बच्चे अपर्याप्त विद्यालयी तैयारी के साथ प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश लेते हैं। फलतः उनके विद्यालय से असमय बाहर होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं एवं उनके कक्षा–कक्ष में सीखने का स्तर भी कम हो जाता है।

- **प्राथमिक विद्यालयों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विस्तार का अर्थ एवं आधार**

पूर्व में प्रारम्भिक बाल्यावस्था को गर्भाधान से लेकर छः वर्ष की उम्र तक माना जाता था, किन्तु सामान्यतः अब इसे बढ़ाकर गर्भाधान से लेकर आठ वर्ष की उम्र तक कर दिया गया है। इस अवधि को दो वर्षों तक बढ़ाने के पीछे तर्क का आधार यह है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा के बीच के संक्रमण–काल को सरल बनाया जा सके। साथ–ही, शिक्षा के हितधारकों और योजनाकारों के द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था की योजनाओं का समग्र रूप से निर्धारण एवं क्रियान्वयन किया जा सके।

विकासात्मक मनोविज्ञान के सिद्धांतों एवं अधिगम के सिद्धांतों के अनुसार यह प्रारम्भिक बाल्यावस्था का काल बच्चों के विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्णहोता है। इस अवस्था में मानव–मस्तिष्क का विकास द्रुत–गति से होता है। उसके सामाजिक और व्यक्तिगत स्वभाव और आदतों का तीव्र विकास होता है, जो बच्चों के सर्वांगीण विकास की बुनियाद होती है।

नई शिक्षा–नीति–2020 में बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जिन मूलभूत सिद्धांतों को अपनाया गया है। उनमें से निम्नलिखित प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा से प्रत्यक्षतः सम्बद्ध हैंः–

- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना शिक्षकों और अभिभावकों को इन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाना जिससे वे बच्चे की अकादमिक और अन्य क्षमताओं में उसके सर्वांगीण विकास पर भी पूरा ध्यान दें।

- बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना जिससे सभी बच्चे कक्षा 3 तक साक्षरता और संख्याज्ञान जैसे सीखने के मूलभूत कौशलों को हासिल कर सकें।

यह नीति वर्तमान की 10+2 वाली विद्यालय व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षा–शास्त्रीय आधार पर 5 + 3 + 3 + 4 की एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है, जैसा कि यहाँ दी गयी आकृति में दिया गया है:–

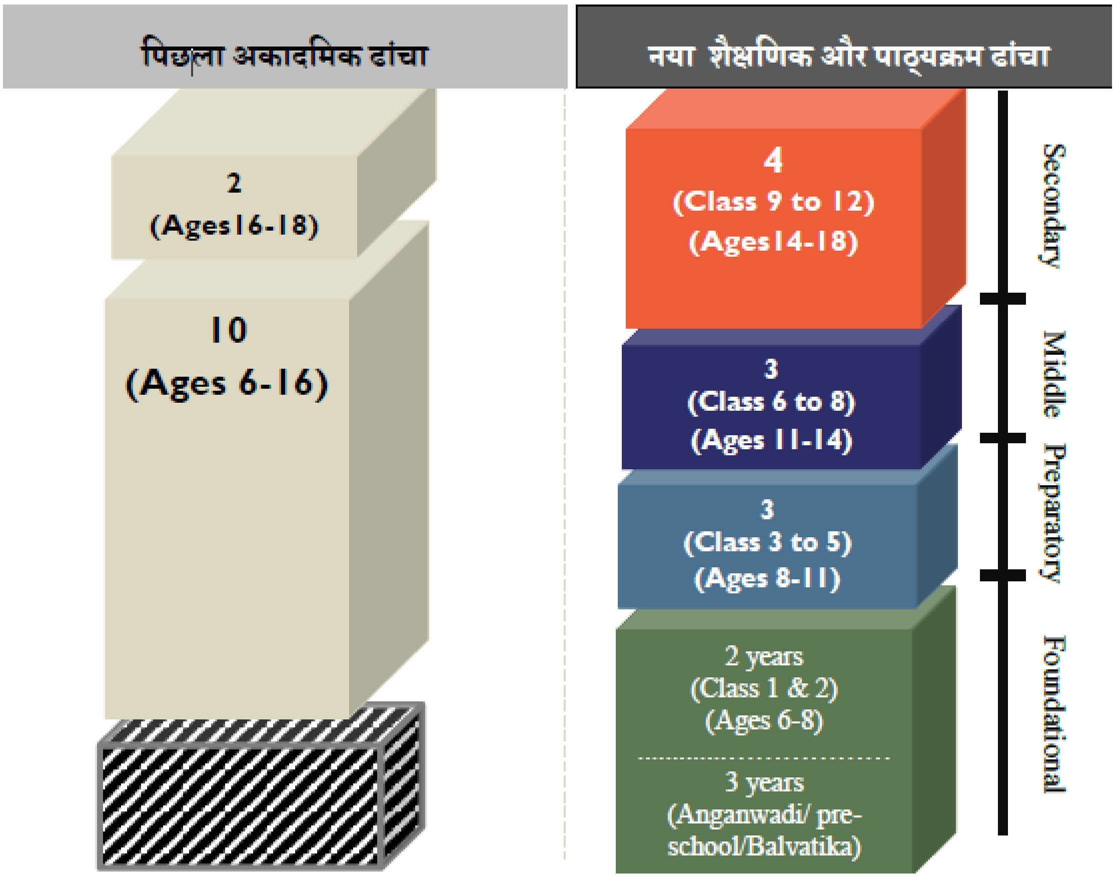

वर्तमान में 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चे 10+2 वाले ढांचे में शामिल नहीं हैं क्योंकि 6 वर्ष के बच्चों को कक्षा 1 में प्रवेश दिया जाता है। नए 5+3+3+4 ढांचे में 3 वर्ष के बच्चों को शामिल कर प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई०सी०सी०ई) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो, वे बेहतर उपलब्धियां हासिल कर सकें और खुशहाल हों।

- **प्रारंभिक वर्षों में प्रक्रियाओं के बाल केन्द्रित होने का अर्थ**

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा: सीखने की नींव है–

1.1. बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उनके आरंभिक 6 वर्षों को महत्वपूर्णमाना जाता है। वर्तमान समय में, विशेष रूप से सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए, गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध नहीं है। इसलिए ई०सी०सी०ई में

निवेश करने से इसकी पहुँच देश के सभी बच्चों तक हो सकती है जिससे सभी बच्चों को शैक्षिक प्रणाली में भाग लेने और तरक्की करने के समान अवसर मिल सकेंगे। ई०सी०सी०ई संभवतः, समता स्थापित करने में सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जल्द–से–जल्द, निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व, उपलब्ध किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे विद्यालयी शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हों।

1.2. ई०सी०सी०ई में मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहु–स्तरीय, खेल–आधारित, गतिविधि–आधारित, और खोज–आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। जैसे अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। ई०सी०सी०ई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक–भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक–विकास, संवेगात्मक–विकास, नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारम्भिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है।

1.3. एन०सी०ई०आर०टी द्वारा 8 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए दो भागों में प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए एक उत्कृष्ट पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढांचा विकसित किया जाएगा, अर्थात 0–3 वर्ष के बच्चों के लिए एक सब–फ्रेमवर्क और 3–8 साल के लिए एक अन्य सब–फ्रेमवर्क का विकास किया जाएगा। उपरोक्त दिशा–निर्देशों के अनुसार, ई०सी०सी०ई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नवाचार एवं सर्वोत्तम प्रथाओं पर नवीनतम शोध को शामिल करेगा।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो 3–6 वर्ष के आयु–समूह को दी जाती है। यह औपचारिक शिक्षा का प्रथम चरण है। प्राथमिक शिक्षा भिन्न–भिन्न स्वरूपों में दी जा रही है जैसे – आँगनवाड़ी, नर्सरी स्कूल, पूर्व–प्राथमिक विद्यालय, प्रीप्रेटरी स्कूल, किंडरगार्टन, मॉन्टेसरी स्कूल और सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पूर्व प्राथमिक अनुभाग।

गतिविधि 1:– मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता

नई शिक्षा नीति द्वारा प्रस्तावित मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता (FLN) के 2025 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की संकल्पना

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की संकल्पना है कि तीन से छः वर्ष की आयु के सभी बच्चे का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए सार्वभौमिक, समतावादी, आनंददायी, समावेशित और बच्चों के परिवेश से मेल खाते सीखने के अवसरों को समुन्नत किया जाए। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब अभिभावक और

शिक्षक भावनात्मक रूप से समर्थन दें, संस्कृति से जुड़ें, बाल–केंद्रित प्रोत्साहनवर्धक अधिगम परिवेश सृजित करने में सहभागी बनें। इसका लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का उसके उच्चतम स्तर तक विकास हो ताकि खेल और विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप अभ्यास द्वारा जीवनपर्यंन्त रहने वाले अधिगम की मजबूत नींव तैयार हो सके। यह पाठ्यचर्या इस बात को भी महत्व देती है कि सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छे मूल्य, समीक्षात्मक चिंतन के कौशलों, सहयोग, संप्रेषण, रचनात्मकता, तकनीक, साक्षरता और सामाजिक–भावनात्मक विकास भी हो। इस पाठ्यचर्या की यह भी सोच है कि जब बच्चे पूर्व–प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय की ओर कदम बढ़ाएँ तो उन्हें किसी प्रकार की भावनात्मक परेशानी न हो और वे भविष्य में रचनात्मक व संतोषप्रद जीवन का आनंद ले सकें।

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

एक ऐसे बाल अनुरूप वातावरण का निर्माण करना जहाँ सभी बच्चे अपना महत्व समझें, अपने आपको सम्मानित व सुरक्षित महसूस करें और स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव रखें। बच्चों में बेहतर स्वास्थ्य, खुशहाली, पोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों के लिए मजबूत नींव डालना। बच्चों को ऐसा परिवेश देना जो उन्हें प्रभावशाली संप्रेषक बनने में मददगार हो और जहाँ वे प्रभावशाली तरीके से सुनना–बोलना सीख सकें। बच्चों को लगन से सीखने वाला बनने, समीक्षात्मक रूप से सोच सकने, रचनात्मक बनने और अपने परिवेश से सहयोग, संवाद और जुड़ाव स्थापित कर सकने में मदद करना। पूर्व–प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय में सहज पारगमन के लिए तैयार करना। अभिभावकों और समुदाय के साथ भागीदार बनकर काम करना जिससे सभी बच्चों को पनपने के अवसर मिल सकें ।

मार्गदर्शक सिद्धांत

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की उभरती हुई जरूरतों और बदलते परिदृश्य के आलोक में यह प्रयास किया गया है कि मौजूदा पाठ्यचर्या समग्रतावादी, विकासात्मक प्रतिमानों के अनुरूप, बच्चों के सामाजिक संदर्भों से जुड़ी हो और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि खेल एवं गतिविधि आधारित हो। निम्नलिखित मार्गदर्शक सिद्धांत मौजूदा पाठ्यचर्या की रूपरेखा तय करते हैं

- सीखना सतत और संचयी होता है।
- तंत्रिका विज्ञान से प्राप्त साक्ष्य सिद्ध करते हैं कि आरंभिक अधिगम आगामी जीवन की उपलब्धियों को प्रभावित करता है।
- हर बच्चा अलग होता है और वह अपनी गति से ही बढ़ता, सीखता और विकसित होता है। सीखने और विकास का आधार खेल एवं गतिविधियाँ है।
- बच्चों के सीखने के लिए बड़ों के साथ प्रतिक्रियात्मक और सहयोगी अंतःक्रिया (संवाद) अनिवार्य है।
- अनुभवजन्य अधिगम के लिए परिवेश निर्मित करने से बच्चे सीखते हैं।
- पारस्परिक शिक्षण–अधिगम अनुभवों को समृद्ध करता है।
- स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का विकास और उपयोग सीखने के अवसरों को समृद्ध करता है।
- संदर्भ के प्रति संवेदनशीलता और विविधताओं की सराहना अधिगम में सहायक होती हैं।
- मातृभाषा/घर की भाषा ही शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए।
- अधिगम में परिवार की सहभागिता योगदान देती है।

बच्चे आमतौर पर 3 वर्ष की आयु तक पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में जाने लायक हो जाते हैं। बच्चों को 3–6 वर्ष की आयु के दौरान कक्षा एक से पहले कम–से–कम तीन वर्ष की पूर्व–प्राथमिक शिक्षा मिल जाए। यद्यपि बच्चों के विकास के संदर्भ में विकास का एक सार्वभौमिक निश्चित क्रम बताया गया है तथापि यह भी देखने में आता है कि पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में आने वाले बच्चे अपने संदर्भ और क्षमताओं के कारण भिन्न–भिन्न प्रकार के अनुभवों के साथ आते हैं। कक्षा में मौजूद विविधता का एक और बड़ा कारण यह भी है कि एक–ही कक्षा में भिन्न–भिन्न आयु–वर्ग के बच्चे मौजूद होते हैं। इस विविधता के अनुरूप पूर्व बाल्यावस्था शिक्षा में पर्याप्त लचीलापन होना चाहिए, बच्चों के कालानुक्रमिक आयु से बाँधना नहीं चाहिए। पूर्व बाल्यावस्था शिक्षा को शिक्षक अपने हिसाब से बाल अनुरूप बनाएँ। बच्चों की आयु को और इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए कि वे पहली बार अपने घर से अलग नये वातावरण में कुछ समय बिताएँगे, उन्हें स्वच्छंद रूप से खेलने के भरपूर मौके दिए जाएँ, जिससे वे लोगों और नये वातावरण के प्रति अपनी पसंद विकसित कर सकें। इस प्रकार से धीरे–धीरे सुनियोजित गतिविधियों की ओर बढ़ा जा सकेगा।

बच्चों का सीखना और विकास समग्र रूप से होता है, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो या फिर संज्ञानात्मक या व्यक्तिगत और सामाजिक विकास अथवा फिर खुशहाली, सभी में विकास और सीखने की प्रक्रिया साथ–साथ चलते हैं। बच्चे भिन्न –भिन्न समय पर, भिन्न –भिन्न तरीकों से और भिन्न –भिन्न गति से सीखते हैं। पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में अतंर्निहित संभावनाओं के समुचित विकास को सुगम बनाना है और सर्वांगीण विकास एवं जीवनपर्यंत सीखने की नींव रखना है। पूर्व बाल्यावस्था शिक्षा को निम्नलिखित तीन मुख्य लक्ष्यों के माध्यम से विकास के सभी क्षेत्रों को संबोधित करना चाहिएः–

लक्ष्य 1: बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना

प्रारंभिक बाल्यावस्था का समय बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन वर्षों के दौरान अगर बच्चों को सही अवसर और प्रोत्साहन मिलें तो उनकी पाँचों इन्द्रियों का विकास होता है, उनकी सूक्ष्म तथा स्थूल माँसपेशियाँ व हड्डियाँ मजबूत बनती हैं, आँखों और हाथों का समन्वयन बेहतर होता है जो लिखने की योग्यता विकसित करने के लिए आवश्यक है। साथ–ही जब बच्चे दूसरे बच्चों के साथ ज्यादा–से–ज्यादा खेल आधारित गतिविधियों की शुरुआत करते हैं और उनमें शामिल होते हैं तो वह सामाजिक कौशलों का विकास करते हैं तथा पहली पहचान का बोध करने लगते हैं। बच्चों के बीच यह संलग्नता शुरुआती दौर में दो–दो के जोड़ों में, धीरे–धीरे छोटे और उसके बाद बड़े समूहों में होती है जिसके द्वारा वह दूसरों के साथ सामंजस्यता के साथ खेलना, काम करना और रहना सीखते हैं।

अनुभव एवं अवसर सुनिश्चित करना

पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को रुचिकर और आयु उपयुक्त बाह्य गतिविधियों में भाग लेने के पर्याप्त एवं नियमित अवसर मिलने चाहिए। ये बाह्य गतिविधियाँ इस प्रकार की हो जो स्थूल माँसपेशियों के विकास में योगदान दे सकें, जैसे गेंद पकड़ना (कैच करना), दौड़ना, कूदना, रस्सी कूदना, संतलुन बनाना आदि। बाह्य खेलों के साथ–साथ पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों की दैनिक योजना में स्वच्छंद रूप से अंदर खेले जाने वाले खेलों के लिए भी समय और अवसर होने चाहिए। इन खेलों के लिए गतिविधि क्षेत्र (एक्टिविटी एरिया) हो, जिनमें ब्लॉक से खेलना, जोड़–तोड़ करने वाले खेलों व कला संबंधी गतिविधियों के लिए भरपूर सामग्री हो। ये बच्चों की रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति को पोषित करने में तो मदद करेंगे ही, साथ–ही आखों–हाथों के समन्वयन को भी सुदृढ़ करेंगे। खेल गतिविधियाँ बच्चों के सामाजिक संदर्भों के अनुसार होनी चाहिए। सरल से जटिल के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए उनकी योजना बनानी चाहिए। खेल गतिविधियाँ चुनौतीपूर्ण होने के साथ ऐसी भी होनी चाहिए जिसे ज्यादातर

बच्चे समान प्रयासों द्वारा संपादित कर पाएँ। ये बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप भी होनी चाहिए। स्वच्छंद खेल गतिविधियाँ बच्चों को अपनी रुचि प्रदर्शित करने, निर्णय लेने और दूसरों के अधिकार एवं परिप्रेक्ष्य को समझने के अवसर देते हैं। ये गतिविधियाँ सामाजिक रूप से वांछनीय व्यवहार (प्रो–सोशल बिहेवियर), जैसे अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, साझा करना, दूसरों की मदद करना, अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानना तथा संवदेनशील होना एवं तदानुभूति के विकास में सहयोग करती हैं। भोजन का समय और शौच जाने के लिए छोटे–छोटे अवकाश आदि जैसे प्रावधान स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों के बनने में मदद करते हैं, जैसे हाथ धोना, दाँतों की साफ–सफाई, पोषक आहार लेना, चबा–चबाकर खाना, स्वच्छ जल पीना, अपने आस–पास के परिवेश को साफ रखना आदि। शिक्षक सुनिश्चित करें कि बच्चों को स्वच्छंद एवं सुरक्षित बाह्य एवं अंदर खेले जाने वाले खेलों में संलग्न करने के लिए पर्याप्त, आसानी से उपलब्ध, सुरक्षित, आयु उपयुक्त एवं साफ–सुथरे उपकरण/सामग्री मिले। अभिभावकों और बच्चों के साथ काम करने वाले अन्य लोगों की मदद से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त बदलाव किए जा सकते हैं। शिक्षक की भूमिका एक योजनाकार और सुगमकर्ता की होनी चाहिए। वे एक संतुलित कार्यक्रम की योजना बनाएँ जो बच्चों की अल्प अवधि तक ध्यानकेंद्रित करने की क्षमता और बच्चों के खेलने–कूदने की जरूरत के अनुरूप हो। इसके साथ ही कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार लचीलेपन का भी प्रावधान हो। शिक्षक को पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों और लक्ष्यों को ध्यान में रखकर आकर्षक और रुचिकर गतिविधियाँ बनानी चाहिए एवं वातावरण ऐसा हो जो बच्चों को सामग्री दूसरे बच्चों के साथ साझा करने तथा शिक्षक के साथ काम करने के लिए प्रेरित करे जिससे बच्चे उनमें दूसरे बच्चों और शिक्षक के साथ मिलकर काम कर सकें ।

लक्ष्य 2: बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनें

तीन वर्ष की आयु वाले बच्चे जब पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेते हैं तो आमतौर पर वे एकभाषी परिवेश से आते हैं। वे अपने घर की भाषा में मौखिक रूप से अपनी पसंद और नापसंद तथा आवश्यकताओं को जाहिर करने की क्षमता रखते हैं जो उनके विद्यालय की भी भाषा होती है।

कुछ शिक्षित परिवारों में बच्चों को शैशवास्था (0–2 वर्ष) से ही पुस्तकों को देखने, कहानी सुनने, दूसरों को पढ़ते हुए देखने के अवसर मिल जाते हैं। पूर्व–प्राथमिक विद्यालय की पाठ्यचर्या इस प्रकार की हो कि वह बच्चों के इन सभी आरंभिक अनुभवों और बच्चों के संप्रेषण कौशलों को बढ़ावा दे, जिससे बच्चे अपने विचार और अपनी भावनाएँ मौखिक रूप से साझा कर सकें या अपने अनुभवों का अधिक प्रभावशाली तरीके से वर्णन कर सकें। यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे सूचनाएँ प्राप्त और साझा कर सकें तथा समीक्षात्मक व सृजनात्मक चिंतन जैसे उच्चस्तरीय कौशलों का विकास कर पाये। धीरे–धीरे वे उस भाषा में समझ के साथ पढ़ना और लिखना भी सीख लेते हैं। हालाँकि, इस प्रकार की स्थिति उन्हीं पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में संभव होगी जहाँ बच्चों को निर्देश देने एवं उनसे संवाद करने की भाषा (माध्यम) वही होगी जो उनके घर में बोली जाती है, अर्थात् वह भाषा जिसमें बच्चे को पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश के समय किसी प्रकार की दक्षता पहले से ही प्राप्त थी। यदि हम अपने देश के बहुभाषी संदर्भ पर दृष्टि डालें तो पता चलेगा कि बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जिनके घर की भाषा विद्यालय या पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में पठन–पाठन के माध्यम की भाषा से भिन्न है। अंग्रेजी माध्यम वाले पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है जहाँ अधिकतर वे बच्चे आ रहे हैं जिनके घर में अंग्रेजी से परिचय या तो न के बराबर है या फिर बहुत ही कम है। बच्चों में भाषा के मौखिक स्वरूप (बोलने के कौशल) को सुदृढ़ किए बिना पढ़ना–लिखना यान्त्रिक तरीके से होता है। शब्द के अक्षरों को अलग–अलग करके पढ़ना सीख पाते हैं लेकिन इस प्रकार के पठन में वे अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते अर्थात् समझ के साथ नहीं पढ़ पाते हैं। चूंकि विद्यालय के सभी विषयों में

भाषा प्रमुख है, इसलिए शुरुआती दौर की इस कमी का नकारात्मक प्रभाव बच्चों के बाद के प्रदर्शन पर पड़ता है। इस चुनौती के साथ–साथ एक और चुनौती यह है कि हमारे पास एक बहुत बड़ी संख्या में वे बच्चे आते हैं जो अपने परिवार के पहले सदस्य हैं जिन्हें विद्यालय आने का अवसर मिला है (प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी) और जिनके घर में पढ़ाई –लिखाई का वातावरण नहीं है। ऐसा भी हो सकता है कि उन्होंने अपने घर में कभी किताबें न देखी हों या फिर अपने घर में कभी किसी को पढ़ते हुए भी न देखा हो। इस तरह के परिवेश से आने वाले बच्चों को जब विद्यालय/पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में साक्षरता संबंधी गतिविधियों से जोड़ा जाता है तो वे बच्चे इन अनुभवों के साथ सार्थक व अर्थपूर्ण तरीके से नहीं जुड़ पाते हैं। भाषा और साक्षरता की शिक्षण प्रणाली की रणनीतियों के पुनरावलोकन एवं बदलाव की आवश्यकता होगी। इन चुनौतियों को देखते हुए भाषा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है। यह बहुत ही जरूरी है कि बच्चों को पूर्व–प्राथमिक विद्यालय की भाषा में सहजता और दक्षता के साथ मौखिक रूप से संप्रेषण करना सिखाया जाए। उन्हें मुद्रित और लिखित सामग्री से परिचित करवाया जाए, परिचित संदर्भों में पठन एवं लेखन अर्थपूर्ण ढंग से करने योग्य बनाया जाए। पुस्तकों में और पढ़ना सीखने में रुचि विकसित की जाए। यदि पूर्व–प्राथमिक अवस्था में ही भाषा के वाचन, पठन और लेखन कौशलों की मजबूत नींव रखी जाए तो यह बच्चों के शुरुआती दौर के सीखने का सबसे बड़ा प्रमाण चिह्न होगा। इसके अतिरिक्त, ध्वनियों को पहचानना और ध्वनि एवं दृश्य में संबंध स्थापित करने जैसे कौशलों के विकास के साथ सुगमता से पठन सामग्री को पढ़ना सीखने में बच्चों की मदद करना भी बहुत महत्वपूर्ण है।

उपयुक्त अनुभव और अवसर सुनिश्चित करना – शिक्षण प्रणाली में उपयुक्त प्रकार का बदलाव यह माँग करता है कि शिक्षक साक्षरता को अलग से संबोधित न करें, बल्कि पठन–लेखन सिखाने का काम कक्षा में मौखिक भाषा कौशल के विकास के साथ–साथ ही करें। इन दोनों कौशलों (पठन–लेखन) को एक–दूसरे के पूरक के रूप में देखना चाहिए। इन दोनों कौशलों की पारस्परिक निर्भरता को समझना जरूरी है क्योंकि भाषाई दक्षता आसानी से और समझ (बोध) के साथ पठन कौशल को सुगम बनाती है, बच्चे को पठन के जितने अधिक अवसर दिए जाएँगे, बच्चे का शब्द–भंडार उतना ही समृद्ध होगा। विद्यालय की भाषा के साथ–साथ बच्चों की भाषा का उपयोग करते हुए द्विभाषी पद्धति अपनाने से अर्थबोध और अधिगम में आसानी रहती है। विद्यालय की भाषा की ग्राह्यता भी सुगम हो जाती है। बच्चे प्रभावशाली तरीके से संप्रेषण करना सीख लेते हैं, बशर्ते उन्हें सुविधाजनक, गैर–आलोचनात्मक और तनावमुक्त वातावरण में दूसरे बच्चों तथा वयस्कों के साथ बात करने–सुनने, हावभाव के साथ अपने अनुभव साझा करने के भरपूर अवसर दिए जाएँ। इसलिए अध्यापकों को चाहिए कि वे द्विभाषिक या बहुभाषिक परिवेश कक्षा में बनाएँ जिससे सभी बच्चों को समान अवसर प्राप्त हो। कहानी सुनाना, वार्तालाप, अनुभवों को साझा करना, प्रश्न पूछना और उत्तर देना या किसी कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना। ये अवसर बच्चों के प्रभावशाली वाचन कौशल की नींव मजबूत करेंगे, उनके शब्द–भंडार में वृद्धि करेंगे और अपने आप को अभिव्यक्त करने में आत्मविश्वास पैदा करेंगे। पठन और लेखन सिखाने के आरंभिक दौर में शिक्षक कुछ ऐसी गतिविधियों को आधार बनाएँ, जिनसे बच्चे लेखन के साथ दिन–प्रतिदिन के परिचित कामों को जोड़ सकें, जैसे – खरीददारी करने की सूची बनाना या फिर बच्चों द्वारा बनाई/कही जा रही कहानी को श्यामपट्ट पर लिखते जाना। इससे बच्चों में यह समझ बनेगी कि बोले जा रहे शब्द लिखे भी जा सकते हैं (मुद्रित सामग्री बोली हुई भाषा का ही लिखित स्वरूप है)। बच्चों के चारों ओर मुद्रण समृद्ध परिवेश सुनिश्चित करने, जैसे – शीर्षक लिखना, चित्रों की लेबलिंग करना, निर्देश लिखना या फिर बच्चों के नाम लिखना आदि से उनमें मुद्रण के प्रति जागरूकता विकसित करने में मदद मिलेगी। बच्चों में ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास करने से जुड़ी गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:–

अपने आस–पास की आवाजों को पहचानना और शब्दों में निहित ध्वनियों के स्वरूप (पैटर्न) को पहचानना, शब्दों की शुरू और अंत की ध्वनि की पहचान और चित्रों से मिलान, ध्वनि के साथ अक्षर की सही बनावट की पहचान आदि गतिविधियाँ बाद के चरण में पढ़ना और लिखना सीखने के लिए जरूरी हैं। गतिविधि–क्षेत्र के अनुभव, जैसे कहानी की किताबों को बोलकर–पढ़कर सुनाना या पुस्तक के पृष्ठ उलटना–पलटना बहुत ही अनौपचारिक और आनंददायी होने चाहिए तथा तरह–तरह की पठन सामग्री, जैसे कॉमिक्स, पत्रिकाएँ, कहानियों की किताबें आसानी से सुलभ होनी चाहिए। सस्वर कहानियाँ सुनाने के बाद अगला चरण है कि बच्चे पूरी कक्षा में शिक्षक के साथ–साथ पढ़ें, यह छोटे समूह में या व्यक्तिगत रूप से भी किया जा सकता है। इससे बच्चों में स्वतंत्र रूप से पढ़ने की क्षमता का विकास होगा। अब तक वे प्राथमिक शिक्षा के प्रारंभिक चरण में भी पहुँच चुके होते हैं।

लक्ष्य 3 – बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस–पास के परिवेश से जुड़ना

छोटे बच्चे लोगों के प्रति सबसे अधिक आकर्षित रहते हैं, विशेषकर उनकी देखभाल करने वालों तथा आस–पास के लोगों के प्रति दूसरों के साथ जुड़ने और अपनी भावनाओं को साझा करने की क्षमता बच्चों में सीखने के विशेष अवसर प्रदान करती है। पूर्व–प्राथमिक अवस्था में बच्चे अपने आस–पास की दुनिया को अपने ही परिप्रेक्ष्य से समझना आरंभ कर देते हैं। इस संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है– उनके सामने पाँच पेंसिलें कुछ इस प्रकार से बिखरी हुई हैं कि वे अधिक स्थान घेर रही हैं और दूसरी तरफ पाँच पेंसिलें एकदम सटी हुई रखी हैं। इस तरह वे कम स्थान घेर रही हैं। ऐसी परिस्थिति में बच्चे समझते हैं कि दूसरी स्थिति में पेंसिलों की संख्या कम है, जबकि दोनों स्थितियों में पेंसिलों की संख्या बराबर है। जैसा उन्हें दिखता है, वही उनकी समझ का आधार होता है। अभी संख्या की अवधारणा विकसित होने की अवस्था में है। पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बच्चों को अधिक तार्किक चिंतन की ओर ले जाना है। उनको जैसा वे देख पा रहे हैं, उससे कहीं आगे समझ के आधार पर अवधारणा बनाने के स्तर तक लाने में उनकी मदद करनी है। परिवेश को समझने के लिए एक सुगठित ढाँचे की योजना बनाने की आवश्यकता है जो बच्चों के परिवेश द्वारा, परिवेश के लिए, परिवेश की समझ विकसित करने में बच्चों की मदद करे।

मुख्य अवधारणाएँ और कौशल

प्रत्येक लक्ष्य के अंतर्गत अवधारणाओं या कौशलों को भी रेखांकित किया गया है। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के समग्र विकास के लक्ष्य को केंद्र में रखते हुए जब पाठ्यचर्या संचालित करें तो इन अवधारणाओं और कौशलों पर ध्यान अवश्य दें।

- **प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल एवं गतिविधियों के आयोजन का महत्व**

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ वे युक्तियाँ हैं जिनका उपयोग शिक्षक पाठ्यचर्या क्रियान्वयन के दौरान इस प्रकार से करते हैं कि बच्चे अन्वेषण करके, समस्या समाधान करके और समीक्षात्मक चिंतन के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया से जुड़ते हैं। शैक्षणिक प्रक्रियाओं से तात्पर्य निर्देशन संबंधी ऐसी युक्तियों और तकनीकों से है जिनके कारण 'सीखना' संभव हो पाता है, आरंभिक बाल्यावस्था में शिक्षण प्रणाली की प्रक्रियाओं के मुख्य तीन घटक होते हैंः– खेल, परस्पर संवाद और परिवेश। पाठ्यचर्या क्रियान्वयन के दौरान इन तीनों घटकों को सम्मिलत किया जाना चाहिए।

1. खेल

खेल छोटे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्णघटक है। खेल के द्वारा बच्चे यह प्रदर्शित करते हैं कि वे क्या सीख रहे हैं। पूर्व–प्राथमिक पाठ्यचर्या में खेल को माध्यम के रूप में बहुत ही महत्वपूर्णस्थान देना चाहिए क्योंकि खेल ज्ञान बढ़ाने की दिशा में बच्चों को परिवेश एवं एक–दूसरे के साथ संवाद करने के अवसर देते हैं। मुक्त रूप से खेले जाने वाले खेल, निर्देशित खेल या संरचात्मक खेल हो सकते हैं। मुक्त खेल बच्चों द्वारा स्वयं ही शुरू किए जाते हैं और इन खेलों में वयस्कों की निगरानी व हस्तक्षेप बहुत ही कम होता है जबकि निर्देशित खेल किसी विशेष अधिगम उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षक द्वारा शुरू करवाए जाते हैं।

2. परस्पर संवाद

खेल–आधारित सीखने की प्रक्रियाओं में वयस्क, बच्चों के संगी–साथी और भाई–बहन बहुत ही महत्वपूर्णऔर अभिन्न भूमिका अदा करते हैं। परस्पर संवाद तीन प्रकार के होते हैं– 1. साथियों के साथ, 2. बड़ों के साथ और 3. भिन्न–भिन्न प्रकार की सामग्री/वस्तुओं के साथ। संगी–साथियों के साथ परस्पर संवाद खेल में दूसरे बच्चों को शामिल करना सीखने की दृष्टि से महत्वपूर्णआधार प्रदान करता है, क्योंकि बच्चे अवलोकन करते हैं, एक–दूसरे की नकल/अनुकरण करते हैं और जो भी देखते हैं, उसके आधार पर कुछ नया करते हैं। जब वे दूसरे बच्चों के साथ साझेदारी करते हैं, अपने खेल स्वयं बना लेते हैं। समस्याओं का समाधान ढूँढ़ते है, समन्वयन करते हैं, तब सामाजिक और भावनात्मक कौशलों का अर्जन करते हैं। नियम–आधारित खेल खेलते समय बच्चों को अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी पड़ती है, इस तरह से वे आत्मनियमन करना सीखते हैं।

3. भिन्न–भिन्न प्रकार की सामग्री/वस्तुओं के साथ परस्पर संवाद

बच्चों को मुक्त और निर्देशित खेलों के दौरान विविध प्रकार की सामग्री और वस्तुओं से परस्पर संवाद करने के अवसर प्राप्त होते हैं। यह सुनिश्चित कर लेना बहुत ही जरूरी है कि सामग्री/वस्तुएँ बच्चों की आयु व विकासात्मक स्तर के अनुरूप हो। ये दूसरे बच्चों के साथ मिलकर खेलने और परस्पर संवाद करने, समाधान खोजने और नवाचार करने के अवसर देने वाली हो। गतिविधि क्षेत्र में इस प्रकार की सामग्री हो सकती है, जैसे – क्रेयॉन, गुड़िया, बनावटी फल एवं सब्जियाँ, ब्लॉक, पजल, मनके मोती, मापक कप और चम्मचें, वर्ग (क्यूब), बटन, मापक फीता, वजन मापने वाला यंत्र, डॉक्टर सेट, परिधान संबंधी सामग्री (सजने–सँवरने का सामान), पुस्तकें, मिट्टी इत्यादि। इस प्रकार की सामग्री बच्चों को अभिनय वाले खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। शिक्षक और अभिभावक परस्पर संवादों के माध्यम से बच्चों के पहले से सीखे गए कौशलों के साथ संबंध स्थापित करने में मदद करते हैं।

परिवेश

बच्चे अपने परिवेश के साथ सतत रूप से परस्पर संवाद करते रहते हैं। वे जिस चीज को भी देखते हैं, उसे छूने की अदम्य लालसा उनमें होती है। इसी प्रकार वे सीखते हैं। विविध प्रकार की सामग्री और गतिविधियों के माध्यम से बच्चे वस्तुओं को जोड़–तोड़ करके, प्रश्न पूछकर, अनुमान लगाकर, सामान्यीकरण करके भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश का अन्वेषण करते हैं।

सीखने का परिवेश इस प्रकार का होना चाहिए जो उन्हें अपनी ओर आकर्षित करे, सुरक्षित हो और अनुमान लगाने के मौके देता हो। साथ–ही विकास के अनुरूप विविध प्रकार की सामग्री से सराहना करने, प्रोत्साहित करने और प्रतिक्रिया देने से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित सभी बच्चों में

सकारात्मक छवि बनती है और आत्मविश्वास पैदा होता है। बच्चे सक्रिय और जिज्ञासु शिक्षार्थी होते हैं, इसलिए पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में उनकी सुरक्षा और शिक्षा की व्यवस्था सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य है। छोटे बच्चों के लिए सुरक्षित भौतिक स्थान का सृजन करना चाहिए जिससे उनकी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में मदद हो सके।

गतिविधि क्षेत्रों का महत्त्व

गतिविधि क्षेत्रों में खेलने से बच्चों को अपनी पसंद के अनुसार खेल–क्रिया चुनने और अपनी अभिरुचि को जानने में सहायता मिलती है। ऐसा करना उन्हें सृजन करने के चित्रांकन, अन्वेषण, हस्त–कौशल, नयी कुशलताएँ, सीखने एवं गलतियाँ करके अपनी कार्य शैली में सुधार करने के अवसर प्रदान करता है। साथ–ही जिस क्रिया में वे संलग्न हों, जैसे टावर बनाना, पहेली (जिगसॉ पजल) को हल करना या किसी भूलभुलैया में मार्ग ढूँढ़ना, उनमें उपलब्धि एवं सफलता का अनुभव कराता है। जब बच्चे अन्य बच्चों के साथ खेलना सीखते हैं, सामग्री का उपयोग करने में भाग लेते हैं, साझा करते हैं, बारी–बारी से काम करना सीखते हैं और अन्य बच्चों की गतिविधि समाप्त होने तक प्रतीक्षा करना सीखते हैं, तो यह उनके सामाजिक, भावनात्मक विकास में मदद करता है। वे समय प्रबंधन के साथ आत्म–नियमन भी सीखते हैं। बच्चों का पानी से, रेत से खेलना, जोड़–तोड़ करना स्थूल एवं सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास में सहायता करता है। बच्चे समस्याओं का समाधान करना सीखते हैं, कारण प्रदान करते हैं, नयी सामग्री को खोजते हैं और यह उनके संज्ञानात्मक विकास में सहायक होता है। गुड़िया से खेलने वाले खेल और नाटकीय खेलों जैसे गतिविधि क्षेत्रों में शामिल हुए बच्चों का अवलोकन करने से बच्चों के संदर्भों, जैसे – उनका परिवार, पारस्परिक अंतःक्रिया, रिश्ते, अवरुद्ध और दबी हुई भावनाएँ आदि के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। इस अवलोकन का उपयोग शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है।

गतिविधि क्षेत्र स्थापित करना – बाहरी खेल परिवेश का सृजन

बाहरी खेल के परिवेश का सृजन करते समय बाहरी खेल के विन्यास की आवश्यकता, खेल स्थान का अधिकतम उपयोग करना और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षकों की भूमिका

यह शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वह यह सुनिश्चित करें कि गतिविधि क्षेत्र में बच्चों को उनकी पहल वाले सहज खेल, जो पूर्व नियोजित नहीं हों, उन खेलों के लिए अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। शिक्षक को उपलब्ध स्थान, बच्चों की रुचि और शामिल किए जा रहे विषयों के अनुसार गतिविधि क्षेत्रों को आकर्षक बनाकर कक्षा की व्यवस्था करनी होती है।

बच्चों के विकास में अभिभावकों की भूमिका एवं सहयोग – अभिभावकों को संसाधन के रूप में जोड़ना

पूर्व –प्राथमिक शिक्षक को अभिभावकों का सहयोग निम्नलिखित तरीकों से मिल सकता है:–

- छोटे समूह की गतिविधियों, जैसे रचनात्मक गतिविधियाँ, कहानी कहना, शैक्षिक भ्रमण में बच्चों का साथ देना आदि में एक अतिरिक्त व्यक्ति के रूप में अभिभावक का सहयोग।
- पूर्व–प्राथमिक शिक्षक के अनपुस्थित होने पर अभिभावकों का विकल्प के रूप में सहयोग।
- पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में एकत्रित की गई बेकार की वस्तुओं का दोबारा प्रयोग करने में अभिभावकों का विशिष्ट व्यक्ति के रूप में सहयोग।

- बच्चों के हित के लिए किसी विशेष प्रतिभा एवं कौशल में निपुण अभिभावक सहयोग दे सकते हैं, जैसे – बढ़ई को लकड़ी के खिलौने बनाने के लिए कहा जा सकता है, ऐसी माता जो अच्छा गाती है उसका सहयोग बच्चों को गीत सिखाने में लिया जा सकता है और चित्रकार की सहायता विभिन्न प्रकार के चित्र और अलमारियों आदि को पेंट करने में ली जा सकती है।
- परिवारों की सांस्कृतिक विविधता, जैसे –भोजन, पोशाक, त्योहार आदि की जानकारी साझा करना। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

अभिभावक–शिक्षक संपर्क के अवसर

- आकस्मिक मिलन, जैसे जब अभिभावक अपने बच्चों को छोड़ने या लेने आते हैं।
- अपनी सुविधा के अनुसार महीने में एक बार या तीन माह में एक बार शिक्षक–अभिभावक सभा का आयोजन करना। अभिभावकों के साथ तालमेल बनाने और उनको उनके बच्चों की प्रगति के बारे में सूचित करने के लिए शिक्षक/कार्यकर्ता द्वारा प्रत्येक घर का (जहाँ भी संभव हो) कम–से–कम सत्र में एक बार या तिमाही दौरा।
- बाल मेला या बच्चों का मेला, जो साल में एक बार आयोजित किया जा सकता है जिसमें परिवार को भी आमंत्रित किया जाना चाहिए।
- चित्रों सहित सूचना पत्र।
- छोटे वीडियो कार्यक्रम जो अभिभावकों के साथ तकनीक के विभिन्न तरीकों के माध्यम से साझा किए जा सकें।

समुदाय की भूमिका

पूर्व –प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में समुदाय एक महत्वपूर्ण साझेदार है। समुदाय के सदस्यों की भागीदारी से बच्चों और उनके परिवार को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। यदि समुदाय जागरूक होगा तो ही बच्चों की आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं। समुदाय को निम्नलिखित तरीकों से जागरूक किया जा सकता हैः–

- जागरूकता सृजन कार्यक्रम जिसमें लोकगीत, नुक्कड़ नाटक, कठपुतली का खेल, जत्थे आदि का उपयोग करते हुए छोटे बच्चों के बारे में अक्षमता संबंधी भ्रांतियों को दूर किया जा सकता है।
- पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में समारोह आयोजित करने चाहिए जिसमें समुदाय भाग ले सकें, जैसे – उत्सव मनाना, खेल कार्यक्रम, बाल मेला आदि (कुछ अभिभावक एसे कार्यक्रमों के आयोजन और प्रबंधन में भी मदद कर सकते हैं)। एक बार जब समुदाय पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता को पहचान लेता है तब समुदाय के सदस्यों के बीच पूर्व–प्राथमिक विद्यालय के स्वामित्व की भावना अनिवार्य रूप से विकसित होती है। वेशभूषा, कक्षा की व्यवस्था, समय सारणी/दिनचर्या, पाठ्यचर्या, शैक्षणिक विधियाँ और पद्धतियाँ पूर्व–प्राथमिक कक्षाओं से संयोजित होनी चाहिए।

प्रारंभिक बाल्यावस्था अवधि के दौरान प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षकों का बच्चों की क्षमताओं रुचियों, संस्कृतियों और योग्यताओं के बारे में ज्ञान बढ़ता जाता है। बच्चों के परिवारों से उनका मजबूत संबंध विकसित होता है। जब यह जानकारी प्राथमिक विद्यालयों के अन्य शिक्षकों से साझा की जाती है तब सीखने और विकास के नये अवसरों की योजना इस प्रकार बनाई जा सकती है जो बच्चों की क्षमताओं

रुचियों, संस्कृतियों के अनुरूप हो और बच्चों ने जो पहले सीखा है उसे बढ़ावा देती हो। पूर्व–प्राथमिक से प्राथमिक कक्षाओं की ओर बढ़ने को बच्चों के समग्र अधिगम की सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए।

सहज पारगमन के लिए निरंतरता बनाए रखना

बच्चों के अनुभवों की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कुछ सुझाव दिए गए हैं:–

- पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के सीखने के लिए सीखने के आरंभिक प्रतिफलों को कक्षा 1 के सीखने के प्रति फलों के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- पूर्व–प्राथमिक विद्यालय को इस तरह से योजना बनाने की आवश्यकता है कि पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित सभी बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति लिए अनुकूल बनाया जाए।
- शिक्षकों को यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त लचीलापन देने की आवश्यकता है कि पूर्व–प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के व्यक्तिगत हितों को पूरा किया जाए।
- माता–पिता और परिवार को भी पारगमन कार्यक्रम में शामिल होना चाहिए ताकि बच्चे बेहतर तरीके से समायोजित हो सकें और प्राथमिक विद्यालय को सहजतापूर्वक अपना सकें।
- पूर्व–प्राथमिक और कक्षा 1 और 2 के शिक्षकों को एक साथ प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।
- नयी कक्षा और अनुभवों में परिवर्तन अचानक होने के बजाए क्रमिक होना चाहिए।
- पूर्व–प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को नियमित रूप से समन्वय और संवाद करना चाहिए ताकि वे पूर्व–प्राथमिक से प्राथमिक विद्यालय तक पारगमन के लिए बच्चों को तैयार कर सकें। पूर्व–प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को कक्षा 1 और 2 की कक्षाओं का भ्रमण करना चाहिए ताकि वे वहाँ के आस–पास के भौतिक वातावरण से परिचित हो सकें और शैक्षणिक सत्र शुरू होने से पहले बिना किसी भय के परिवेश के आदि हो जाएँ।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई0सी0सी0ई0) विद्यालय पूर्व शिक्षा केन्द्रित कार्यक्रम हैं जिसका लक्ष्य 3–6 वर्ष तक के बच्चे हैं। ये प्रायः प्राथमिक विद्यालय के भाग हैं। प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखरेख एवं शिक्षा (ई0सी0सी0ई0) का भी यही शैक्षिक आधार है। परंतु देखभाल संबंधी अवयव को शामिल करने से इसका क्षेत्र वृहद हो जाता है। इसमें क्रेच एवं गृह–आधारित अभिभावक शिक्षा के माध्यम से 0–3 वर्ष बड़े बालकों की देखभाल और प्रेरणा देना शामिल हो जाता है।

संविधान अधिनियम, 2001 (86वां संशोधन)

संविधान अधिनियम 2001 (86वां संशोधन) ने संविधान में विभिन्न अनुच्छेदों के तहत बच्चों के हितों को शामिल करने के लिए 0–14 वर्ष तक के बच्चों को दो स्पष्ट वर्गों में विभाजित कर दिया है। अनुच्छेद 21(ए) के पश्चात मौलिक अधिकार के रूप में पुनः स्थापित किया गया है जो इस प्रकार है, "राज्य 6–14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उस ढंग से उपलब्ध कराये जिससे कानून द्वारा इसकी रक्षा की जा सके।" 0–6 वर्ष के बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए संविधान अधिनियम (86वां संशोधन) ने अनुच्छेद 45 (राज्य नीति के नीति–निर्देशक सिद्धान्त) को प्रतिस्थापित किया जिसके अनुसार "राज्य सभी बच्चों के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखरेख तथा शिक्षा के लिए प्रावधान करने का तब तक प्रयास करेगा जब तक कि वे 6 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं कर लेते।

- **विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषा तथा गणितीय कौशल**

परिवार बालक की भाषा सीखने की प्रथम पाठशाला है। तत्पश्चात साथी समूह, विद्यालय और समाज से बच्चे भाषा सीखते हैं। भाषा सीखने का प्रथम चरण श्रवण है। श्रवण कौशल के लिए मस्तिष्क एवं इंद्रियों का समुचित विकास होना अत्यंत आवश्यक है। बच्चे सुनकर ही अनुकरण द्वारा भाषा ज्ञान अर्जित करते हैं। सुनकर, बोलकर, पढ़कर और लिखकर अपनी भाषा कौशलों का विकास करते हैं। बालक की प्रारंभिक शिक्षा उसकी श्रवण शक्ति पर आधारित है। शिक्षक को यह चाहिए कि बच्चों के भाषा शिक्षण के दौरान बोलकर, पढ़कर और लिखकर सिखाया जाए ताकि बच्चों में ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को पहचानने की क्षमता का विकास प्रभावी ढ़ंग से हो सके । बच्चों के प्रारंभिक स्तर स्तर पर भाषा विकास के लिए मातृभाषा के प्रयोग पर बल दिया जाए। बच्चों के भाषा विकास के लिए सस्वर वाचन, धैर्यपूर्वक सुनना, प्रश्न–उत्तर करना, कहानी कहना व सुनना, चित्र वर्णन, वार्तालाप, कविता पाठ, श्रुत लेख, भाषण वाद–विवाद आदि गतिविधियों का आयोजन किया जाए।

गणितीय सोच और तार्किक चिंतन

गणितीय सोच और तार्किक चिंतन संज्ञानात्मक विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्णआयाम है। अर्मूत, नियम आधारित चिंतन की नींव उन गतिविधियों के माध्यम से मजबूत होती है जो बच्चों के लिए अर्थपूर्ण हों। इस स्तर पर गणितीय सोच में वस्तुओं और उनकी मात्रा के साथ–साथ उनके स्थानिक संबंधों की समझ शामिल है। इस स्तर पर वस्तुओं की विशिष्ट विशेषताओं या उनके गुणों की समझ को शामिल नहीं किया गया है। एक बार जब वस्तुओं के स्थान–विशेष के साथ संबंध और संख्या की समझ बन जाती है, तब इस समझ के आधार पर अपेक्षाकृत अधिक अमूर्त अवधारणाओं का विकास किया जाता है। पूर्ण संख्या अवधारणा के लिए मात्रा, आकार, दूरी, लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई के बोध (मात्रा–कम–ज्यादा, दूरी–दूर–पास आदि) से संबंधित ज्ञान इसके बाद अंकगणित और बीजगणित के संख्या बोध, आकृति और स्थान बोध के आधार पर ज्यामितीय समझ का विकास होता है। पूर्व–प्राथमिक पाठ्यचर्या गणितीय संकल्पनाओं के विकास के इस नियम को अनुभव–आधारित शिक्षण प्रणाली युक्तियों के माध्यम से संबोधित करती है। उल्लेखनीय बात यह है कि इन गणितीय अनुभवों में भाषा की महत्वपूर्णभूमिका रहती है।

उपयुक्त अनुभव और अवसर सुनिश्चित करना

संज्ञानात्मक क्षेत्र में बच्चों का अधिगम उनकी पाँचों इन्द्रियों के भरपूर विकास द्वारा होना चाहिए। इसके साथ–ही खोजबीन करने, प्रयोग करने, प्रश्न पूछने जैसे अवसरों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह सब बच्चों के पूर्व ज्ञान और आस–पास के परिवेश से जुड़ा होना चाहिए।

इसके लिए जरूरी है कि शिक्षक की स्वयं की अन्वेषणपरक एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति हो और उसमें इतना धैर्य भी हो जिससे कि वह बच्चों को प्रयोग एवं खोजबीन करने के आनंद का अनुभव लेने दे तथा इन अनुभवों के माध्यम से सीखने की अनुमति दे सके। शिक्षक को बच्चों की भौगोलिक और सामाजिक पृष्ठभूमि की भी समझ होनी चाहिए जिससे वह नये ज्ञान और अनुभवों को इससे जोड़ सकें। आदर्श स्थिति तो यह है कि शिक्षक द्वारा बच्चों को कक्षा के बाहर घुमाने के लिए ले जाना चाहिए और बाहर की दुनिया को प्रत्यक्ष रूप से समझने में उनकी मदद करनी चाहिए। जहाँ इस तरह की व्यवस्था संभव नहीं हो सकती, वहाँ शिक्षक की ओर से जो सर्वोत्तम किया जा सकता है, वह यह है कि शिक्षक ऐसी गतिविधियाँ सृजित करें जिनके द्वारा कक्षाओं के भीतर ही अवधारणाओं को अनभुव करने के अवसर दिए जा सकें। उदाहरण के तौर पर, वह कक्षा में भिन्न–भिन्न प्रकार की सब्जियाँ और फल लेकर रख

सकते हैं। बच्चों को चखने, सूँघने और छूने के मौके दें फिर उनके अनुभव सुनें और उन पर बातचीत करें। शिक्षक बच्चों को कक्षा में छोटे–छोटे गमले लाने के लिए कह सकते हैं, इस तरह से वह बच्चों को बीज से अंकुरण की प्रक्रिया का अनुभव कक्षा में ही दे सकते हैं। इसी प्रकार कुछ और गतिविधियाँ की जा सकती हैं, जैसे अभिभावकों से पूछ–पूछकर अपने वंशवृक्ष का चित्र बनाना। इससे परिवार की अवधारणा का बोध तो होगा ही, साथ ही सामाजिक संसार की भी समझ बेहतर तरीके से होगी। प्रत्येक चरण में अधिगम के आधारभूत सिद्धांत 'ज्ञात से अज्ञात की ओर', 'सरल से जटिल की ओर' और 'परिचित से अपरिचित की ओर' का ही पालन करना चाहिए। यह बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ करता है और सही दिशा प्रदान करता है। शिक्षक निर्देशित गतिविधियों के रूप में इन गतिविधियों और अनुभवों को इस प्रकार तैयार करें कि जिनमें ब्लॉक निर्माण, जोड़–तोड़ करने के हस्तकौशल, डॉल कार्नर, पुस्तक कार्नर के खेल हों, जहाँ उन्हें केंद्र के बाहर और भीतर अपने सहपाठियों तथा दूसरे लोगों के साथ आपस में बातचीत करने के अवसर मिले। इससे उनकी अवधारणाएँ मजबूत और परिष्कृत होंगी। प्रायः ऐसा देखा गया है कि बच्चों में गणित के प्रति भय या अरुचि पैदा हो जाती है क्योंकि उनमें गणितीय अवधारणाओं की समझ परिवेश के साथ संबंध नहीं जोड़ पाती। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पूर्व संख्या अवधारणा और संख्या बोध इस तरह से विकसित किया जाए कि बच्चे प्रतिदिन के क्रियाकलापों को परिवेश से जोड़ सकें। इस तरह से उन्हें गणित सीखने में सार्थकता का बोध होगा। परिणामस्वरूप सीखने में तो बेहतरी आएगी ही, साथ–ही गणित सीखने के प्रति रुचि भी विकसित होगी। गणितीय अवधाणाओं और शब्द सामर्थ्य सिखाने व उनके सुदृढ़ीकरण के लिए कहानी, शिशुगीत और कुछ दूसरी खेल–आधारित गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक पूर्व संख्या अवधारणाओं को आधारभूत अनुभव के रूप में सिखाने के लिए निर्देशित गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग कर सकते हैं। इन निर्देशित गतिविधियों में बहुत से संज्ञानात्मक कौशल शामिल होने चाहिए, जैसे – मिलान करना, वर्गीकरण और क्रम में रखना। ये कौशल पूर्व संख्या अवधारणाओं को सीखने का आधार प्रदान करते हैं। उदाहरण के तौर पर, क्रम के अनुसार रखने वाली गतिविधि के शुरू में बच्चों को कहा जाए कि वे वस्तु को आकार या लंबाई के संदर्भ में तीन के स्तर तक क्रम में लगाएँ, उसके बाद पाँच के क्रम में लगाने के लिए कहें और धीरे–धीरे उसे जटिल बनाते जाएँ। यह प्रक्रिया बच्चों को आगे की संख्याओं और आकृतियों को सीखने का उपयुक्त आधार प्रदान करेगी। इसके बाद भी इसी तरह की सरल प्रक्रियाओं की योजना बनाएँ और संख्या आकृतियों की अवधारणाओं को बच्चों के आस–पास के परिवेश से जोड़कर सीखने के मौके दें।

मूल्यांकन

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों का वर्णन करें।
2. ''प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा ही शिक्षण का माध्यम होना चाहिए।'' व्याख्या कीजिए।
3. प्रारंभिक स्तर पर गणितीय सोच और तार्किक चिंतन के विकास के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण की क्या उपयोगिता है?

इकाई–4

बच्चे की प्रगति का आकलन

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप
- प्रारंभिक बाल्यावस्था में आकलन के महत्व एवं स्वरूप को समझ पायेंगें।
- विकास के विभिन्न आयाम का आकलन कर पायेंगें ।
- आकलन के विभिन्न तरीकों की समझ बना पायेंगें।
- आकलन में घर एवं विद्यालय के बीच के अंतर्संबंध को समझ पायेंगें।
- आकलन की प्रक्रियाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेशन के महत्व को समझ पायेंगें।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में बच्चे की प्रगति को जानने से पहले बच्चे की क्षमताओं का सही आकलन करना शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण है। जब शिक्षक प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का सही अनुमान लगाने का प्रयास करते है तभी वे प्रत्येक बच्चे के सीखने के लिए कक्षा कक्ष में सर्वोपयुक्त गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन कर सकते हैं। इन गतिविधियों का उपयोग बच्चों के विकास के लिए उन्हें बेहतर वातावरण एवं अवसर उपलब्ध कराने के लिए होता है। यहाँ इस बात का पता लगाना महत्वपूर्ण है कि इन गतिविधियों ने उद्देश्यों की प्राप्ति में कितनी सफलता पाई है। साथ–ही, इससे बच्चे के विकास के आयामों को कितनी दृढता प्राप्त हुई है। बच्चे की प्रगति का आकलन कर ही शिक्षक, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त सकता है।

सीखने वाले ने कितना सीखा है एवं किस गहराई के साथ सीखा है इसका पता आकलन से ही हो सकता है। आकलन सीखी हुई समझ की परतें खोलता है। आकलन करते समय हम शिक्षक कुछ बातो को ध्यान में रखें:–

- आकलन से सीखने की क्षमता का पता चलता है।
- आकलन निर्देशों के साथ–साथ एवं लगातार चलता रहता है।
- आकलन कई संदर्भ में होना चाहिए। आकलन से पहले उनके विभिन्न रूपों और संदर्भो की समझ जरूरी है।
- वह बच्चे के स्तर के अनुकूल हो।
- आकलन करते समय विद्यार्थियों की प्रगति की तुलना उसके पहले कुछ समय तक हुई प्रगति से करे, न की अन्य बच्चों से।
- उनकी प्रगति की तुलना उनके उम्र के सापेक्ष हो।

हम जानते हैं कि आकलन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया भी है। यह सीखने–सिखाने को दिशा प्रदान करती है। बाल केन्द्रित शिक्षा का यह अभिन्न अंग है। आकलन के माध्यम से शिक्षक/शिक्षिकाएँ विद्यार्थियों की प्रतिभाओं और जरूरतों को समझ सकते हैं और आगामी कार्य हेतु उचित निर्णयों पर पहुँच सकते हैं। अभिभावकों एवं समुदायों के साथ शैक्षणिक विमर्श का विस्तार कर हम आकलन को और ज्यादा प्रभावी बना सकते हैं। अभिभावक अपने बच्चें की प्रगति जानने के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं। यही आधार उनके साथ सार्थक संवाद स्थापित करने में आपकी मदद कर सकती है। फिर जरूरी है कि मूल्यांकन के पुराने पारंपरिक तरीके और नजरिये को हम बदले।

इसको एक **केस स्टडी** के माध्यम से समझ सकते हैंः—

एक छोटा सा गाँव है। वहॉ 5 वर्ष की एक लड़की नाजिया रहती है। वह बगल के गाँव में स्थित एक विद्यालय में पढ़ने जाती है। उसी गाँव में रामू काका से उसकी अच्छी जमती है। एक दिन बात—बात में रामू काका नाजिया से 1—50 तक गिनती करने को बोलते है। पहले वह थोड़ा सकुचायी, फिर अँगुलियों की मदद से अटकते हुए दस तक मुश्किल से गिन सकी, फिर सोचने लगी।
इससे पहले रामू काका नाजिया से अन्य कई प्रश्न पूछ चुके थे। जैसे जंगली जानवरों के नाम, फलों के नाम, A B C D .... आदि। तभी बगल से उसकी काकी मोहनिया उधर से गुजरी। (वह इसी गाँव के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका है।) वह देखती है कि नाजिया गंभीर हैं। चेहरे पर पूरा स्याह। वह तुरंत परिस्थिति को भाँप जाती है। यही नाजिया रोज अपनी काकी को कई कविताएँ, गीत, खेलगीत, विभिन्न जानवरों, पक्षियों की ढेरों नकल कर घर में सबको हँसाती रहती है। फिर काकी ने उसे विभिन्न जीव—जन्तुओं के नकल करने को कहा वह तुरंत हँसते—हँसते ढेरों की नकल शुरू कर दी। फिर उसने एक गीत सुनाया —

पाँच छोटी चिड़ियाँ खाती थी अनार
एक चिड़िया उड़ गई बाकी बचे चार
चार छोटी चिड़ियाँ, खाती थी अनार
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी बचे तीन
तीन छोटी...
एक चिड़िया...दो
दो...
एक चिड़िया...एक
एक छोटी चिड़िया खाती थी अनार
एक चिड़िया उड़ गई बाकी बचे कुछ नही

फिर वह काकी के साथ हँसते, झूमते घर की ओर चल पड़ी।

इस प्रकार प्रारंभिक बाल्यावस्था में आकलन के बारे में अभिभावक एवं समुदायों को समझ बनाना उतना ही जरूरी है जितना एक शिक्षक एवं शिक्षा व्यवस्था को। अतः आकलन मात्र बच्चे की प्रगति की पैमाइश नहीं है, बल्कि सीखने—सिखाने का एक माध्यम भी है।

हमें इस संदर्भ में **सतत व्यापक मूल्यांकन** को समझना होगा। **सतत** से तात्पर्य कक्षा कक्ष में निरन्तर सीखने की प्रक्रिया है। इसमें बच्चों की अभिरूचियों एव जरूरतो के अनुसार बदलाव होता रहता है। इसी लिए शिक्षक को उनकी बदलती अभिरूचियों एवं जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कक्षा–कक्ष की रणनीतियों में बदलाव करना जरूरी हो जाता है। **व्यापकता** से तात्पर्य बच्चे के व्यक्तित्व से संबंधित विविध पहलु–शारीरिक स्वास्थ्य, व्यवहार, कल्पनाशीलता, रचनाशीलता, आदि का हर संभव विकास हो सके। साथ–ही, पाठ्यचर्या के संज्ञानात्मक पक्षों के संदर्भ में भी आकलन से जुड़े। इसके लिए हम उनके अनुभव आधारित अर्जित ज्ञान का अनुप्रयोग विभिन्न संदर्भो में देखने के मौके ढूढे। इसके लिए सीखने–सिखाने की विभिन्न प्रक्रियाओं को समकालीन संदर्भ से जोड़कर देखना होगा। सीखने–सिखाने की गतिविधियों को भी इन्हीं संदर्भ से जोड़ते हुए नियोजित करना होगा।

इस प्रकार, हम आकलन के जरिए बच्चों की अभिरूचियों, सीखने की शैलियों एवं जरूरतों को सही मायनों में पहचान सकते हैं। साथ ही, सतत रूप से हमें सटीक निर्णयों एवं योजनाओं तक पहुंचने में मदद मिल सकती है।

- **प्रारंभिक वर्षों में विकास के विभिन्न आयाम एवं अधिगम**

सामान्यतः प्रारंभिक बाल्यावस्था में विकास को मूलतः **छह आयामों** में बाँटा गया हैं।

1. शारीरिक स्वास्थ्य एवं गत्यात्मक विकास

- वृहद् गत्यात्मक मांसपेशियों के सामंजस्य और नियंत्रण का विकास।
- लघु गत्यात्मक मांसपेशियों की मजबूती एवं सामंजस्य का विकास।
- स्थान एवं दिशा के समुचित ज्ञान के साथ शरीर के उपयोग का प्रदर्शन।
- निपुणता के साथ कोमल मांसपेशियों का सामंजस्य, आँख और हाथ का सामंजस्य।
- संतुलन और शारीरिक सामंजस्य के ज्ञान का विकास।
- विविध प्रकार के भोजन की पहचान एवं भोजन की स्वस्थ आदतों का प्रदर्शन।
- स्वस्थ आदतों, व्यक्तिगत ध्यान एवं स्वच्छता का प्रदर्शन।

2. भाषा विकास

- सुनने और समझने के कौशलों का विकास।
- ग्रहणशील और अभिव्यक्तिपरक सम्प्रेषण–कौशल का उपयोग।
- प्रभावकारी, शाब्दिक, वाचिक और सांकेतिक सम्प्रेषण–कौशल का विकास।
- शब्दावली का विकास और विविध उद्देश्यों के लिए भाषा का प्रयोग।
- प्रारंभिक साक्षरता कौशलों का प्रदर्शन और पढ़ने की रुचि। बच्चों को पढ़ने और लिखने के लिए तैयार करना जैसे – ध्वनियों की पहचान और उनमें अंतर करना, ध्वनि जागरूकता, छपी हुई सामग्री के प्रति जागरूकता और अवधारणाएं, वर्णों की पहचान, वर्ण–ध्वनि सह–सम्बन्ध, विखण्डीकरण, शब्द एवं वाक्य निर्माण और प्रारंभिक लेखन।
- लिखने में रुचि और क्षमता का प्रदर्शन।
- कक्षा विनिमय की भाषा की आरंभिक दक्षता प्राप्त करते समय मातृभाषा की दक्षता का विकास।

3. संज्ञानात्मक विकास

- संख्या–पूर्व एवं संख्या की अवधारणा तथा संक्रियाओं सहित विभिन्न अवधारणाओं का विकास(तुलना, वर्गीकरण, श्रेणी की समझ तथा स्थान, मात्रा, लंबाई, आयतन, एक–एक की संगत, गणना अदि से सम्बंधित ज्ञान एवं कौशल)।
- पैटर्न का अनुमान एवं माप का आकलन, आँकड़े की समझ।
- क्रमिक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, अवलोकन, तर्क एवं समस्या समाधान से सम्बंधित कौशलों का विकास।
- चीजों को उलट–पलट कर, प्रश्न पूछकर, अनुमान लगाकर तथा सामान्यीकरण करके भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण का अन्वेषण।
- भूत, वर्त्तमान और भविष्य में होने वाली घटनाओं में अंतर करना।
- व्यक्ति, स्थान एवं क्षेत्र के बीच संबंध का ज्ञान विकसित करना।

4. वैयक्तिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास

- आत्म–बोध, स्व–नियंत्रण, जीवन कौशल/स्व–सहायता कौशल का विकास।
- नये अनुभव एवं अधिगम के प्रति उत्सुकता एवं पहल करने की दक्षता का विकास।
- स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता के भाव का विकास।
- क्षमताओं और प्राथमिकताओं के प्रति जागरूकता, लोगों में समानता एवम विभिन्नता की समझ तथा व्यवहार एवं कार्य के प्रति जागरूकता का प्रदर्शन।
- प्रासंगिक एवं यथोचित आदत–निर्माण का प्रदर्शन, ध्यान–काल में वृद्धि तथा दैनिक गतिविधियों में संलग्नता एवं दृढ़ता।
- समकक्षों, परिवार, शिक्षक एवं समुदाय के प्रति आदर भाव के साथ अंतर्वैयक्तिक कौशलों का विकास।
- सहयोग की भावना, दया, सामाजिक संबंध, समूह में अंतःक्रिया, दूसरों की सहायता की भावना, भावनाओं की अभिव्यक्ति एवं दूसरे की भावनाओं के प्रति आदरभाव का प्रदर्शन।
- अनुकूलन एवं भावनाओं पर नियंत्रण की क्षमता का विकास।

5. संवेदी एवं ग्रहणशीलता का विकास

- गति को निर्देशित करने एवं चीजों को पहचानने के लिए विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों (देखना, सुनना, महसूस करना, स्वाद लेना, सूँघना) के उपयोग का प्रदर्शन।
- स्थान, दिशा, दूरी, मात्रा आदि के प्रति जागरूकता ।

6. रचनात्मक एवं सौन्दर्य–बोध का विकास

- चित्रांकन, मिट्टी के कार्य तथा कला के दूसरे रूपों में वस्तुओं, घटनाओं एवं विचारों का चित्रण।
- संगीत तथा गति के लिए प्रवृत्ति, आनन्द और अभिव्यक्ति का प्रदर्शन।

बच्चों की अलग–अलग आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकास के सभी आयामों को समेटते हुए अन्तर्सम्बंधित गतिविधियों के आयोजन के लिए समग्र विकास का दृष्टिकोण अति आवश्यक है।

(साभारः राष्ट्रीय ई.सी.सी.ई. पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2014), महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षक के मॉड्यूल जैसे चहक आदि में भी विकास के इन्हीं छह आयामों को लिया गया है।
विकास के विभिन्न आयामों के तहत बच्चों में विकसित हो रहे कौशलों को भी हमें समझना जरूरी है। कौशलों को हम चरणबद्ध तरीके से इस रूप में रेखांकित कर सकते है।

3 से 6 वर्ष के बच्चों की कुछ सामान्य विकासात्मक विशेषताएं

3–4 वर्ष के बच्चे	4–5 वर्ष के बच्चे	5–6 वर्ष के बच्चे
वृहत और कोमल मांसपेशियों खासकर अंगुलियों की मांसपेशियों पर अपर्याप्त नियंत्रण	शारीरिक गतिविधि पर बेहतर नियंत्रण।	मांसपेशियों पर अच्छा नियंत्रण, गति के लिए अधिक सक्षम, अनेक गत्यात्मक कौशलों में सक्षम।
कपड़े पहनने, साफ–सफाई, जूते के फीते बांधने आदि के लिए दूसरों पर आश्रित।	अधिक आत्मविश्वास।	अधिक आत्मविश्वास और अपनी आवश्यकताओं पर ध्यान रखने में सक्षम।
व्यस्कों से अधिक संपर्क और व्यक्तिगत ध्यान की चाह।	दोस्तों के साथ अधिक मिलना–जुलना, व्यस्क से अधिक बातचीत करते रहने की प्रवृत्ति।	दोस्तों की संगति की इच्छा तथा व्यस्कों के ध्यान की कम आवश्यकता।
आसानी से दूसरों की नक़ल एवं अनुसरण करने के लिए प्रवृत्त होना।	थोड़ा अधिक व्यक्तिपरक एवं हठधर्मी होने की प्रवृत्ति।	और अधिक स्वतंत्र रहने की प्रवृत्ति तथा व्यवहार में हठधर्मिता।
अकेले या दूसरे बच्चों के साथ खेलना पसन्द, आसानी से सहयोग करने का ज्ञान नहीं।	सहयोग में आनन्द, दूसरे बच्चों के साथ खेलना और साझा करने एवं मदद करने में सक्षम, फिर भी प्रतियोगिता की भावना की समझ नहीं।	नियम के साथ आसानी से समूह में खेलना और समझना, प्रतियोगिता की भावना से प्रेरित।
सक्रिय किन्तु आक्रामक नहीं।	उत्साह, सक्रियता एवं ऊर्जा से भरा हुआ अधिक आक्रामक व्यवहार का प्रदर्शन।	लगातार सक्रिय, ऊर्जावान और आक्रामक रहना।
छोटे–छोटे सरल वाक्यों की समझ और एक समय एक या दो निर्देशों का पालन, सीमित शब्दावली।	जटिल वाक्यों की अधिक समझ और एक बार में दो या तीन निर्देशों का पालन, अधिक प्रभावकारी ढंग से अभिव्यक्ति में सक्षम।	जटिल निर्देशों का पालन, अधिक शब्दावली, विचारों की दक्षतापूर्वक अभिव्यक्ति।
लगभग 5–7 मिनट का छोटा ध्यान–काल।	रुचि के कार्यों में तुलनात्मक रूप से थोड़ा लम्बा लगभग 10–15 मिनट का ध्यान–काल	थोड़े अधिक लंबे समय के लिए किसी गतिविधि के लिए बैठना।

(साभारः विनिता कौल, अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन प्रोग्राम)

इस प्रकार आकलन की रणनीति बनाते समय हमें बच्चों के विकास के बहुआयामी पहलुओं एवं कौशलों को ध्यान में रखना बेहद जरूरी है। साथ ही साथ उनकी पृष्ठभूमि एवं क्षमता को भी ध्यान में रखना जरूरी है।

इन आयामों के बारे में इकाई–2 में हम विस्तार से पढ़ चुके है कि हर बच्चा अपने आप में अलग होता है व विशेष क्षमताएँ लिए हुए होता हैं जिन्हें आगे और विकसित किया जा सकता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा केन्द्र बच्चों की इन क्षमताओं व भिन्नताओं का सम्मान करता है एवं उनके शारीरिक, सामाजिक, भौतिक, भावनात्मक विकास को सुनिश्चित करता है। अतः बच्चों को शिक्षा देने का उद्देश्य, उन्हें प्रारम्भिक बाल्यावस्था में समग्र रूप से विकसित होने में सहायता करना एवं उन्हें विकास के स्तर को प्राप्त करने में हर सम्भव सहायता प्रदान करना है। यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम इन अंतःसम्बन्धित विकास के आयामों को विभिन्न गतिविधियों की सहायता से विकसित करने हेतु समग्रता में सम्बोधित करे। प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्षों के दौरान विद्यालय में शिक्षकों द्वारा की जाने वाली

विभिन्न गतिविधियों के आयोजन एवं योजना निर्माण में विकास के विभिन्न आयामों को ध्यान में रखा जाना अपेक्षित है।

आँगनबाड़ी कार्यकर्ता/शिक्षक इन आयामों को ध्यान में रखते हुए मासिक या साप्ताहिक योजना का निर्माण कर सकता है। यहाँ साप्ताहिक योजना का एक प्रारूप दिया जा रहा है।

साप्ताहिक योजना नमूना

समय	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
30 मि.	सामूहिक कार्य– बालगीत, कविता गायन (भाषा विकास) व्यायाम/खेल (शारीरिक विकास)					
शारीरिक स्वास्थ्य एवं गत्यात्मक विकास सूक्ष्म मांसपेशियों के विकास हेतु क्रिया (20 से 30 मिनट)	पेड़–पौधों के चित्र बनाना एवं रंग भरना	पत्तों को कागज के नीचे रख कर ट्रेस करना।	पत्तों को आपस में पिरोकर मन पसंद आकार बनाना जैसे प्लेट, चिड़िया, बिल्ली आदि।	पत्तों को लकड़ी की बारीक सींक में पिरोकर माला या फूल या अपने मन पसंद आकार बनाना।	स्लेट या कागज़ पर पत्तों को ट्रेस करके पत्ते का आकार बनाना एवं उस में रंग भरना।	
बाहरी खेल (मुक्त/संरचित): 15 से 20 मिनट	संरचित खेल– कार्यकर्ता बच्चों को बाहर मैदान में ले जाकर निर्देशानुसार दौड़ना, कूदना, उछलना जैसी क्रियाएँ करवा सकते हैं।	संरचित खेल–बच्चों को टायर की मदद से विभिन्न क्रियाएँ करवाना जैसे टायर के ऊपर से चलना, टायर के अन्दर से निकलना, टेढ़ी–मेढ़ी लकीरों पर चलना	मुक्त खेल–बच्चों को झूला, फिसल–पट्टी आदि पर अपनी इच्छा के अनुसार खेलने देना।	संरचित खेल–बच्चों को बॉल फेंकने या पकड़ने सम्बन्धित क्रियाएँ या रस्सी खींचने सम्बन्धित क्रियाएँ करवाना।	मुक्त खेल–गुडड़े–गुड़ियों या अन्य पुराने अनुपयोगी सामग्री से खेलना।	संरचित खेल–रस्सी से क्रियाएँ जैसे रस्सी के ऊपर से कूदना, रस्सी के नीचे से निकलना, रस्सी के ऊपर से चलना, रस्सी खींचना आदि।
भाषा विकास कहानी सुनाना (15 से 20 मिनट)	कार्यकर्ता द्वारा कठपुतली से कहानी सुनाना एवं प्रश्न पूछना।	कार्यकर्ता द्वारा चित्र की सहायता से कहानी सुनाना एवं प्रश्न	कार्यकर्ता द्वारा पिछले दिन सुनाई गई कहानी को पुनः सुनाना एवं मुख्य	बच्चों से कहानी सुनना।	कार्यकर्ता द्वारा हाव–भाव से कहानी सुनाना एवं कहानी की मुख्य घटनाओं को बच्चों से सुनना।	कार्यकर्ता द्वारा कहानी सुनाना एवं प्रश्न पूछना।

		पूछना।	घटनाओं को क्रम से सुनना।			
संज्ञानात्मक विकास (15 से 20 मिनट)			स्पर्श इन्द्रिय खुरदुरा एवं मुलायम पत्तों को छूकर पहचानना ।	सूँघने की इंद्रिय–पत्तों को सूँघ कर पहचानना जैसे तुलसी, नींबू, गुलाब, गेंदा आदि।	अलग–अलग आकार के पत्तों को दिखा कर उसमें अन्तर खोजने में मदद करना।	अलग–अलग आकार के पत्तों को दिखा कर उसमें अन्तर खोजने में मदद करना।
संज्ञानात्मक (20 से 25 मिनट)	रंगों की अवधारणा हेतु क्रिया जैसे लाल, पीला, नारंगी, हरा, काला आदि रंगों की पट्टियाँ या गुटके दिखा कर नाम पूछना एवं आस–पास की अन्य चीजों से मिलान करना।	आस–पास उपलब्ध फूलों को दिखा कर उनके रंग पर बातचीत करना एवं आस–पास की अन्य चीजों से उस रंग का मिलान करना।	पत्तों को आकार के आधार पर वर्गीकृत करना जैसे छोटे और बड़े।	अंक अवधारणा सम्बन्धित कार्य जैसे पत्तों को गिनना।	पेड़ एवं फूलों के चित्र कार्ड को अलग–अलग छाँटना।	अंक अवधारणा सम्बन्धित कार्य – गिनना।
रचनात्मक एवं सौन्दर्य–बोध का विकास (30 मिनट)	पेड़ के आकार में रंगीन कागज चिपकाना ।	चिकनी मिट्टी से अपने मन पसंद खिलौने बनवाना।	पेड़ के आकार में ठप्पे लगाना	रंगीन ब्लॉक या लकड़ी के गुटकों से मन पसंद वस्तुएँ बनाना।	गीत या ताल पर नाचना या अंग संचालन करना	बच्चे विभिन्न दृश्यों का अभिनय करें जैसे तेज व धीमी हवा आने पर पेड़ कैसे हिलते हैं। फूलों की खुशबू आदि।

दिए गए विषय पर चित्र बनवाना, प्रशंसा करना।, अपने परिवेश, वातावरण को स्वच्छ व सुन्दर बनाने के लिए आदत विकसित करना।

वैयक्तिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास

स्वयं से भोजन कर सकना। खाने से पहले एवं बाद में हाथ धोना। दूसरे बच्चों के साथ खेलने में सहज होना। कार्यकलापों तथा भोजन के समय अपनी बारी की प्रतीक्षा करना। जोड़ी (Pair) अथवा समूह में दिए गए कार्य में हिस्सा लेता है। अभिरुचियों को अभिव्यक्त करने के मौके देना। नियम/निर्देश समझते हुए समूह में खेलने को प्रेरित करना। चित्रकारी, गायन आदि की प्रतिभा को उभारना।

संवेदी एवं ग्रहणशीलता का विकास

गति को निर्देशित करने एवं चीजों को पहचानने के लिए विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों (देखना, सुनना, महसूस करना, स्वाद लेना, सूँघना) के उपयोग का प्रदर्शन सिखाना।
स्थान, दिशा, दूरी, मात्रा आदि के प्रति जागरूक करना।

- **बच्चे की प्रगति के विभिन्न संकेतक एवं मानक**

बच्चों में सीखने की प्रक्रिया जन्मजात होती है और आजीवन चलती रहती है। प्रारंभिक देखभाल एवं शिक्षा का इस सन्दर्भ में विशेष महत्व है। इस दृष्टि से सीखने–सिखाने के दरमियान आकलन के आधार और स्वरुप को चिह्नित करना ज़रूरी है। दरअसल ये आधार ही वे संकेतक हो सकते हैं जिनके ज़रिए हम बच्चों के प्रारंभिक वर्षों में विकास के विभिन्न आयामों को समझ सकते हैं।

सतत आकलन में बच्चों के साथ अंतःक्रिया करते समय विभिन्न संदर्भों में बच्चों की प्रगति एवं स्थिति के बारे में जानकारियों एवं संबंधित नमूनों को एकत्रित कर सकते हैं। इसके लिए आकलन के संकेतक एवं मानक हमारे लिए आधार का काम करते हैं। इन जानकारियों एवं समझ का अवलोकन प्रपत्र, चेकलिस्ट, प्रगति प्रतिवेदन, अभिभावकों से बातचीत के माध्यम से प्राप्त करते है।

इसके लिए आकलन के कुछ संकेतकों को जानना एवं समझना उपयोगी हो सकता है।

विकास के आयाम	विकास के महत्वपूर्ण बिन्दु			पहला आकलन	
	बच्चे की आयु: 3–4 वर्ष	बच्चे की आयु: 4–5 वर्ष	बच्चे की आयु: 5–6 वर्ष	सहायता की आवश्यकता है	अच्छे से कर पाता/पाती है
शारीरिक विकास	1. हाथों एवं छाती का उपयोग करते हुए गेंद को पकड़ना। 2. सीधी रस्सी पर चलने के समय संतुलन बनाए रखना। 3. कागज को	1. सिर्फ हाथों से गेंद को पकड़ना। 2. खींची हुई रेखा पर सीधे चलना। 3. फीते को बाँधना/खोलना 4. मिट्टी से आकृति/मूर्ति गढ़ना।	1. सिर्फ हाथों से गेंद को पकड़ना। 2. खींची हुई रेखा पर सीधे चलना। 3. फीते को बाँधना/खोलना। 4. मिट्टी से		

	संकरे लंबे टुकड़ो में फाड़ना। 4. रंगीन चॉक या पेंसिल को घसीटना। 5. अपनी जगह पर दोनों पैरों से कूदना। 6. सीमा रेखा के भीतर बिना व्यावधान के रंग भरना।	5. भोजन से पहले एवं बाद में तथा शौच के बाद साबुन से हाथ धोना।	आकृति/मूर्ति गढ़ना। 5. भोजन से पहले एवं बाद में तथा शौच के बाद साबुन से हाथ धोना।		
सामाजिक एवं भावनात्मक विकास	1. स्वयं से भोजन कर सकना। 2. खाने से पहले एवं बाद में हाथ धोना। 3. दूसरे बच्चों के साथ खेलने में सहज होना। 4. कार्यकलापों तथा भोजन के समय अपनी बारी की प्रतीक्षा करना। 5. जोड़ी (Pair) अथवा समूह में दिए गए कार्य में हिस्सा लेता है।	1. सही ढंग से शौचालय का उपयोग करना। 2. अपनी अभिरूचियों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकना। 3. खेल सामग्रियों का मिलजुल कर उपयोग करना। 4. चित्रकारी, गायन, आदि की प्रतिभा दूसरों के समक्ष प्रदर्शित कर सकना। 5. नियम/निर्देश समझकर समूह में काम करना व खेल पाना।	1. सही ढंग से शौचालय का उपयोग करना। 2. अपनी अभिरूचियों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकना। 3. खेल सामग्रियों का मिलजुल कर उपयोग करना। 4. चित्रकारी, गायन, आदि की प्रतिभा दूसरों के समक्ष प्रदर्शित कर सकना। 5. नियम/निर्देशा समझकर समूह में काम करना व खेल पाना।		

बोली–भाषा का विकास	1. सामान्य निर्देशों का पालन कर पाना। 2. अपने विषय में पूछे गए सामान्य प्रश्नों का उत्तर दे पाना। 3. किसी कहानी /कविता के अंशों को याद रखना। 4. अपनी बात को कह पाना। 5. सामान्य वस्तुओं के चित्र पहचानता है व उनके विषय में जानता है।	1. अपने साथ घटी घटनाओं तथा अनुभवों का वर्णन कर सकना। 2. विस्तृत रूप से प्रश्न पूछना तथा उत्तर देना। 3. अपनी स्मरणशक्ति से छोटी कविता गा सकना। 4. शरीर के दायें और बायें भागों को पहचान कर बता पाना। 5. शब्द कार्ड से कहानी बना पाना।	1. अपने साथ घटी घटनाओं तथा अनुभवों का वर्णन कर सकना। 2. विस्तृत रूप से प्रश्न पूछना तथा उत्तर देना। 3. अपनी स्मरणशक्ति से छोटी कविता गा सकना। 4. शरीर के दायें और बायें भागों को पहचान कर बता पाना। 5. शब्द कार्ड से कहानी बना पाना।		
बौद्धिक एवं संज्ञानात्मक विकास	1. परिचित भोजन को सिर्फ स्वाद से पहचान पाना। 2. दो से चार टुकड़े वाले पजल (जोड़ने वाली पहेली) को हल कर पाना। 3. भिन्न प्रकार की ध्वनियों को पहचान कर बता पाना। 4. जानवारों /पक्षियों /शरीर के अंगों आदि की	1. रंगों की पहचान कर नाम बता पाना 2. परिवार के सदस्यों के नाम, घर का पता आदि बता सकना। 3. रंग, आकार, गुण आदि के अनुसार विभिन्न वस्तुओं को जमा/वर्णित कर सकना। 4. आसपास की आवाजों को सुनकर पहचान पाना।	1. रंगों की पहचान कर नाम बता पाना 2. परिवार के सदस्यों के नाम, घर का पता आदि बता सकना। 3. रंग, आकार, गुण आदि के अनुसार विभिन्न वस्तुओं को जमा/ वर्णित कर सकना 4. आसपास की		

	पहचान करना, मिलान करना तथा उन्हें छाँट पाना। 5. रंग व आकार की पहचान कर मिलान कर पाना।	5. पाँच से अधिक भाग वाले पजल/पहेली को सुलझा पाना।	आवाजों को सुनकर पहचान पाना। 5. पाँच से अधिक भाग वाले पजल/पहेली को सुलझा पाना।		
नवोन्मेषी और प्रारंभिक साक्षरता का विकास	1. अपने लिखे हुए नाम को पहचान पाना। 2. चॉक अथवा क्रेयॉन्स को सीधी रेखा में घसीट पाना। 3. बालमित्र द्वारा कैंची से कागज की पट्टियाँ (स्ट्रिप्स) काट पाना। 4. ब्लॉक (जोड़ने वाले) खिलौने से खेल पाना। 5. डोरी में मनके पिरो सकना। 6. दी गयी आकृति में रेत/रंगीन भूसी भर पाना।	1. किताब को सीधे पकड़ सकता है एवं पन्ने सही तरीके से पलट सकता है 2. लिखावट को पढ़े जाने की दिशा बता सकता है। 3. अपने साथियों के लिखे हुए नाम को पहचान पाना। 4. दैनिक उपयोग कि वस्तुओं/उत्पादों के नाम को लिखी हुई पर्चियों से पहचान पाना। 5. रेत/मिट्टी में चयनित अक्षरों के आकार ऊकेर सकना।	1. मुद्रित अक्षर तथा मुद्रित शब्द के बीच अंतर पहचान सकता है 2. शब्दों के जोड़े में समान और असमान दिखने वाले अक्षरों को पहचान सकता है। 3. अपना तथा अपने साथियों के लिखे हुए नाम को पहचान पाना। 4. वस्तुओं के नाम की प्रथम ध्वनि के आधार पर वर्गीकरण कर सकना। 5. चॉक या क्रेयॉन से कुछ सहज शब्द (नाम		

			आदि जिनसे वह परिचित है) को ट्रेस या कॉपी कर सकता है।			
शाला पूर्व गणित की तैयारी	1. सामान्य आकृतियों (गोल, चौकोर आदि) को पहचान पाना। 2. 'पास' और 'दूर' की अवधारणा समझ पाना। 3. 'सुबह', 'दोपहर', 'शाम', 'रात', की समझ होना। 4. 1 से 10 तक को क्रमशः कह पाना। 5. 'बड़ा', 'छोटा', 'हल्का', 'भारी' की अवधारणा की समझ होना।	1. छोटी वस्तुओं की मदद से 10 तक गिन सकना 2. छोटी–छोटी संख्याओं को पहचान सकता है।(1 से 10 तक) 3. ठोस वस्तुओं को मिलाकर 2–5 अंको के अंक संयोग (समूह) बना सकना। 4. आकार की अवधारणा (गोलाकार, चौकोर, त्रिभुज आदि) समझना। 5. सप्ताह के दिनों के नाम बता पाना।	1. बच्चा 1 से 10 तक संख्याओं को पहचान वस्तुओं की संख्याओं से मिला सकता है 2. दी गयी आकृति को ट्रेस कर सकता है। 3. समीप–दूर पहले–बाद में की अवधारणा को समझता है। 4. बच्चा लंबी–छोटी तथा हल्का–भारी की अवधारणा को समझता है। 5. सप्ताह के दिनों को बीते कल, आज और आनेवाले कल से मिलान कर पाना।			
सृजनात्मक अभिव्यक्ति सौन्दर्य प्रशंसा	1. स्वयं से (कैसी भी) तस्वीर बना सकना।	1. दिए गए विषय पर चित्र बनाना। 2. एक वस्तु को	1. दिए गए विषय पर चित्र बनाना।			

संबंधी विकास	2. गीली मिट्टी से आकृति बना सकना। 3. समूह में गाना गाना। 4. मुक्त रूप से स्वयं नाचना। 5. फूल, पौधे आदि की सुन्दरता की सराहना करना। 6. किसी दिए गए पात्र/चरित्र (जैसे डॉक्टर, पुलिस, ड्राइवर आदि) का अभिनय कर सकना।	अलग–अलग उद्देश्यों/कार्यों के लिए उपयोग में लाना। 3. अपने परिवेश की स्वच्छता व सुन्दरता बढ़ाने में मदद करना। 4. लय, संगीत, गीत आदि को सुरुचिपूर्ण ढंग से सुनना व प्रशंसा करना। 5. नाटक, समूह नृत्य/गीत में भाग लेने पर प्रसन्नता एवं उत्साह का प्रदर्शन।	2. एक वस्तु को अलग–अलग उद्देश्यों/कार्यों के लिए उपयोग में लाना। 3. अपने परिवेश की स्वच्छता व सुन्दरता बढ़ाने में मदद करना। 4. लय, संगीत, गीत आदि को सुरुचिपूर्ण ढंग से सुनना व प्रशंसा करना। 5. नाटक, समूह नृत्य/गीत में भाग लेने पर प्रसन्नता एवं उत्साह का प्रदर्शन।		

शिक्षक अपने कक्षा–कक्ष में निरंतर बच्चों के साथ अंतःक्रिया करता रहता है। बच्चों की पृष्ठभूमि, परिस्थिति, रुचियों एवं क्षमताओं को बेहतर जान रहा होता है। अतः इन संकेतकों के आधार पर तय मानक का इस्तेमाल कर सकता है।

- **बच्चे की प्रगति का अवलोकन व आकलन**

हमारे द्वारा निकाले गए निष्कर्ष ही हमें आगे शिक्षण अधिगम के आयोजन के लिए रणनीति सुझाएगें। आकलन करते समय हमें बच्चों की क्रियाओं का अवलोकन करना चाहिए। यहाँ सबसे जरूरी बात है कि अवलोकन करते समय हमें बच्चों को सहज होकर अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अवलोकन के दौरान शिक्षक बच्चे के शारीरिक, भाषागत, संज्ञानात्मक, वैयक्तिक, सामाजिक, भावनात्मक, संवेदी ग्रहणशीलता, रचनात्मक, सौंदर्य बोध से संबंधित कौशलों को ध्यान में रखें। एक बच्चे का खेल के मैदान में या कक्षा कक्ष के अंदर किसी गतिविधि को कराते समय, उसके मांसपेशियों के नियंत्रण एवं समन्वय को आसानी से अवलोकन कर आकलन किया जा सकता है। इस दौरान साथियों (peer) के समूह में किसी गतिविधि में एक–दूसरे को किया जाने वाला सहयोग को भी आसानी से हम अवलोकन कर सकते है।

इसी प्रकार प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा से संबंधित शिक्षक मार्गदर्शिका 'चहक' में ढेरों मौके हैं जहाँ हम बेहतर अवलोकन कर आकलन कर सकते है।

कक्षाओं में बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए, इस पर विचार करें तो कुछ इस प्रकार के निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं:–

- मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी के आधार पर शिक्षक को अपनी योजना की समीक्षा करने तथा बच्चों की आवश्यकता के अनुकूल योजना निर्धारित करने में सहायता मिलेगी।
- आकलन करने से बच्चों के व्यवहार, उनकी जानकारी के स्तर, उनके कौशलों तथा योग्यताओं के बारे में पता लग सकता है।
- आकलन से प्रत्येक बच्चे के सीखने और विकास में मदद करने और उसके कार्य में सुधार की संभावना खोजने में सहायता मिलेगी।
- आकलन बच्चे की प्रगति के प्रमाण तय करके उनके अभिभावकों तथा अन्य लोगों तक संप्रेषित करने में सहायक होगा।

• प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में बच्चे की प्रगति से संबंधित अभिलेखों का संधारण

सतत् आकलन में बच्चों के साथ अंतःक्रिया करते समय विभिन्न संदर्भों में हम बच्चों की प्रगति एवं स्थिति के बारे में जानकारियों एवं संबंधित नमूनों को एकत्रित कर सकते हैं। इसके लिए आकलन के संकेतक एवं मानक हमारे लिए आधार का काम करते हैं। इन जानकारियों एवं समझ को हम अवलोकन प्रपत्र, चेकलिस्ट, प्रगति प्रतिवेदन, अभिभावकों से बातचीत के माध्यम से प्राप्त करते है।

अ. शिक्षक अवलोकन

शिक्षण कार्य के दौरान ई०सी०सी०ई० कार्यकर्ता लगातार हर बच्चे के कार्य की स्थिति जैसे– बच्चों ने क्या सीखा है, कार्य किस प्रकार किया है? किसी कार्य को करने में किस प्रकार की समस्या आई है? कौन–कौन सा बच्चा कार्य में भाग नहीं ले पाया, अब उस बच्चे के साथ आगे क्या कार्य करवाना है? इत्यादि के बारे में लगातार सोचते रहते हैं। इस प्रकार की बातें बच्चे के कार्य को समझने, आगे का कार्य नियोजित करने एवं बच्चे को पृष्ठपोषण (फीडबैक) देने में बहुत उपयोगी हैं। बच्चों के बारे में इस प्रकार की बातों को यदि कुछ समय के अन्तराल पर नोट करते रहें तो आवश्यकता के अनुरूप इन जानकारियों का प्रयोग बच्चों के साथ शिक्षण कार्य के नियोजन में और उन्हें सीखने में मदद करने के लिए पृष्ठपोषण देने में कर सकते हैं।

इस प्रकार के अवलोकन आप दो तरीके से कर सकते हैं:–

1. अनौपचारिक अवलोकन – इस प्रकार के अवलोकन में ई०सी०सी०ई० कार्यकर्ता सीधे–सीधे बच्चे के कार्य में शामिल न होकर उसके कार्य के बारे में जानकारियाँ नोट करते हैं।
2. नियोजित अवलोकन – नियोजित अवलोकन में ई०सी०सी०ई० कार्यकर्ता पूर्व नियोजित योजना के तहत बच्चों के कार्य की स्थिति का अवलोकन करते हैं।

दोनों के संदर्भ में कुछ उदाहरण तालिका में प्रस्तुत हैं।

औपचारिक अवलोकन एवं अनौपचारिक अवलोकन

- बच्चों के कार्य में शामिल न हो कर उसके कार्य का अवलोकन करना।
- शाला से बाहर /घर परिवार में बच्चे के खेल या कार्य का अवलोकन।
- बच्चे का दोस्तों के साथ खेल के दौरान अवलोकन।

- बच्चों के बारे में उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड, बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण सम्बन्धित आदतें, अन्य बच्चों के साथ व्यवहार, बातचीत करने का तरीका, भाषा का उपयोग आदि से सम्बन्धित गुणात्मक टिप्पणी
- सामूहिक, व्यक्तिगत या उपसमूह में कार्य के दौरान बच्चों के कार्य के बारे ली गई संक्षिप्त अवलोकन टिप्पणी
- बच्चों के कार्यपत्रक पर टिप्पणी

ब. चैकलिस्ट– चैकलिस्ट का उपयोग भी मूल्यांकन के उपकरण के रूप में किया जाता है। यह व्यापक रूप से अधिगम उद्देश्यों और सीखने के बीच तुलना करता है। किसी विशेष कौशल का विश्लेषण करने के लिए बहुत ही उपयोगी और सरल तरीका है। यह बच्चों के कार्य को समझने तथा आगे का कार्य नियोजित करने के लिए बहुत उपयोगी है। इससे प्राप्त जानकारी बच्चों को सीखने में मदद करने एवं पृष्ठपोषण देने में की जा सकती है।

विकास के विभिन्न क्षेत्रों में बच्चों की प्रगति के बारे में जानने हेतु समय–समय पर विकास सम्बन्धित प्रगति चैकलिस्ट का उपयोग किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार के प्रगति चैकलिस्ट में निम्न बिन्दुओं का समावेश हो–

- बच्चों के विवरण, विशेषताएँ एवं मापदण्ड सम्बन्धित जानकारियों की सूची जो बच्चे के अवलोकन करने में ई०सी०सी०ई० शिक्षिका/पालनकर्ता को मदद करे।
- विकास के विशिष्ट पहलुओं को जाँचने की चैकलिस्ट, जिसमें विकास में पिछड़ने या हानि संबंधित निवारण के उपायों और परामर्श शामिल हो।

स. पोर्टफोलिया

बच्चों के द्वारा किए गए कार्यो का संग्रह जो बच्चे की प्रगति, वृद्धि (रचनात्मकता एवं उच्चस्तरीय शिक्षण कौशलों का प्रदर्शन) दर्शाता हो। प्रत्येक बच्चे का एक पोर्टफोलियो संधारित करना आवश्यक है। इस में निम्न पक्षों को सम्मिलित किया जा सकता है:–

- पोर्टफोलियो के आवरण पृष्ठ पर बच्चे का नाम, केन्द्र का नाम एवं विवरण हो ।
- बच्चे का व्यक्तिगत विवरण प्रपत्र जिसमें पासपोर्ट साइज का फोटो भी लगा हो।
- बच्चे के अधिगम के बारे में विवरण एवं प्रगति प्रतिवेदन अभिभावक के साथ साझा करने के बाद उनकी टिप्पणी भी दर्ज़ हो।
- चिकित्सा स्वास्थ्य प्रपत्र।
- बच्चों के चित्रकारी एवं लिखित कार्य सैम्पल।
- बच्चों द्वारा निर्मित कलात्मक कार्य, प्रारूप (मॉडल) आदि के फोटो।
- विकासात्मक प्रगति चैकलिस्ट।
- प्रगति प्रतिवेदन।

बच्चे के व्यवहार, आदत, स्वास्थ्य सम्बन्धित स्थितियों के बारे में जानकारी लेने के साथ–साथ बच्चे के सीखने में आ रही कठिनाइयों के बारे में भी अभिभावकों से विचार–विमर्श करके समझा जा सकता है।

इस प्रकार विविध संदर्भों से एकत्रित सूचनाओं की विवेचना करते हुए बच्चे की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षक आगे के लिए योजना निर्धारित करने में उपयोग कर सकते हैं, जैसे – बच्चों की प्रगति कैसे रही है? उसे आगे किस क्षेत्र में मदद की आवश्यकता है? स्वयं की कार्य प्रक्रिया में किस प्रकार की बदलाव की आवश्यकता है ? आदि बात को समझने के लिए इस प्रकार की व्याख्या आवश्यक है। इस

के माध्यम से शिक्षक पढ़ाने के तरीकों, सामग्रियों, कक्षा प्रबन्धन से सम्बन्धित पक्षों पर सोच विचार कर सकेंगे। एक निश्चित समयावधि के लिए निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष में बच्चे की सीखने की स्थिति में आए बदलाव को समझने के लिए मूल्यांकन किया जाता है। इस में निम्न पक्ष शामिल हैं:–

- बच्चे के प्रगति के बारे आँगनवाडी सेविका/कार्यकर्त्ता/ शिक्षिका द्वारा तैयार किया गया विवरणात्मक प्रतिवेदन। इस में विकास के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में गुणात्मक टिप्पणी भी दर्ज़ हों।
- प्रगति प्रतिवेदन कार्ड को माता–पिता के साथ शेयर करना एवं उनके विचार लेना। बच्चों के सीखने व प्रगति के बारे में एकत्रित की गई सूचनाओं को उनके अभिभावकों के साथ शेयर करना एक महत्वपूर्णपक्ष है। अभिभावक के साथ निम्न पक्षों को लेकर बातचीत कर सकते हैं:–
    - बच्चे का प्रगति प्रतिवेदन।
    - बच्चा क्या–क्या कार्य कर सकता है, उसे क्या करना अच्छा लगता है, किन–किन कार्यो में उसे कठिनाई होती है आदि।

द. बच्चों के परिवार (अभिभावक) से जानकारी एकत्रित करना

चरण 1 – एकत्रित दस्तावेज़ों एवं सूचनाओं का अर्थ निकालना तथा आगामी योजना में उपयोग।

चरण 2 – प्रगति प्रतिवेदन तैयार करना
चरण 3 – प्रगति प्रतिवेदन अभिभावक से साथ शेयर करना।

चरण 4 – बच्चों के बारे में बताना एवं अभिभावक से भी राय लेना।

- विद्यालय के कार्यों में बच्चे की पसंद और नापसंद बताना एवं घर के संदर्भ में भी बातचीत करना।
- पोर्टफोलियो फाइल शिक्षक और अभिभावक के मध्य इस प्रकार से संवाद करे कि बच्चे के बारे में गहराई से जानने और समझने में मदद मिल सके।

महिला बाल–विकास मंत्रालय द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम हेतु निम्नांकित सूचक सुनिश्चित किए जाने हेतु प्रस्तावित किए हैः–

(स्रोत – क्वालिटी स्टैण्डर्डस फॉर ई.सी.सी.ई.)

- प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रम 4 घण्टे का होना चाहिए जिसमें एक घण्टे का भोजन अन्तराल होना चाहिए।
- 30 बच्चों के समूह के लिए 35 वर्गमीटर का एक कक्षा–कक्ष व 30 बच्चों के बाहर खेलने हेतु जगह होना आवश्यक है।
- योग्य व प्रशिक्षित स्टाफ।
- उम्र व विकास के अनुरूप बालकेन्द्रित पाठ्यक्रम जिसे मातृभाषा में क्रियान्वित किया जाए।
- बच्चों की उम्र अनुरूप खेल व शिक्षा सामग्री।
- भवन संरचनापूर्वक सुरक्षित होना चाहिए व बच्चों की सुगम पहुँच में होना चाहिए। यह साफ–सुथरा होना चाहिए व आस–पास हरा–भरा होना चाहिए।
- पर्याप्त पेय–जल की सुविधा होनी चाहिए।
- बच्चों हेतु अलग से व अनुकूल शौचालय होना चाहिए व हाथ धोने की व्यवस्था होनी चाहिए।
- खाना पकाने हेतु व बच्चों के सोने हेतु अलग से स्थान होना चाहिए।
- तत्काल प्राथमिक उपचार पेटी व स्वास्थ्य सेवा की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

- तीन से छः वर्ष के बच्चों हेतु शिक्षक छात्र अनुपात 1:20 व तीन वर्ष से छोटी आयु के बच्चों हेतु 1:10 के अनुपात को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

शालापूर्व शिक्षिका की भूमिका

शालापूर्व शिक्षिका की भूमिका बच्चों को सीखने हेतु विभिन्न प्रकार के अनुभव करवाना है।

दिए गए बिन्दु उनकी भूमिका को स्पष्ट करते हैं –

1. बच्चों का कार्य के दौरान अवलोकन करना व उनकी ज़रुरतों को पहचानना।
2. बच्चों की उम्र, उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार की गतिविधियों की योजना बनाना।
3. उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए बच्चों को सीखने में मदद करना।
4. विशेष जरूरतों वाले बच्चों को ध्यान में रखते हुए गतिविधियों की योजना निर्माण करना।
5. बच्चों के सीखने को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त वातावरण निर्माण करना (भौतिक वातावरण, सामग्री, समूह गतिविधियों के क्रम आदि)
6. बच्चों के साथ सकारात्मक संवाद व अन्तःक्रिया करना व समझना की यह दोनों सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्णअंग है। बच्चों के साथ उत्तरदायित्व, मित्रता का सबंध स्थापित करना।
7. बच्चों व उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का सम्मान करना।
8. योजना निर्माण व गतिविधियों के क्रियान्वयन के साथ–साथ संवाद पर भी ज़ोर देना व बच्चों के सीखने को उनके संदर्भ से जोड़ना।
9. बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना व बच्चों को आपस में अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता करना।
10. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के केन्द्र में समावेशन को सुनिश्चित करना।
11. समुदाय व अभिभावकों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।
12. बच्चों का शाला पूर्व से औपचारिक विद्यालय में जाने के सफ़र को सुगम बनाने हेतु योजना निर्माण करना।

ऊपर दी गई भूमिका को भलीभाँति निभाने हेतु आवश्यक है कि शिक्षिका को बच्चों के साथ कार्य करना पसंद हो व उसमें अनुभव हो। उन्हें बच्चों के विकास के चरणों व पाठ्यक्रम की समझ होना आवश्यक है, इससे वे कुशलतापूर्वक बच्चों को सीखने में सहायता प्रदान कर पाएंगी।

• बच्चे की प्रगति में घर एवं विद्यालय की भूमिकाओं का अन्तर्संबंध

अच्छी प्रारम्भिक बाल्यावस्था परियोजना के क्रियान्वयन हेतु अभिभावकों व समुदाय का सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्णहै। शालापूर्व शिक्षिकाओं के लिए यह सुझाव है कि वे परिवारों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करें व दैनिक सम्पर्क के दौरान उनसे बच्चों की प्रगति पर चर्चा करें, अवलोकन करे, सुझाव लें व विद्यालय की गतिविधियों से उन्हें अवगत कराएँ। शिक्षिकाओं द्वारा अभिभावकों को कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं से सीधे जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। इस बात से अवगत करना भी आवश्यक है कि वे बच्चों के सीखने में और सहायक कैसे हो सकते हैं। शालापूर्व आयु वर्ग के बच्चे अधिकांश समय अपने परिवार के साथ बिताते हैं। अपने परिवार के सदस्यों व आस–पड़ोस के लोगों के साथ अंतःक्रिया करते हुए सामाजीकरण की प्रक्रिया सीखते हैं। इस लिहाज से घर, समुदाय एवं शाला पूर्व केन्द्र, तीनों ही बच्चे के विकास में महत्वपूर्णघटक हैं। हमारे आँगनवाड़ी केन्द्रों पर आने वाले बच्चे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक रूप से विविधतायुक्त परिवार एवं समाज से आते हैं। बच्चों के पालन पोषण एवं व्यवहार के प्रति प्रत्येक समाज के अपने तरीके होते हैं जो काफी लम्बे समय से उस समाज में लोग मानते हैं। इसी प्रकार, प्रत्येक परिवार की भी स्थिति एक–दूसरे से भिन्न होती है। भिन्न इस रूप में कि

आर्थिक स्थिति, पोषण एवं बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति सोच, बच्चों के प्रति माता–पिता का व्यवहार, सीखने का वातावरण आदि सभी अलग होते हैं।

समुदाय सहभागिता

समुदाय की सहभागिता बच्चों के विकास एवं सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। सही मायने में बच्चों के विकास में मदद करने के लिए ई०सी०सी०ई० कार्यकर्ता को माता–पिता के अलावा देखभाल कर रहे परिवार के अन्य सदस्यों एवं समुदाय के साथ निरन्तर सम्बन्ध बनाए रखने एवं कार्यक्रम में सम्मिलित करने की आवश्यकता है। समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता की परिकल्पना के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं जिन्हें स्पष्ट रूप से मूल विचारों के रूप में रखा या समझा जाना चाहिए।

- सर्वप्रथम यह समझना ज़रूरी है कि समुदायों और परिवारों में बच्चों के पालन–पोषण और उनके सीखने के तरीकों पर अपनी एक पूर्व समझ होती है। यह महत्वपूर्णहै कि उनकी समझ का विकास मात्र ही नहीं करना वरन् उनके ज्ञान में सीखने योग्य बिन्दुओं का भी समावेश किया जा सके। इससे बच्चों को आसानी से सीखने में मदद मिल पाएगी।
- दूसरा, बच्चों के लिए सीखने–सिखाने के केन्द्र, उसके परिवेश का ही हिस्सा होते हैं। अतः आँगनवाडी केन्द्रों को और वृहद् समुदायों एवं परिवारों को वह समग्रता से ही देखता है। इसी वजह से अभिभावकों के अतिरिक्त वृहद समुदाय को भी केन्द्रों की प्रक्रियाओं से जोड़ना ज़रूरी है, खास तौर पर बच्चों के सीखने–सिखाने से सम्बन्धित मुद्दों पर एक समग्र संवाद व विचारों के आदान–प्रदान की ज़रूरत है। ऐसे संवाद के आधार पर ही केन्द्रों को ज्यादा संदर्भित और विकसित किया जा सकता है और समुदाय में भी बच्चों की सीखने की प्रक्रिया के सम्बन्ध में समझ को बढ़ाया जा सकता है।

1. **परिवार के साथ संपर्क** – प्रारम्भिक बाल्यावस्था परियोजना के सुचारू क्रियान्वयन हेतु अभिभावकों व समुदाय का सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्णहै। शालापूर्व शिक्षिकाओं/कार्यकर्ताओं के लिए यह सुझाव है कि वे परिवारों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करें व दैनिक सम्पर्क के दौरान उनसे बच्चों की प्रगति पर चर्चा करें, अवलोकन बाँटें, सुझाव लें व आँगनवाड़ी केन्द्र की गतिविधियों से उन्हें अवगत कराएँ। आँगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा अभिभावकों को कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं से सीधे जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। उनसे यह बात करना भी आवश्यक है कि वे बच्चों के सीखने में और सहायक कैसे हो सकते हैं।
2. **अभिभावक के साथ बैठक–** नियमित संपर्क के अलावा कुछ समय के अन्तराल में माता–पिता के साथ बैठक आयोजित करके बच्चों के विकास से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों को लेकर बातचीत कर सकते हैं। ध्यान रहे कि इन बैठकों में प्रत्येक बच्चे को लेकर बातचीत कर पाना संभव नहीं हैं। अतः सामान्य विषयों, जैसे – बच्चों के पोषण की स्थिति, बच्चों के लिए खिलौने, बच्चों के लिए पुस्तकें, शाला पूर्व केन्द्र में बच्चों के साथ किए जा रहे क्रियाकलाप एवं इनके उद्देश्य, सीखने में खेल का महत्त्व आदि को चर्चा के बिन्दु बना सकते हैं। आमतौर पर इस प्रकार की बैठकों में केवल माताएँ आती हैं। इसका मूल कारण हमारे समाज में सामान्य रूप से बच्चों को पालने की जिम्मेदारी माँ की ही समझी जाती है। जबकि बच्चों के विकास में माता–पिता दोनों की भूमिका महत्वपूर्णहै। इस बात को ध्यान में रखते हुए ईसीसीई कार्यकर्ता बच्चों के पिता को भी बैठक में उपस्थित होने के लिए प्रेरित करें।
3. **परिवार के अन्य सदस्य (बड़े भाई–बहन या दादा–दादी) –** हमारे समाज में कई परिवार ऐसे है जहाँ माँ–पिता दोनों कामकाजी हैं। वे अपने छोटे बच्चों की देखभाल करने की जिम्मेदारी बड़े भाई बहन को सौंप जाते हैं। ऐसे में इन बड़े बच्चों को अपने छोटे भाई–बहनों को उचित ढंग से कैसे खिलाया जाए, उनके साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाए आदि बातें सिखा दी जाएँ तो

बच्चों के स्वास्थ्य एवं विकास में काफी सुधार आ सकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए बड़े बच्चों को आँगनवाड़ी केन्द्र में भेजने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करें।

अ. अभिभावकों व परिवारों के साथ सम्बन्ध

3 से 4 घंटे के ई०सी०सी०ई० कार्य के द्वारा बच्चों के विकास के समस्त आयामों के साथ सभी प्रकार के कार्य हो पाएँ, इसे सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। इसलिए परिवार के साथ–साथ समुदाय को भी आँगनवाड़ी केन्द्र की गतिविधियों के प्रमुख भाग के रूप में शामिल करना आवश्यक है। इस श्रेणी में निम्न प्रकार से कार्य किया जा सकता हैः–

1. **बच्चों के समुदाय के अनुभव को केन्द्र के अनुभवों के साथ समन्वयित करना –** समुदाय के अनुभवों को केन्द्र के क्रियाकलापों के साथ समन्वयित करने के लिए सबसे पहले समुदाय को जानना व समझना होगा। जैसे समुदाय में किस प्रकार के साधन उपलब्ध हैं जिनका उपयोग केन्द्र में विविध संदर्भो में आवश्यकता के अनुरूप किया जा सके। इसी प्रकार समुदाय में से ऐसे व्यक्तियों को पहचानना, जो बच्चों को कविता, नाटक या चित्रकारी/हस्तकला सम्बन्धित कार्य सिखा सकें।
2. **छोटे–छोटे कार्यदल बनाकर कार्य के सुचारू संचालन एवं व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग लेना** – समुदाय की ही महिलाओं एवं पुरुषों के समूह बनाकर केंद्र के कार्यों के संचालन एवं व्यवस्था में सहयोग लेना, जैसे – केन्द्र की सजावट करना, पोषाहार की सही व्यवस्था को देखना एवं अभिभावक बैठक आयोजित करना आदि। इसके अलावा केन्द्र के लिए मासिक योजना तैयार करने में भी सहयोग लिया जा सकता है।
3. **मासिक ई०सी०सी०ई० दिवस** – राज्य में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा कार्यक्रमों के सर्वसुलभ होने में एक बड़ी बाधा है लोगों को इनके विषय में जानकारी न होना। प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की राष्ट्रीय नीति में उल्लेखित मासिक ई०सी०सी०ई० दिवस मनाए जाने का प्रावधान इस विषय में महत्वपूर्णसकारात्मक बदलाव ला सकता है। ई०सी०सी०ई० दिवस के लिए निर्धारित दिवस पर गाँवों में वरिष्ठ नागरिकों, स्थानीय दस्तकारों, बच्चों के परिवार के वरिष्ठ जन इत्यादि की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्र पर उन्हें बच्चों की परिचर्या तथा शालापूर्व शिक्षा से जुडी बातों के प्रति जागरूक करना है। वर्तमान परिस्थितियों में यह निश्चय ही एक आवश्यक कदम है। इससे न केवल ई०सी०सी०ई० के विषय में लोग जान पाएंगे, बल्कि हमारे आँगनवाड़ी केन्द्रों तथा समुदाय के बीच साझेदारी की भी अच्छी शुरुआत होगी। वस्तुतः समुदाय के लिए यह समझना महत्वपूर्णहै कि 0 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए विद्यालय जाने की तैयारी का क्या अर्थ है तथा आँगनवाड़ी केन्द्र और बच्चों के परिवार इसमें कैसे योगदान कर सकते हैं। ई०सी०सी०ई० दिवस का उपयोग आँगनवाड़ी केन्द्र में आ रहे बच्चों की प्रगति को उनके परिवारों से साझा करने के लिए भी किया जाना चाहिए।

ब. समुदाय के साथ सम्बन्ध एवं साझेदारी

मासिक ई०सी०सी०ई० दिवस के लिए सुझावात्मक गतिविधियाँ –

प्रत्येक माह

- बच्चों द्वारा किए गए पाठ्यचर्या आधारित कार्यों का प्रदर्शन, जैसे – कार्यपत्रक, कला, शिल्प से जुड़े कार्य, मिट्टी से सम्बन्धित कार्य इत्यादि।
- आँगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा माता–पिता के बीच बच्चों की प्रगति के विषय में बातचीत तथा इस विषय में सुझावों का आदान–प्रदान।

- ई०सी०सी०ई० प्रचार सामग्री का प्रदर्शन, जैसे – चार्ट, पोस्टर, ऑडियो, वीडियो आदि।
- ई०सी०सी०ई० पाठ्यचर्या के महत्वपूर्णमुद्दों पर बातचीत।
- बच्चों तथा आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के अच्छे कार्य को सम्मानित करने में समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करना।
- खिलौना बैंक, गतिविधि बैंक आदि का निर्माण कर ई०सी०सी०ई० दिवस पर माता–पिता तथा समुदाय को अवगत कराना तथा इसे समृद्ध करने के लिए समुदाय से सहयोग की अपील करना।
- समुदाय से सहयोग लेकर स्थानीय कला, शिल्प, लोक गीतों आदि के नमूने इकट्ठा करना।
- गतिविधि कॉर्नर का निर्माण।

हर दूसरे माह

- बच्चों द्वारा समूह गान, समूह नृत्य, आदि का प्रदर्शन करना।
- बच्चों के माता–पिता/अभिभावक तथा बच्चों को शामिल करते हुए ऐसी गतिविधियाँ कराना जो बच्चों के प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की दृष्टि से बच्चों के घर में की जानी अपेक्षित हैं।
- बच्चों के माता–पिता तथा समुदाय को शामिल करते हुए प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए अधिगम सामग्री का निर्माण करना।
- स्थानीय दस्तकारों के सहयोग से खेल तथा अधिगम सामग्री का निर्माण करना।

अर्धवार्षिक ई०सी०सी०ई दिवस के अवसर पर

- खेल दिवस का आयोजन, आँगनवाड़ी केन्द्र आने वाले सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करना।
- सभी बच्चों की सहभागिता के लिए बाल मेला, त्योहारों से जुड़े समारोह, प्रदर्शनी आदि का आयोजन।
- आँगनवाड़ी केन्द्र की दीवारों पर बच्चों द्वारा पेंटिंग करवाना। इसके लिए बच्चों को सुरक्षित तथा बड़ों की निगरानी में कार्य करवाया जाए। कार्यों को करवाए जाने के उद्देश्यों से बच्चों के माता–पिता तथा समुदाय को अवगत कराना।

अभिभावकों की भूमिका

- बच्चों को सहज, सुरक्षित एवं मदद देने वाला वातावरण उपलब्ध कराना जिससे कि उनका सीखने में व उच्चतम स्तर का विकास हो सके।
- घर पर बच्चों को खोज व प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना व दिनचर्या की गतिविधियों से सीखने में मदद करना।
- शिक्षिका के साथ विश्वास एवं आपसी सम्मान का सम्बन्ध स्थापित करना।
- बच्चों के विकास सम्बन्धी बातों को शिक्षिका के साथ बाँटना।
- समुदाय बैठकों व आँगनवाडी केन्द्र की गतिविधियों में भागीदारी सुनिश्चित करना।
- बच्चों पर औपचारिक सीखने व प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने हेतु जोर न डालना।

इस संदर्भ में शिक्षिका की भूमिका निम्न बिन्दुओं से समझी जा सकती है:–

- दैनिक सम्पर्क से परिवारों के बारे में समझ बनाना, उनके सांस्कृतिक, सामाजिक संदर्भों को समझना एवं विविधताओं पर ध्यान देना।
- अभिभावकों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना व उन्हें बैठकों व आँगनवाडी केन्द्र सम्बन्धी कार्यक्रमों में भागीदारी हेतु प्रोत्साहित करना।
- विद्यालय समुदाय के मध्य अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने हेतु पुख़्ता योजना निर्माण करना।

- परिवारों व अभिभावकों की सहायता हेतु तत्पर रहना।
- ऐसे प्रयास करना कि परिवारों के साथ लगातार सम्पर्क रखा जा सके।
- अपेक्षाकृत कम औपचारिक बैठकें बुलाकर, घर पर सम्पर्क द्वारा व बच्चों के ज़रिए सम्पर्क स्थापित करना।
- अभिभावकों को विद्यालय व कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं के अवलोकन के लिए आमन्त्रित व प्रोत्साहित करना।
- अभिभावकों की बच्चों के विकास सम्बन्धी समझ को और पुख़्ता करने हेतु बैठकें बुलाना व सम्पर्क के दौरान चर्चा करना। कार्यशालाओं के माध्यम से स्वच्छता, इस उम्र में होने वाली बीमारियों व सीखने के तरीकों पर चर्चा करना। बच्चों की देखभाल के विभिन्न आयामों पर भी चर्चा करना।
- बच्चों की प्रगति को अभिभावकों के साथ बाँटना।
- बच्चों के कार्य को व्यवस्थित रखना व उस पर अभिभावकों से चर्चा करना।
- बच्चों से सम्बन्धित अभिभावकों के प्रश्नों व चिन्ताओं पर विस्तार से चर्चा करना।
- अभिभावकों को अपनी संस्कृति से सम्बन्धित कहानियों, गीतों व चित्रों पर चर्चा हेतु विद्यालय में आमन्त्रित करना व उनकी कक्षा–कक्षीय गतिविधियों में भी सहायक बनाना।

- **विशेष आवश्यकता वाले बच्चे तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा**

भारत में विशेष शिक्षा की जरूरत के अनुसार एक शिक्षार्थी को विभिन्न दस्तावेज़ों में अलग–अलग ढंग से परिभाषित किया गया है और समयावधि में सरकार का दृष्टिकोण विविधता को स्वीकार करने एवं इसे समावेशी बनाने का और चिकित्सा मॉडल आधारित देखभाल के स्थान पर बाल अधिकार मॉडल में स्थानान्तरित हो गया है। 'प्रारम्भिक वर्षों में समावेशन' विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का मुख्यधारा के प्रारम्भिक शैक्षणिक वातावरण तक पहुंच के लिए प्रयुक्त होता है, जो एक बाल केन्द्रित अध्यापन द्वारा समायोजित होकर उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है।' विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अलग सेवायें ऐतिहासिक 'चिकित्सा मॉडल' दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो कि 'कमियों' और 'इलाज' के मामले में बच्चों की जरूरतें बताते हैं।

समावेशी शिक्षा का मूल आधार बच्चों के प्रति समान व्यवहार करना है न कि उनको व्यक्तिगत, शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक या शारीरिक अपंगता के आधार पर अलग किया जाए। एक शिक्षार्थी को विशेष शिक्षा की जरूरत हो सकती है और एक विशेष क्षेत्र में अवधारणाओं को जानने में सक्षम होने के लिए भिन्न प्रयासों की जरूरत हो सकती है, जिसको कि बच्चे की क्षमताओं के क्षेत्रों की पहचान के आधार पर विकसित किया जाना महत्वपूर्णहो सकता है। इसलिए बच्चे के पास एक अवसर होना चाहिए जहाँ कि वह इन संकायों का अभ्यास कर सके और उन्हें अधिकतम स्तर तक विकसित कर सके। समावेशन के विवरणात्मक सूत्रों के माध्यम से उच्च गुणवत्ता के प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रम और सेवाओं के उपयोग, सहभागिता और समर्थन से किया जा सकता है। जहाँ बच्चों के लिए समावेशी वातावरण की कल्पना करते हैं, वहाँ एक व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं। चुनौतियाँ बुनियादी ढाँचे और कार्मिकों दोनों में शामिल हैं। यदि हमारे अंदर समावेशन का दर्शन और प्रत्येक बच्चे को अपने साथियों के साथ सीखने के अधिकार के लिए एक स्पष्ट प्रतिबद्धता है तो, हम कई चुनौतियों के निबटारे में कामयाब हो सकते हैं। इसलिए सभी ई०सी०सी०ई० कार्यक्रमों को बच्चों की विशेष जरूरतों के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी बनाना आवश्यक है। इसमें ई०सी०सी०ई० शिक्षकों और देखरेखकर्ता का विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान करने में, आयु आधारित खेलने और सीखने की सामग्री के उपयोग, भौतिक वातावरण में बदलाव और माता–पिता को परामर्श सेवाएँ देने आदि के लिए प्रशिक्षण देना शामिल है। बच्चों की प्रारम्भिक अवस्था में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान महत्वपूर्णहैं, जो कि बाद के जीवन में चुनौतियों से निबटने में मदद करता है। इसलिए माता–पिता, अभिभावकों और अन्य हितधारकों का संवेदीकरण, आमुखीकरण और प्रशिक्षण अनिवार्य हो गया है। कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाना और समावेशन की इस प्रक्रिया के प्रति समर्पित हो जाना

अनिवार्य हो जाता है। पाठ्यक्रम के नजरिए से यह समझना महत्वपूर्णहै कि प्रारम्भिक पहचान और हस्तक्षेप का महत्त्व, पाठ्यक्रम को लचीला और सुलभ बनाने के लिए ही नहीं अपितु भौतिक वातावरण में समायोजन कर यह सुनिश्चित करने के लिए भी है कि यह बाधा मुक्त हो। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यक्रम सुलभ बनाना, उपयुक्त आकलन और मूल्यांकन प्रक्रियाएँ तैयार करना, व्यवहार की बाधाओं को दूर करने के लिए सभी हितधारकों का क्षमता निर्माण और सशक्तिकरण भी अत्यन्त महत्वपूर्णहै। यह प्रक्रिया विशेष साथियों को भी विविधता का सम्मान करने और सीखने के प्रति संवदेनशील बनाती है। जोखिम वाले बच्चों के परिवारों को सशक्त बनाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। विशेष अवश्यकता वाले बच्चों और उनके परिवारों के लिए समावेशी अनुभवों के वांछित परिणाम, बच्चों के अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँचने के लिए आवश्यक है। एक ई०सी०सी०ई० केन्द्र में हो सकता है कि शिक्षक सभी शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कक्षा में संघर्ष करता हो। कक्षा में हो सकता है कि कुछ बच्चे सीखने के लिए संघर्ष करते हों, अन्य अपने विकास कार्यों पर अच्छा प्रदर्शन कर रहे होते हों और बाकी कहीं बीच में ठीक ठाक बैठते हों। प्रत्येक बच्चे की सीखने की अपनी गति होती है। बच्चे के सीखने का अपना अलग तरीका होता है। हालांकि, प्रयुक्त पाठ्यक्रम अधिकाशंतः 'सब के लिए उपयोगी एवं इस दृष्टिकोण से प्रेरित होता है कि सभी बच्चे शैक्षणिक वर्ष के अंत तक मानकों को प्राप्त कर लेंगे। इस स्थिति के जवाब में अक्सर ई०सी०सी०ई० शिक्षक और देखभालकर्ता शिक्षार्थियों की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए 'वर्गीकरण' की अवधारणा का प्रयोग करते हैं। इसके सबसे बुनियादी स्तर पर, वर्गीकरण कक्षा में शिक्षार्थियों के बीच अन्तर प्रदर्शित करने के रूप में होता है। ई०सी०सी०ई० शिक्षकों/देखभालकर्ताओं द्वारा किए जा रहे वर्गीकरण के निम्न आधार हो सकते हैं:–

- विषयवस्तु– बच्चा क्या सीखना चाहता है या बच्चा सूचनाओं तक किस प्रकार पहुँच बना पाता है।
- प्रक्रिया– गतिविधियाँ जिनमें बच्चा समझने के लिए या दक्ष होने के लिए संलग्न होता है।
- उत्पाद– विषय में बच्चे ने जो पढ़ा है, अभ्यास किया है, लागू किया है और विस्तार किया है के रूप में हो सकता है।
- सीखने का वातावरण– 'जिस प्रकार ई०सी०सी०ई० केन्द्र पर काम होता है और महसूस होता है।

इस बात के पर्याप्त सबूत है कि बच्चे विद्यालय में अधिक सफल रहते है और संतुष्ट महसूस करते हैं, यदि उन्हें अपनी तत्परता के स्तर, दिलचस्पी और सीखने के तरीके के अनुरूप पढ़ाया जाय।' बच्चों को कभी–कभी अपने जैसे तत्पर साथियों के साथ, कभी–कभी मिश्रित तत्पर समूह के साथ, कभी–कभी अपने जैसे समान हितों वाले बच्चों के साथ, कभी कभी अपने से समान सीखने वाले साथियों के साथ, कभी इधर–उधर से और अक्सर अपनी पूरी कक्षा के साथ काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

प्रस्तावित गतिविधियाँ

- अपने विद्यालय में (जहाँ आप सेवारत हैं), वहाँ पहली कक्षा में नामांकित बच्चों के संबंध में यह जानकारी एकत्र करें कि क्या उन्हें किसी प्रकार की प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (आँगनबाडी अथवा प्ले स्कूल आदि के माध्यम से) प्राप्त हुई है? अवलोकन तथा वर्ग शिक्षक से चर्चा के माध्यम से प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्राप्त तथा इससे वंचित बच्चों के प्रदर्शन में भिन्नताओं को विकास के विभिन्न आयामों के आलोक में समझने का प्रयास कर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- कक्षा 1 तथा कक्षा 4 तथा 5 के आकलन प्रपत्रों/प्रश्न पत्रों का अध्ययन कर यह पता लगाएं कि आयु अनुरूप आकलन का क्या महत्त्व है तथा यह भी समझने का प्रयास करें कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में आकलन की प्रक्रिया किन अर्थों में विशिष्ट है।

इकाई–5

बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप सक्षम होगें:–

- बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझने में।
- राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को 8 वर्ष तक विस्तार देने के अर्थ को समझने में।
- राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियों एवं नवाचार का वर्णन करने में।
- राज्य में विद्यालय की तैयारी में संस्थाओं (अकादमिक एवं सामाजिक) के महत्व को पहचानने में।

नई शिक्षा नीति 2020 ने प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए सभी प्रावधानों पर बल देते हुए इसे स्कूली प्रणाली के लिए बुनियादी अवस्था के रूप में लक्षित किया है। एन0 ई0 पी0 2020 शिक्षा की पाँच वर्षीय बुनियादी अवस्था पर विचार करती है, जिसमें ई0सी0सी0ई0 के तीन वर्ष तथा प्राइमरी स्कूल के दो वर्ष शामिल है। इस प्रकार से ई0सी0सी0ई0 का दायरा विस्तृत होकर अब 3–8 वर्ष तक के बच्चों के लिए हो गया है।

बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे प्रयास किए गए है, परन्तु नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित ढाँचे में समाहित होने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है। शिक्षकों को प्रस्तावित पाँच वर्षीय बुनियादी अवस्था की शिक्षा प्रदान करने के लिए विशिष्ट रूप से तैयार किया जाना है। प्रारंभिक वर्षो में प्रदान की जाने वाली देखभाल और शिक्षा बच्चों के भविष्य को आधार और दिशा प्रदान करती है। अतः यह जरूरी है कि इन प्रारंभिक वर्षो के दौरान दी जाने वाली देखभाल एवं शिक्षा के द्वारा उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो।

● बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति

जनसंख्या की दृष्टि से बिहार का राष्ट्र में तीसरा स्थान है। उपलब्ध जनसंख्या को विकसित मानव संसाधन बनाने के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था की समुचित देखभाल और शिक्षा पर बल दिया जाना आवश्यक है। प्रारंभिक बाल्यावस्था ही देश को विकसित बनाने के लिए मजबूत आधार है। इस मजबूत आधार के लिए बालक का सर्वांगीण विकास महत्पवूर्ण है। इसके लिए उचित पोषण, स्वास्थ्य सुविधाएँ,

समृद्ध भौतिक एवं मनोसामाजिक परिवेश की अहम भूमिका है।

भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का औपचारिक दस्तावेजीकरण प्रारंभ हुआ। इसके प्रमुख अग्रणियों में गिजुभाई बधेका, ताराबाई मोदक, मॉरिया मांटेसरी आदि प्रमुख है। इस दिशा में महात्मा गाँधी, रविन्द्रनाथ टैगोर तथा जाकिर हुसैन ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ई0सी0.सी0ई0 सेवाओं को विकसित करने के लिए मौलिक अधिकारों और राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के रूप में अनेक प्रावधान दिए गए हैं। भारत में प्री–स्कूल शिक्षा, सरकारी, निजी और स्वयंसेवी संस्था द्वारा प्रदान की जाती है। सरकारी क्षेत्र में यह मुख्य रूप से एकीकृत बाल विकास योजना के अन्तर्गत दी जाती है।

भारत सरकार द्वारा 02 अक्टूबर 1975 में एकीकृत बाल विकास योजना (आई0सी0डी0एस) को प्रारंभ किया गया है। इसके मुख्य घटकों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा एवं विकास, पोषण से संबंधित परामर्श, स्वास्थ्य सुविधाएँ, टीकाकरण, सामुदायिक जागरूकता आदि है। इसके अंतर्गत आँगनबाड़ी केन्द्रों को विकसित किया गया है।

इस कार्यक्रम से पूरे बिहार में भी शिक्षा और स्वास्थ्य की प्रभावी नींव पड़ी है। आँगनबाड़ी केन्द्रों पर जमीनी स्तर पर महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। इन केन्द्रों पर 0–6 आयु समूह के बच्चे और गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाएँ को वह तमाम सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं, जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपुर्ण है। आँगनबाड़ी के मुख्य हितधारकों में आँगनबाड़ी कार्यकर्ता, बालक और इसके अभिभावक, आँगनबाड़ी सहायिका, सी0डी0पी0ओ0 और वह अन्य शामिल हैं, जो सक्रिय रूप से इस आयु वर्ग के बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा की दिशा में कार्य कर रहे हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्राप्ति के लिए दो आयु समूहों में विभाजित किया गया है। इसमें पहले आयु समूह में 3–6 वर्ष के बच्चे तथा दुसरे आयु समूह में 6–8 वर्ष के बच्चे शामिल हैं। 3–6 वर्ष के बच्चे आँगनबाड़ी या प्ले स्कूल से तथा 6–8 वर्ष के बच्चे सरकारी या निजी विद्यालयों से अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अपने घर के समीप ही पोषण और शिक्षा आसानी से प्राप्त होने के कारण अभिभावक और बच्चे सकारात्मक रूप से आँगनबाड़ी केन्द्रों पर नामांकित हैं एवं सरकार द्वारा दी जा रही विभिन्न प्रकार की सुविधाओं जैसे– पूरक पोषण, पोषण प्रतिरक्षण, स्वास्थ्य सेवाएँ, खेल खिलौने आदि का लाभ उठा रहे हैं। इससे न सिर्फ बच्चों की उपस्थिति में लगातार वृद्धि हो रही है बल्कि बच्चों के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास की दिशा में भी सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

इस स्तर के पाठ्यक्रम में बच्चों को आसान और सुन्दर छोटी कविता, लघु कहानी एवं कथाएँ और मधुर गीतों के माध्यम से सिखाया जाता है। बच्चों को आवश्यक सामान्य खेल सामग्री और गतिविधियाँ जिससे उनका शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक और भाषायी विकास सुनिश्चित हो, मुहैया कराई जा रही है। बच्चों में अच्छी आदतों जैसे– व्यायाम करना, हाथ धोना, अपने खेलने की जगह को साफ रखना, स्वच्छ पानी पीना, स्वच्छता संबंधी आदतों को बनाए रखना, मिल–जुल कर रहना, अपनी चीजों को साझा करना, अपनी बारी का इंतजार करना आदि के विकास को प्रोत्साहित किया जाता है। मूल्य–आधारित कहानियाँ सुनाना भी इस स्तर के पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग होता है।

गतिविधि–1
मेरा बचपन

अपने बचपन के दिनों को(जब आप पाँच–छः वर्ष के थे) याद करें। आप कौन–कौन से खेल खेलते थे? आप किन खिलौनों से खेलते थे? आपके प्रिय मित्र का क्या नाम था? आपके घर में आपके साथ कौन–कौन रहते थे? आपको जो कुछ भी याद है उसकी सूची बनाएँ।

इस गतिविधि का उद्देश्य आपके बचपन के परिवेश (गतिविधि, खेल– खिलौने आदि) की तुलना मौजूदा परिवेश से करना है। साथ–साथ आपके समय में खेले जाने वाले पारंपरिक खेल खिलौनों को वर्तमान प्रारंभिक कक्षाओं तक लाना है।

- **राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को 8 वर्ष तक विस्तार देने का अर्थ**

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में खेल–खेल में सीखने का परिवेश शामिल है। इस स्तर पर बच्चे विभिन्न वस्तुओं से खेलते हैं तथा अपनी उत्सुकताओं का उत्तर पाते हुए सीखते हैं। इस अवस्था में बच्चा अपने आस–पास की हर वस्तु के प्रति उत्सुक रहता है । खेल–खेल के माध्यम से वह अनेक चीजों को इकट्ठा करता है , जोड़ता है, घटाता है तथा वर्गीकृत करता है। इस प्रक्रिया में वह जोड़–घटाव समेत अनेक नई चीजों के प्रारंभिक ज्ञान सीखता है।

विश्व स्तर पर हुए शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि बच्चों के जीवन के शुरूआती वर्ष (जीवन के प्रथम 06 से 08 वर्ष) उनके सम्पूर्ण जीवन के विकास पर प्रभाव डालते हैं। यह अवधि उनके मस्तिष्क के विकास के लिए काफी महत्व रखती है। यदि ये प्रारंभिक वर्ष समृद्ध मनोसामाजिक एवं भौतिक परिवेश द्वारा पोषित हो, तो बच्चों की क्षमताओं के पूर्ण विकास की संभावनाएँ कई गुणा बढ़ जाती है। देश भर में हुए विभिन्न अनुसंधान भी बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा कार्यक्रमों में निवेश के लिए पर्याप्त तर्क प्रदान करते हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा की पाँच वर्षीय बुनियादी अवस्था की बात करती है। इसमें पहला चरण प्री–स्कूल या बालवाटिका वर्षों का है। आमतौर पर 3–6 वर्ष के अधिकांश बच्चे किसी न किसी औपचारिक या अनौपचारिक कार्यक्रम जैसेः– आँगनबाड़ी केन्द्र, नर्सरी स्कूल या स्कूलों के प्री–प्राइमरी खंड में भाग लेने लगते हैं। भारत में यह समय आज तक स्कूल प्रणाली से बाहर रहा है। एन0ई0पी0 2020 ने इसे औपचारिक स्कूल प्रणाली में शामिल करते हुए स्कूली ढांचे में एक अहम परिवर्तन किया है। इस प्री–प्राइमरी के बाद का चरण प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं का है। इसमें 6–8 वर्ष के आयु वर्ग शामिल हैं। एन0ई0पी0 2020 के अनुसार अब प्री–स्कूल से लेकर कक्षा 2 तक एक निरंतरता के रूप में देखा जा रहा है।

बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में बिहार में कई नई पहल हुई है और विद्यालयों की आधारभूत संरचना में बहुत बदलाव हुए हैं। यह हर्ष का विषय है कि शिक्षा का परिदृश्य बदलने लगा

है। बड़े पैमाने पर शिक्षक बहाल हुए, विद्यालयों की आधारभूत संरचना का सुदृढ़ीकरण हुआ तथा इस स्तर पर बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का महत्व समझा जाने लगा।

नई शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा के ढ़ांचे का हिस्सा बनाकर उसे एक मजबूत बुनियाद प्रदान की है। इस ढ़ांचे के क्रियान्वयन से बच्चों का बेहतर विकास सुनिश्चित हो पाएगा।

> ई0सी0सी0ई0 संभवतः समता स्थापित करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जल्द से जल्द निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व उपलब्ध किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हों।
>
> एन.ई.पी. 2020

इस नई संरचना को बिहार में लागू करने के लिए काफी तैयारी की आवश्यकता हैः जैसे एन0ई0पी0 2020 के अनुसार इस स्तर पर सीखना खेल–खिलौना आधारित होगा। अतः इन नवाचारों में शिक्षकों/आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जाना है। साथ ही साथ उन्हें सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति के लिए उन्मुख करने की आवश्यकता है। आँगनबाड़ियों को स्कूल परिसर से एकीकृत किए जाने की जरूरत है। अभिभावकों और समुदाय को स्कूली कार्यक्रमों में सक्रिय भागिदार बनाए जाने की आवश्यकता है। सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अभियान स्वरूप कार्य किया जाना है। एन0ई0पी0 2020 के द्वारा इस स्तर विशेष से संबंधित सुझावों के क्रियान्वयन के लिए राज्य भर के सभी हितधारकों को साथ आकर कार्य करना होगा।

● राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियाँ एवं नवाचार

बिहार में विगत कुछ वर्षों में प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव हुए हैं। प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या संबंधी बहस ने सभी का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है। इससे यह साफ तौर पर पता चलता है कि प्रारंभिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न आयामों को महत्व दिया जा रहा है। राज्य में इस स्तर पर सीखने के प्रतिफल सुनिश्चित करने के लिए एवं एन0ई0पी0 2020 द्वारा प्रस्तावित मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) 2025 के लक्ष्यों को प्राप्त करने की कवायद शुरू हो चुकी है।

यह सर्वमान्य है कि शिक्षा में पाठ्यचर्या का नवीकरण और विकास सतत चलने वाली प्रक्रिया है। नई शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के पश्चात यह महसूस किया जा रहा है कि प्रस्तावित नई संरचना एवं सुझावों के क्रियान्वयन के लिए हमें बहुत कुछ करने की जरूरत है। जहाँ एक ओर फाउन्डेशन स्तर पर शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों की विशिष्ट तैयारी की आवश्यकता है, वही दुसरी ओर इस नए ढ़ांचे में समाहित होने के लिए संसाधनों का भी सुदृढ़ीकरण किया जाना आवश्यक है।

नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि फाउन्डेशन स्टेज के शिक्षकों को इस स्तर पर प्रयोग में लाई जाने वाली नई एवं रूचिकर प्रविधियों की जानकारी हो। आई0सी0टी0 के उपयोग से शिक्षण–अधिगम के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। पूर्व–प्राथमिक तथा

प्राथमिक स्तर पर इन नवाचारों का उपयोग कर शिक्षण अधिगम को बेहतर एवं रूचिकर बनाने के लिए शिक्षकों में जरूरी दक्षता का विकास किया जाना है। आई0सी0टी0 के उपयोग में शिक्षकों को सहज महसूस करवाना आज के समय की माँग है।

बिहार में कई भाषाएँ बोली जाती हैं जैसे भोजपुरी, बज्जिका, मगही, हिंदी, उर्दू, मगही, अंगिका इत्यादि। हमारे बहुभाषी संदर्भ को देखते हुए, हमारे पास बड़ी संख्या में बच्चे आते हैं जिनकी मातृभाषा विद्यालय में शिक्षा दिए जाने वाली भाषा से भिन्न है। यह बच्चों के अधिगम पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यह हमारे समक्ष एक जटिल मुददा् है। बच्चों के प्रारंभिक वर्षों में मातृभाषा में शिक्षण को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान की गई है। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे बच्चों को उनकी मातृभाषा में विभिन्न सीखने के अनुभव प्रदान करें, ताकि उन्हें समझ के स्तर पर समस्याओं का सामना नहीं करना पड़े। इसके साथ साथ इस स्तर से ही उन्हें धीरे धीरे बच्चों को बहुभाषिकता के लिए तैयार करने की आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षकों की संवेदनशीलता तथा सही प्रशिक्षण दोनों ही जरूरी है।

> कई उपाय करने के पश्चात भी देश में भाषा सिखाने वाले कुशल शिक्षकों की अत्याधिक कमी रही है। भाषा शिक्षण में भी सुधार किया जाना चाहिए ताकि वह अधिक अनुभव–आधारित बने और उस भाषा में बातचीत और अन्तःक्रिया करने की क्षमता पर केन्द्रित हो न कि केवल भाषा के साहित्य, शब्दभंडार और व्याकरण पर। भाषाओं को अधिक व्यापक रूप में बातचीत और शिक्षण–अधिगम के लिए प्रयोग में लाया जाना चाहिए।
>
> नई शिक्षा नीति 2020

एक अच्छी तरह से डिजाइन किया हुआ आंतरिक एवं बाहरी परिवेश, बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाता है। यह बच्चों का विद्यालय से भावनात्मक जुड़ाव सुनिश्चित करता है। प्री–स्कूल के आंतरिक स्थान को विभिन्न रूचि क्षेत्रों जैसेः– कला क्षेत्र, खोज क्षेत्र, साक्षरता क्षेत्र,गणित क्षेत्र,खेल–खिलौना क्षेत्र आदि में बाँट कर आनंदमय दैनिक कार्यक्रम को नियोजित किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए प्री–स्कूल शिक्षकों का खेल और गतिविधि शिक्षण में कौशल विकास की जरूरत है। उन्हें बच्चों को ऐसा शैक्षिक वातावरण प्रदान करना होगा जिसमें बच्चे अपनी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अपने आसपास के वातावरण ,पक्षियों,पौधों, आदि के बारे में सीख पाएँ। उन्हें बच्चों को अपने आसपास के प्राकृतिक और मानवनिर्मित दोनों प्रकार के वातावरण को देखने और उनके साथ परिचित होने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है।

आमतौर पर यह देखा जाता है कि शिक्षक पाठ्यचर्या स्थल के तौर पर सिर्फ वर्ग कक्षों का इस्तेमाल करते हैं। वे कक्षा के अतिरिक्त शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में कभी कभार ही सभागार अथवा खेल के मैदान का उपयोग करते हैं। बेहतर फाउन्डेशन स्तर की शिक्षा के लिए पुरे विद्यालय को ही अधिगम स्थल के रूप में सृजित करने की जरूरत है। शिक्षकों को इस प्रकार से प्रशिक्षित करने की जरूरत है कि वह विद्यालय की हर जगह एवं चीज को अधिगम सामग्री के रूप में प्रयोग करके बच्चों को सीखने के रूचिकर अवसर प्रदान कर पाएँ। विद्यालय की दीवारों, सीढ़ीयों, खिड़कियों, दरवाजों, यहाँ तक की शौचालय को भी सीखने के स्थल के रूप में देखने की आवश्यकता है। बच्चों को शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा का अहसास कराया जाना जरूरी है।

> एक त्रिआयामी स्थान बच्चों को सीखने के लिए एक विशेष व्यवस्था दे सकता है क्योंकि यह पाठ्यपुस्तकों तथा ब्लैकबोर्ड का साथ देते हुए बच्चों के लिए बहुइन्द्रिय अनुभव प्रस्तुत कर सकता है।
>
> एन0सी0एफ 2005

यह सत्य है कि भौतिक संसाधनों को और बेहतर बनाए जाने की आवश्यकता है, लेकिन सबसे जरूरी संसाधन है शिक्षक जिसको इस प्रकार से प्रशिक्षित करने की जरूरत है कि वह सीखने के नए–नए तरीकों का सृजन करे। शिक्षकों के लिए यह जरूरी है कि वे स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करके विविधतापूर्ण गतिविधियों की योजना बना सके। एन0ई0पी0 2020 द्वारा प्रस्तावित कला एवं खेल आधारित शिक्षण– अधिगम को वर्ग–कक्ष तक पहुँचाने हेतु यह जरूरी है कि इन नवाचारों को न सिर्फ शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए, बल्कि सेवाकालीन प्रशिक्षण के माध्यम से इस स्तर पर कार्य कर रहे शिक्षकों को भी इन नवाचारों से अवगत कराया जाए। साथ ही साथ शिक्षकों को मुल्यांकन/आकलन के बेहतर तरीकों (जो बच्चों का 360^0 आकलन कर सके) में भी दक्षता लाने की जरूरत है। मौजुदा समय में आकलन अधिकतर पढ़ने–लिखने, श्रुतिलेख एवं गणितीय दक्षताओं पर केन्द्रित रहता है। इसमें बदलाव की जरूरत है।

बच्चों में अधिगम सुनिश्चित करने के लिए अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। अभिभावक विद्यालय के प्रमुख हितधारक है क्योंकि विद्यालय में प्रदान की जाने वाली शिक्षा उनके बच्चों के भविष्य से संबंधित है। जब विद्यालय और अभिभावक साझेदारी में कार्य करते हैं तो बच्चों के सफल होने की संभावना कई गुणा बढ़ जाती है। पुर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर पर बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय–अभिभावक साझेदारी को सुदृढ़ किया जाए। विद्यालय–अभिभावक साझेदारी को बेहतर बनाने के लिए वर्तमान में कई उपाय जैसे कि अभिभावक–अध्यापक संघ, विद्यालय समिति में अभिभावकों को नामित किया जाना, गुणवत्तापूर्ण मध्याह्मन भोजन में उनका सहयोग आदि की दिशा में अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में अभिभावक तथा स्थानीय समुदाय अहम भूमिका निभा सकते हैं। अभी के समय में यह आवश्यक हो गया है कि विद्यालय के मामलों में अभिभावक एवं समुदाय की भागीदारी को असरदार ढंग से पुनः स्थापित किया जाए। बच्चों की विविध भाषायी पृष्ठभूमि के संदर्भ में भी विद्यालय–अभिभावक साझेदारी को बेहतर बनाए जाने की आवश्यकता है।

प्रारंभिक विद्यालयों और कक्षाओं में समावेशी माहौल बनाए जाने की जरूरत है। इसके लिए बालकेन्द्रित शिक्षाशास्त्र एवं बहुप्रतिभा के सिद्धांत पर अमल करना होगा। शिक्षकों को हर बच्चे की अधिगम क्षमता पर भरोसा जताना होगा तथा उनकी वैयक्तिकता का सम्मान करना होगा। उन्हें समावेशन के सिद्धांत पर अमल करते हुए गंभीर सुविधा–वंचित एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों समेत

तमाम बच्चों का अधिगम सुनिश्चित करना होगा।

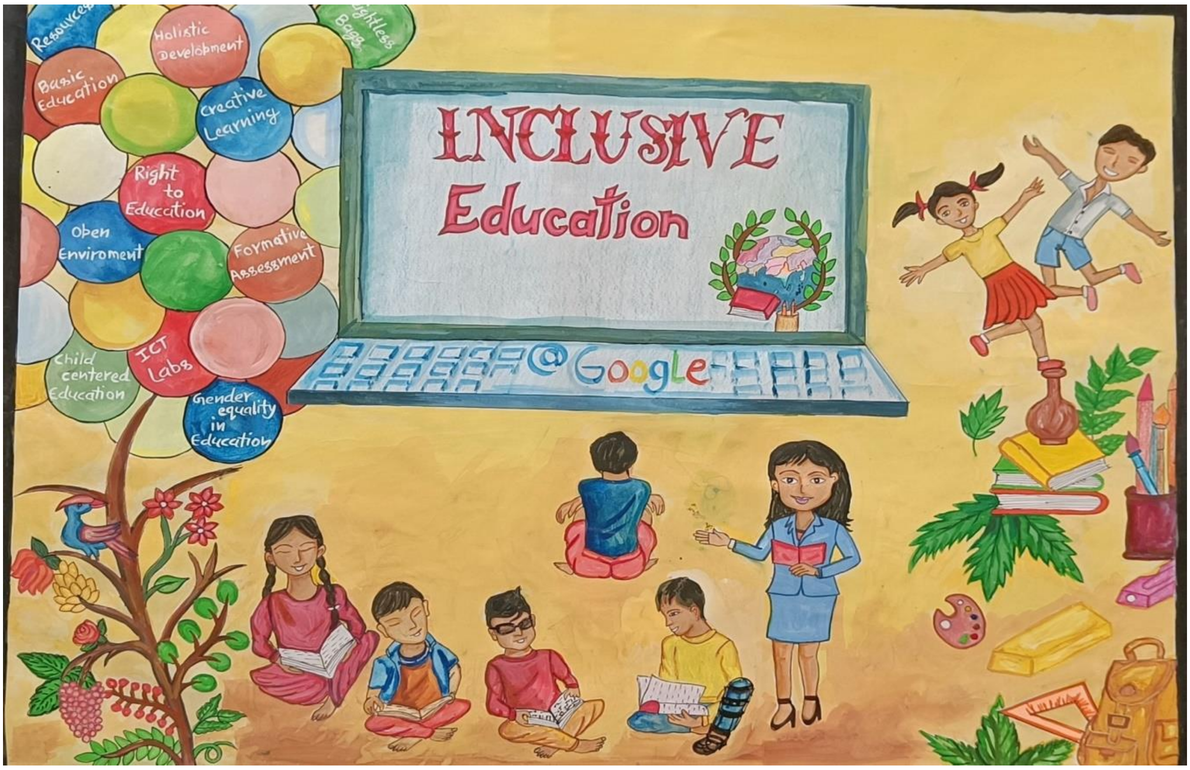

> ''विद्यालयों में तमाम बच्चों को शामिल किया जाना चाहिए, उनकी शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, भाषाई या अन्य स्थितियाँ चाहे कैसी भी क्यों न हो। इसमें अपंग और समर्थ बच्चे ,गली–कूचे के और श्रमिक बच्चे, दूर–दराज के और खानाबदोश समूहों के बच्चे, भाषाई , नृजातीय और सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों के बच्चे तथा अन्य अभिवंचित या हाशिए पर खड़े क्षेत्रों व समूहों के बच्चे शामिल हैं.... 'विशेष शैक्षिक आवश्यकताएँ' जैसी शब्दावली उन सभी बच्चों और युवाओं के संदर्भ में आती है जिनकी जरूरतें अपंगता या अधिगम संबंधी दिक्कतों से पैदा होती है... इस बात पर सर्वानुमति बन रही है कि विशेष शैक्षिक जरूरतों वाले बच्चों, युवाओं को अधिसंख्य बच्चों के निमित्त कायम व्यवस्था में ही समावेशित कर लेना चाहिए। यह विचार समावेशी शिक्षा के विचार की दिशा में जाता है।''
>
> **यूनेस्को, 1994**

शिक्षकों के लिए बेहतर होगा कि वे बच्चों कि स्वाभाविक क्षमताओं की समझ बताएँ एवं उनके सीखने के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराएँ। कक्षा में भिन्न–भिन्न प्रकार के छात्र होते है, कुछ आगे बढ़कर सामूहिक गतिविधियों में भाग लेते है जबकि कुछ अंतर्मुखी होते है और सामूहिक गतिविधियों में भाग लेने से कतराते है। ऐसे में शिक्षकों की जिम्मेदारी बनती है कि वे उन बच्चों को सहज बनाएँ। हर बच्चे की खासियत समझना तथा उन्हें उनकी शैली में सीखने के लिए प्रेरित करना ही बालकेन्द्रित

शिक्षाशास्त्र का सार है।

बिहार में विगत कुछ वर्षों में प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव हुए हैं। प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या संबंधी बहस ने सभी का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है। इससे इस बात का पता चलता है कि प्रारंभिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न आयामों को महत्व दिया जा रहा है। इस स्तर पर सीखने के प्रतिफल सुनिश्चित करने के लिए कवायद शुरू हो चुकी है।

यह सर्वमान्य है कि शिक्षा में पाठ्यचर्या का नवीकरण और विकास सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। नई शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के पश्चात यह महसूस किया जा रहा है कि प्रस्तावित नई संरचना एवं सुझावों के क्रियान्वयन के लिए हमें बहुत कुछ करने की जरूरत है। जहाँ एक ओर फाउन्डेशन स्तर पर शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों की विशिष्ट तैयारी की आवश्यकता है, वही दुसरी ओर इस नए ढ़ांचे में समाहित होने के लिए संसाधनों का भी सुदृढ़िकरण किया जाना आवश्यक है।

गतिविधि II

प्री–स्कूल/आँगनबाड़ी शिक्षकों की भूमिका

प्री–स्कूल के आंतरिक स्थान को विभिन्न रूचि क्षेत्रों जैसेः कला क्षेत्र, खोज क्षेत्र, साक्षरता क्षेत्र, गणित क्षेत्र, खेल–खिलौना क्षेत्र आदि में बाँटकर शिक्षण –अधिगम को प्रभावी बनाने में प्री–स्कूल शिक्षकों/आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका पर अपने विचार साझा करें।

- **राज्य में विद्यालय की तैयारी में संस्थाओं (अकादमिक व सामाजिक) से अपेक्षा**

प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या निर्माण तथा उसको लागु करने के लिए प्रधानाध्यापकों तथा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना है। इस क्षेत्र में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एवं प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। इन संस्थानों को अकादमिक नेतृत्व प्रदान करने के लिए

विद्यालय से बेहतर समन्वय करने की जरूरत है। इस दिशा में कई सराहनीय प्रयास देखने को मिल रहे है। इसका बेहतर उदाहरण लर्निंग आउटकम तथा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) संबंधित राज्य स्तर पर जारी कवायद है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर इन क्रियाकलापों को और अधिक सुदृढ़ बनाने की जरूरत है। प्रत्येक जिले में अवस्थित प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान का साझीदार बनने की जरूरत है और साथ ही उन्हें भी मानकों के अनुरूप सुदृढ़ बनने की आवश्यकता है। प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा में नवाचारी प्रयोगों को लागू करने के लिए गैर सरकारी संगठनों को भी और आगे आने की जरूरत है। वर्तमान समय में इन संस्थानों द्वारा पाठ्यचर्या विकास, पाठ्यसामग्री निर्माण, समुदाय की गोलबंदी आदि में अच्छा कार्य किया जा रहा है। प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित बदलाव लाने के लिए यह जरूरी है कि ये संस्थाएँ जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा संस्थान, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् के साथ समन्वय करके कार्य करें। यकीनन, ये संगठन एन0ई0पी0 2020 के सुझावों को प्रारंभिक स्तर पर लागू करने के लिए एक बेहतर माध्यम बन सकते हैं। अभिभावकों और अन्य समुदाय सदस्यों को भी विभिन्न संघ या समितियों के जरिए या व्यक्तिगत रूप से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय के प्रबंधन और संभार में भागीदार बनाने की जरूरत है।

मूल्यांकन

1. पिछले एक दशक में बिहार में प्रारंभिक शिक्षा की स्थिति में आए बदलाव की समीक्षा करें।

2. प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण के संबंध में नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित सुझावों की चर्चा करें।

3. बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा से संबंधित चुनौतियों पर प्रकाश डालें।

4. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में अभिभावक और समाज के अन्य सदस्यों से क्या अपेक्षा है? चर्चा करें।

संदर्भ

●भारत सरकार, (2021), निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश नई दिल्ली, भारत सरकार

●भारत सरकार ,(2020),राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली, भारत सरकार

●महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MWCD), (2013), प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति, नई दिल्ली, भारत सरकार

●राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् (2008), पढ़ने की समझ, नई दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

● राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्(2013) लिखने की शुरूआत– एक संवाद, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

● स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय,(2017), आपरेशनल गाइडलाइंस फॉर इम्पलीमेंटिंग अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड डेवलपमेंट इन पब्लिक हेल्थ सिस्टम, नई दिल्ली , स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार

● राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्(2019) प्री स्कूल करिकुलम, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

● राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्(2005), लिटिल स्टेप्स रेडीनेस एकटटविटीज फॉर रीडिंग राइटिंग एंड नम्बर रेडिनेस, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

● राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (2017) स्मूथ एंड सक्सेसफुल ट्रांजिशन, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

● राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (2015), एवी चाइल्ड मेटर्सः ए हैंडबुक ऑन क्वालिटी अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन, न्यू दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

●एनसीईआरटी.(2008), अर्ली चाइल्डहुड एजूकेश्नः एन इंट्रोडक्शन, नई दिल्ली

●पोजीशन पेपर नेशनल फोकस ग्रुप ऑन अर्ली चाइल्डहुड ऐजूकेशन 2006 नई दिल्ली

●एन सी ई आर टी, ईसीई.एन इंट्रोडक्शन (2021रीप्रिंटेड)

●सोनी रोमिला (2021रीप्रिंटेड)रेडिनेस एक्टीविटीज फॉर द बिगिनर्स (वाल्यूम 1 और 2)

●सिंह सावित्र (2016)खेल–खेल में, एन सी ई आर टी, नई दिल्ली

●सोनी रोमिला (2017), दर्पण एक्टीविटी बुक आून क्लीनलीनेस एंड गुड हेबिट्स है।

वेब लिंक

- प्री–स्कूल एजूकेशन

http://www.youtube.com/watch?v=0GPBUpua7wk

- अर्ली चाइल्डहुड केयर एण्ड ऐजुकेशन

http://you.tube.be/tQ14uLumU4c

- प्री–स्कूल ऐजुकेशन
  http://youtu.be/0GPBUPua7wk
- पिक्चर रीडिंग प्री–स्कूल
  http://youtu.be/3gav6BXih4M
- बुनियादी संख्यात्मक के लिए समस्या समाधान कौशल

http://www.youtube.com/watch?v=aZJ4kiVhO3U

- एन0ई0पी0 2020 (फाउंडेशनल लिट्रसी एण्ड न्यम्रेसी)
  http://youtu.be/HY7OtDASt-o
- साइज एंड सीरिएशन फॉर फंडामेंटल न्यम्रेसी
  http://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- वन टू वन कॉरसपंडेंस
  http://youtu.be/JtLOIVWAhql